मदनी क़ाफ़िले वालों की शरई और दावते इस्लामी की तन्ज़ीमी
रेहनुमाई पर मुश्तमिल एक बेहतरीन रिसाला

मदनी क़ाफ़िले वालों के लिए अनमोल तोहफ़ा

सफ़हात 111

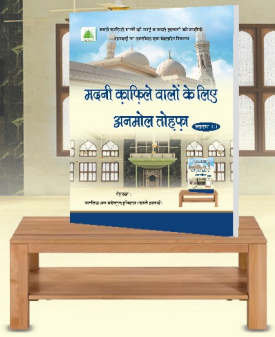

पेशकश :
मजलिस अल मदीनतुल इल्मिय्या (दावते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पेहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिए اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रेहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिए ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़्यादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (यानी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइए ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दावते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह रिसाला मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दावते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब किया है । मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह ग़लत़ी पाएं तो मजलिस को सफ़ह़ा और सत़र नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए़ इत्त़िलाअ़ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइए।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं!!!

...राबित़ा :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, गुजरात (हिन्द)

+91 98987 32611

E-mail : hindibook@dawateislamihind.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = یُ	ु = وُ	आ = آ	य = ی	ह = ه	व = و	न = ن

मदनी क़ाफ़िले वालों की शरई व दावते इस्लामी इन्डिया की
तन्ज़ीमी रेहनुमाई पर मुश्तमिल एक बेहतरीन रिसाला

मदनी क़ाफ़िले वालों के लिए अनमोल तोहफ़ा

-: पेशकश :-
अल मदीनतुल इल्मिय्या
शोबा मदनी क़ाफ़िला (दावते इस्लामी इन्डिया)

नाशिर
मक्तबतुल मदीना

www.dawateislami.net

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ الله   وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ الله

नाम किताब : मदनी क़ाफ़िले वालों के लिए अनमोल तोह़फ़ा

पेशकश : अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दावते इस्लामी, इन्डिया)

पेहली बार : मार्च 2022

तादाद : 3100

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, दावते इस्लामी (इन्डिया)

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : रबीउ़ल अव्वल 1442 हिजरी   ह़वाला नम्बर : 252

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْن

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

“मदनी क़ाफ़िले वालों के लिए अनमोल तोह़फ़ा”

(मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना)

पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है । मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इ़बारात, अख़्लाक़ियात, फ़िक़ही मसाइल और अ़रबी इ़बारात वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लत़ियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं ।

بسم الله الرحمن الرحيم
مجلس تفتیش کتب و رسائل
فیضان مدینہ

मजलिस तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल
(दावते इस्लामी, इन्डिया)
05-11-2020

इल्तेजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं ।

फ़ेहरिस्त

शोबा मदनी क़ाफ़िले के शरई मदनी फूल सवालन जवाबन	5	जदवल और एलानात की दोहराई, मदनी मश्वरे का हल्क़ा	60
मस्जिद से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अह़काम	5	**तिलावत करने की निय्यतें**	61
मसाजिद व दीगर वक़्फ़ की अश्या और इन का इस्तेमाल	11	नात शरीफ़ पढ़ने सुनने की निय्यतें	61
अख़राजात के बारे में सवालो जवाब	14	मदनी मश्वरा करने और देने की निय्यतें	62
इक़्तेदा से मुतअ़ल्लिक़ सवालो जवाब	18	(1) जदवल की दोहराई	62
दर्सो बयान से मुतअ़ल्लिक़ सवालो जवाब	18	वापसी के जदवल की दोहराई	65
शरई मुसाफ़िर के ह़वाले से सवालो जवाब	19	**(2) एलानात की दोहराई**	65
मुतफ़र्रिक़ सवालो जवाब	23	एलान करने की फ़ज़ीलत	65
मदनी क़ाफ़िले का तआ़रुफ़	28	एलान के आदाब	66
मदनी क़ाफ़िले से मुतअ़ल्लिक़ 19 फ़रामीने अमीरे एहले सुन्नत	28	एलाने फ़ज्र	67
मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की 72 निय्यतें	31	एलाने अ़स्र	67
अमीरे क़ाफ़िला को कैसा होना चाहिए ?	34	एलाने मग़रिब	68
शुरका ए क़ाफ़िला की तरबियत के मदनी फूल	35	**(3) ज़िम्मेदारियां तक़्सीम करना**	68
मदनी क़ाफ़िले का मुख़्तसर जदवल	41	मदनी मश्वरा लिए जाने वाले 9 काम	68
आदाबे मस्जिद का बयान	45	मदनी मश्वरा लेने का त़रीक़ए कार	69
आदाबे मस्जिद से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अहम मसाइल	46	ज़िम्मेदारियों की तक़्सीम	70
मदनी क़ाफ़िले के अख़राजात की इजाज़त	52	ख़ैर ख़्वाह इस्लामी भाइयों की ज़िम्मेदारी	70
मदनी क़ाफ़िले के अख़राजात के मसाइल	53	**मदनी मक़्सद का बयान**	71
शरई मसाफ़त के बारे में मालूमात	55	ज़ैली ह़ल्क़े के 12 दीनी काम	71
सामाने मदनी क़ाफ़िला	57	बैरूने मुल्क के 12 दीनी काम	71
सामाने मदनी क़ाफ़िला की तफ़्सील	58	इनफ़िरादी इबादत / तिलावत / मुत़ालआ़	72
मस्जिद पहुंचने के बाद एलान	58	दीनी किताब पढ़ने की निय्यतें	72
इस्तिन्जा वुज़ू से फ़राग़त	59	मुख़्तसर नेकी की दावत व तरग़ीबात	73
बैतुल ख़ला जाने की निय्यतें	59	**इनफ़िरादी कोशिश का त़रीक़ा**	73
वुज़ू की निय्यतें	60	इनफ़िरादी कोशिश के मदनी फूल	73
मदनी क़ाफ़िले का तफ़्सीली जदवल	60	इनफ़िरादी कोशिश	75

www.dawateislami.net

सुन्नतें सीखने का ह़ल्क़ा	76	चन्द अहम बातें	95
वक़्फ़ए त़आ़म	76	**दोहराई का ह़ल्क़ा**	95
मस्जिद की सफ़ाई से मुतअ़ल्लिक़ अहम मसाइल	77	इजतेमाई़ जाइज़ा, सलातुत्तौबा	96
खाने से पेहले की निय्यतें	78	सलातुत्तौबा की फ़ज़ीलत	96
मिल कर खाने की मज़ीद निय्यतें	79	तौबा व तज्दीदे ईमान	97
खाने से पेहले की दुआ़एं	79	सोने से पेहले के अवरादो वज़ाइफ़	97
खाने के बाद की दुआ़एं	80	नमाज़े तहज्जुद	98
चौक दर्स	81	फ़ज्र के लिए जगाना	99
चौक दर्स से मुतअ़ल्लिक़ अहम मसाइल	81	फ़ज्र के लिए जगाने का त़रीक़ा	99
दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत	82	फ़ज्र के लिए जगाने के अश्आ़र (फ़ज्र का वक़्त हो गया उठ्ठो)	100
नमाज़ सीखने का ह़ल्क़ा	82	बाद नमाज़े फ़ज्र (एलान व बयान)	101
दर्सी बयान सीखने का ह़ल्क़ा	83	तफ़्सीर सुनने सुनाने का ह़ल्क़ा	101
दुआ़एं याद करने का ह़ल्क़ा	84	तफ़्सीर सुनने सुनाने के ह़ल्क़े का त़रीक़ा	101
वक़्फ़ए आराम (अज़ाने अ़स्र तक)	84	आख़िरी दस सूरतें या इस्लामी भाइयों का मद्रसतुल मदीना का ह़ल्क़ा	102
बाद नमाज़े अ़स्र अ़लाक़ाई दौरा	86	**इशराक़ व चाश्त का वक़्त**	102
अ़लाक़ाई दौरे का त़रीक़ा	87	नमाज़े इशराक़ की फ़ज़ीलत	103
अ़लाक़ाई दौरे पर जाने की निय्यतें	88	नमाज़े चाश्त की फ़ज़ीलत	103
अ़लाक़ाई दौरे की ज़िम्मेदारियां	89	वक़्फ़ए आराम	104
अ़लाक़ाई दौरे के आदाब	89	**तरग़ीबात**	104
नेकी की दावत से पेहले की दुआ़	90	नमाज़ की तरग़ीब	104
नेकी की दावत (मुख़्तसर)	91	हफ़्तावार इजतेमाअ़ की मुख़्तसर तरग़ीब	105
नेकी की दावत से वापसी के बाद की दुआ़	92	दर्स की मुख़्तसर तरग़ीब	106
चन्द अहम बातें	93	इस्लामी भाइयों के मद्रसतुल मदीना की तरग़ीब	106
बाद नमाज़े मग़रिब (एलान व बयान)	93	मदनी क़ाफ़िले की तरग़ीब	107
वक़्फ़ए त़आ़म (बयाने मग़रिब के बाद)	94	दर्स देने का त़रीक़ा	108
बाद नमाज़े इ़शा	94	मआख़िज़ो मराजेअ़	111

www.dawateislami.net

मदनी क़ाफ़िले वालों के लिए अनमोल तोहफ़ा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है।"(1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शोबा मदनी क़ाफ़िले के शरई मदनी फूल

सवालन जवाबन

(अज़ अबू हन्ज़ला मुफ़्ती मुहम्मद सज्जाद अ़त्तारी मदनी مُدَّظِلُّهُ الْعَالِی ।
दारुल इफ़्ता एहले सुन्नत फ़ैज़ाने मदीना)

मस्जिद से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अह़काम

सवाल 1 : मस्जिद को किन चीज़ों से बचाना ज़रूरी है ?

जवाब : मस्जिद को नजासत व बदबू और हर घिन वाली चीज़ से बचाना ज़रूरी है।

सवाल 2 : मस्जिद में दाख़िल होने से पेहले किन चीज़ों को अच्छी तरह चेक करना चाहिए ?

जवाब : मस्जिद में दाख़िल होने से पेहले अपना जिस्म, अपना कपड़ा, चप्पल, बिस्तर वग़ैरा को अच्छी तरह चेक कर लेना चाहिए कि कहीं नजासत से आलूदा या बदबूदार तो नहीं।

सवाल 3 : मस्जिद में कच्चा लेहसन, कच्ची प्याज़ वग़ैरा खाना या मुंह में इन की बदबू होते हुवे मस्जिद में जाना कैसा है ?

जवाब : मस्जिद में कच्चा लेहसन, कच्ची प्याज़ खाना और जब तक इन की बू बाक़ी है इस के साथ मस्जिद में जाना जाइज़ नहीं और येही हुक्म हर

(1)...معجم کبیر، 3/82، حدیث:2729، ज़ियाए दुरूदो सलाम स. 4

www.dawateislami.net

उस चीज़ का है जिस में बू हो जैसे मूली, कच्चा गोश्त, मिट्टी का तेल, दिया सलाई रगड़ना (रगड़ने से बारूद की बू उड़ती है)।

सवाल 4 : अगर किसी मरीज़ को क़तरों का ऐसा मरज़ हो कि मुसलसल क़तरे टपकते हों उन का मस्जिद में ठेहरना कैसा ?

जवाब : वोह मरीज़ जिन को क़तरों का ऐसा मरज़ हो कि मुसलसल क़तरे टपकने से मस्जिद या मस्जिद की दरियों वग़ैरा के आलूदा होने का ख़तरा है उन का मसाजिद में ठेहरना जाइज़ नहीं है।

सवाल 5 : यूरीन बेग लगे हुवे मरीज़ का मस्जिद में ठेहरना कैसा ?

जवाब : ऐसे मरीज़ जिन को यूरीन बेग लगा हो उन का मस्जिद में ठेहरना जाइज़ नहीं है।

सवाल 6 : अगर किसी को गन्दा देहनी का आ़रिज़ा (यानी मुंह से बदबू आने की बीमारी) हो या कोई बदबूदार ज़ख़्म हो या कोई बदबूदार दवाई लगाई हो तो क्या ऐसा शख़्स मस्जिद में जा सकता है ?

जवाब : जिस को गन्दा देहनी का आ़रिज़ा हो या कोई बदबूदार ज़ख़्म हो या कोई बदबूदार दवाई लगाई हो तो जब तक बू मुन्क़तेअ़ न हो (यानी बदबू ख़त्म न हो) उस को मस्जिद में आने की मुमानअ़त है।

सवाल 7 : ऐसी अश्या कि जिन से मुंह में बदबू पैदा हो मसलन सिग्रेट या हुक़्क़ा वग़ैरा मदनी क़ाफ़िले के शुरका का इन अश्या के इस्तेमाल के बाद इसी ह़ालत में मस्जिद में दाख़िल होना कैसा है ?

जवाब : मदनी क़ाफ़िले के शुरका का ऐसी चीज़ इस्तेमाल करना कि जिस से मुंह में बदबू पैदा हो जैसे सिग्रेट या हुक़्क़ा वग़ैरा पीना और मुंह में इन की बदबू हो तो ऐसी सूरत में मस्जिद में दाख़िल होना जाइज़ नहीं।

सवाल 8 : मस्जिद में मच्छर या मूज़ी ह़शरात (यानी तक्लीफ़ देने वाले

www.dawateislami.net

कीड़ों वग़ैरा) से बचने के लिए बदबूदार लोशन या क्वाइल वग़ैरा का इस्तेमाल करना कैसा ?

जवाब : मस्जिद में मच्छर या मूज़ी हशरात से बचने के लिए बदबूदार लोशन या क्वाइल वग़ैरा का इस्तेमाल जाइज़ नहीं ।

सवाल 9 : मस्जिद में ऐसा लोशन जो बदबूदार न हो इस्तेमाल करना कैसा ?

जवाब : मस्जिद में ऐसा लोशन इस्तेमाल करना कि जो ख़ुश्बूदार हो या न तो ख़ुश्बूदार हो और न ही बदबूदार, इस का इस्तेमाल जाइज़ है, अलबत्ता मस्जिद की दरियों को इन से आलूदा होने से बचाना होगा ।

सवाल 10 : मदनी क़ाफ़िले वाले अगर खाना ख़ुद बनाएं तो किन बातों का ख़याल रखना ज़रूरी है ?

जवाब : मदनी क़ाफ़िले वाले अगर खाना ख़ुद बनाएं तो सालन बनाते वक़्त बाज़ चीज़ों की ना गवार बू या हीक मस्जिद तक भी जाती है जैसे मछली पकाने के लिए मस्जिद में लाना । अगर कोई ऐसी चीज़ बनानी है जिस की ना गवार बू हो, उस को मस्जिद से इतना दूर पकाया जाए कि उस की करीहा (ना गवार) बू मस्जिद में न जाए ।

सवाल 11 : बदबूदार दस्तरख़्वान मस्जिद में बिछाना कैसा ?

जवाब : बाज़ अवक़ात दस्तरख़्वान व बरतनों की सहीह सफ़ाई न होने या गीला दस्तरख़्वान लपेट कर सामान में रख देने से वोह बदबूदार हो जाता है ऐसा दस्तरख़्वान मस्जिद में बिछाना जाइज़ नहीं ।

सवाल 12 : वोह बरतन जो बे धुले या सहीह न धुलने की वज्ह से बदबू छोड़ देते हैं ऐसे बरतन मस्जिद में रखना कैसा ?

जवाब : ऐसे बरतनों का मस्जिद में रखना जाइज़ नहीं है ।

www.dawateislami.net

सवाल 13 : मोतकिफ़ का मस्जिद में खाना खाना कैसा ?

जवाब : मोतकिफ़ का मस्जिद में खाना खाना जाइज़ है जबकि ग़िज़ा या सालन वग़ैरा से मस्जिद आलूदा न हो।

सवाल 14 : मदनी क़ाफ़िले वालों का ख़ारिजे मस्जिद या इमाम व मोअज़्ज़िन के हुजरे में अपने सिलेन्डर पर खाना पकाना किस सूरत में दुरुस्त है ?

जवाब : ख़ारिजे मस्जिद या इमाम व मोअज़्ज़िन वग़ैरा के हुजरों में अपने सिलेन्डर पर खाना पकाया जा सकता है बशर्ते येह कि मस्जिद के अन्दर धुवां या बू वग़ैरा दाख़िल न हो और मस्जिद की कोई चीज़ आलूदा भी न हो।

सवाल 15 : वुज़ू का पानी मस्जिद में टपकाना कैसा ?

जवाब : वुज़ू का पानी मस्जिद में टपकाना गुनाह है।

सवाल 16 : वुज़ू के पानी से मस्जिद को किस तरह बचाया जाए ?

जवाब : मस्जिद में दाख़िल होने से पेहले आज़ा ए वुज़ू पर हाथ फेर कर बूंदें टपका दें या किसी कपड़े से आज़ा पूंछ लें ताकि मस्जिद में पानी के क़तरे न गिरें।

सवाल 17 : मस्जिद में थूकना, मस्जिद की दरियों या दीवारों वग़ैरा से हाथ या नाक साफ़ करना कैसा ?

जवाब : मस्जिद में थूकना, मस्जिद की दरियों या दीवारों वग़ैरा से हाथ या नाक साफ़ करना सख़्त बे अदबी है।

सवाल 18 : क़ाफ़िले के दौरान मस्जिद में रेहते हुवे अगर किसी को नज़ला, ज़ुकाम हो जाए तो क्या करे ?

जवाब : ज़ुकाम वग़ैरा की हालत में नाक से जो पानी गिरता है उस को

www.dawateislami.net

अपने कपड़ों में ले ले दरियों वग़ैरा पर न टपकाए कि ऐसा करना मस्जिद के आदाब के ख़िलाफ़ होने के साथ साथ घिन का भी सबब है।

सवाल 19 : मस्जिद में बैअ़ो शिरा (ख़रीदो फ़रोख़्त) और अ़क़्दे मुबादला करने का क्या हुक्म है ?

जवाब : मस्जिद में बैअ़ो शिरा (ख़रीदो फ़रोख़्त) और हर अ़क़्दे मुबादला मन्अ़ है, सिर्फ़ मोतकिफ़ को ख़रीदो फ़रोख़्त की इजाज़त है जबकि येह तिजारत की ग़रज़ से न हो बल्कि बीवी बच्चों की ज़रूरत के लिए हो और वोह शै भी मस्जिद में न लाई गई हो।

सवाल 20 : मस्जिद में नाख़ुन काटने, तेल लगाने या कंघा करने का क्या हुक्म है ?

जवाब : मस्जिद में नाख़ुन काटना, तेल लगाना या कंघी करना, अगर इस तौ़र पर है कि काटे जाने वाले बाल या नाख़ुन मस्जिद में नहीं फैलते तो मस्जिद में काटने में भी ह़रज नहीं, अगर बाल या नाख़ुन फैलने का अन्देशा है तो इस की इजाज़त नहीं कि मस्जिद को हर त़रह़ की आलूदगी से पाक रखना ज़रूरी है। मस्जिद में ख़स (घास का तिन्का) डालने से मस्जिद को ऐसी तक्लीफ़ होती है जैसे इन्सानी आंख में तिन्का जाने से होती है।

सवाल 21 : मदनी क़ाफ़िले वालों का मस्जिद में मोबाइल पर एलार्म लगाना कैसा ?

जवाब : मदनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िरों का बर वक़्त (वक़्त पर) उठने के लिए मस्जिद में होते हुवे, मोबाइल पर एलार्म लगाना जाइज़ है बशर्ते येह कि म्यूज़ीकल ट्यून न हो। मगर याद रहे मोबाइल में म्यूज़ीकल ट्यून्ज़ का न होना सिर्फ़ मस्जिद के साथ ख़ास नहीं उ़मूमी हुक्म भी इस के नाजाइज़ होने ही का है और मस्जिद की वज्ह से इस की शनाअ़त (बुराई) और भी बढ़ जाती है।

www.dawateislami.net

सवाल 22 : मस्जिद में इश्क़िया या फ़िस्क़ो फ़ुजूर पर मुश्तमिल अश्आ़र पढ़ना कैसा ?

जवाब : मस्जिद में इश्क़िया या फ़िस्क़ो फ़ुजूर पर मुश्तमिल अश्आ़र पढ़ना, नाजाइज़ है अलबत्ता ह़म्दो नात, मन्क़बत और वाज़ो ह़िक्मत पर मबनी अश्आ़र पढ़ना जाइज़ है ।

सवाल 23 : मस्जिद, फ़िना ए मस्जिद, इह़ात़ए मस्जिद में LCD वग़ैरा लगा कर मदनी चैनल देखना कैसा ?

जवाब : मस्जिद व फ़िना ए मस्जिद या इह़ात़ए मस्जिद (अगर्चे वोह ख़ारिजे मस्जिद या मस्जिद से मुत्तसिल मद्रसा वग़ैरा ही क्यूं न हो, यानी ऐसा इत्तेसाल कि जहां मदनी चैनल देखना उ़र्फ़ी एतेबार से मस्जिद में देखना क़रार पाए) में LCD वग़ैरा लगा कर मदनी चैनल देखने की इजाज़त नहीं ।

सवाल 24 : मस्जिद में सोते हुवे एह़तेलाम हो जाए तो क्या करें ?

जवाब : मस्जिद में सोते हुवे अगर एह़तेलाम हो जाए तो फ़ौरन तयम्मुम कर के मस्जिद से बाहर निकल जाएं और ग़ुस्ल करने के बाद मस्जिद में आएं बिला वज्ह ताख़ीर करेंगे तो गुनहगार होंगे ।

सवाल 25 : फ़िना ए मस्जिद में ग़ुस्ल ख़ाना नहीं और मस्जिद में ठेहरने के सिवा कोई चारा भी नहीं है तो ऐसी सूरत में क्या ह़ुक्म है ?

जवाब : फ़िना ए मस्जिद में अगर ग़ुस्ल ख़ाना न हो और बाहर जाने में कोई सह़ीह़ ख़त़रा हो और मस्जिद में ठेहरने के सिवा कोई चारा भी न हो तो फ़ौरन बिला ताख़ीर तयम्मुम करें और अब मस्जिद में रेहना भी जाइज़ है मगर इस तयम्मुम से नमाज़ व तिलावत जाइज़ नहीं, इन के लिए दोबारा इन की निय्यत से तयम्मुम करना होगा, जैसे ही बाहर निकलना मुमकिन हो फ़ौरन निकल जाएं ।

सवाल 26 : मस्जिद में बिला ज़रूरत जाइज़ बात करना कैसा ?

www.dawateislami.net

जवाब : मस्जिद में बिला ज़रूरत जाइज़ बात करना भी नेकियों को ज़ाएअ़ करने का सबब है, मोतकिफ़ के लिए भी बिला ज़रूरत बात करने को फ़ुक़हा ने मकरूह क़रार दिया है ?

सवाल 27 : मस्जिद में ज़रूरतन जाइज़ बात करना कैसा ?

जवाब : मस्जिद में ज़रूरतन जाइज़ बात की जा सकती है जबकि बात करने से किसी नमाज़ी या तिलावत करने वाले को परेशानी न हो। लेहाज़ा अगर घर वालों से बात करनी हो तो मस्जिद में करने से बचना चाहिए।

सवाल 28 : मस्जिद में इन्टरनेट या सोश्यल मीडिया के जाइज़ इस्तेमाल का क्या हुक्म है ?

जवाब : मस्जिद में इन्टरनेट या सोश्यल मीडिया के जाइज़ इस्तेमाल से भी बचना चाहिए।

मसाजिद व दीगर वक़्फ़ की अश्या और इन का इस्तेमाल

सवाल 29 : मदनी क़ाफ़िले के शुरका मस्जिद में ठेहरते हैं उन्हें मस्जिद की अश्या का ज़ाती इस्तेमाल किस क़दर दुरुस्त है ?

जवाब : मसाजिद की जिन अश्या का जिस क़दर ज़ाती इस्तेमाल मारूफ़ है, मदनी क़ाफ़िले वालों का उस क़दर इस्तेमाल की इजाज़त होगी जैसे नमाज़ के अवक़ात के इलावा ज़ाती इस्तेमाल के लिए बक़दरे ज़रूरत मस्जिद की लाइट और पंखों का इस्तेमाल, यूंही वुज़ू के इलावा पीने के लिए मस्जिद के पानी का इस्तेमाल जाइज़ है। नजात की राह इसी में है कि मदनी क़ाफ़िले के ठेहरने के बावुजूद भी पानी, बिजली व दीगर चीज़ों के इस्तेमाल की वज्ह से मस्जिद पर कोई इज़ाफ़ी बोझ न पड़े। अगर मामूल येह है कि नमाज़ के बाद रात में सिर्फ़ एक लाइट ज़रूरतन रौशन रेहती है तो एक ही लाइट रौशन रखी

www.dawateislami.net

जाए, यूंही जब नमाज़ के बाद पंखे वग़ैरा बन्द हो जाएं और अगर पंखा चलाए बग़ैर गुज़ारा हो सकता है तो पंखा न चलाया जाए, चलाने की ज़रूरत पड़े तो कम से कम पर इक्तेफ़ा किया जाए।

सवाल 30 : मदनी क़ाफ़िले के शुरका का मस्जिद की गेस पर खाना पकाना, मस्जिद की लाइट से कपड़े इस्त्री करना, ज़ाती लेपटोप चार्ज करना, मस्जिद की दरियों को बतौ़र कम्बल इस्तेमाल करना, सोने के लिए एरकन्डीश्नर या हीटर चलाना कैसा है ?

जवाब : मदनी क़ाफ़िले के शुरका को इन तमाम उमूर की शरअ़न इजाज़त नहीं है।

सवाल 31 : मदनी मराकिज़ के इलावा दीगर आ़म मसाजिद जहां क़ाफ़िलों की आमदो रफ़्त नहीं रेहती वहां मोबाइल फ़ोन चार्ज करना कैसा ?

जवाब : आ़म मसाजिद जहां क़ाफ़िलों की आमदो रफ़्त नहीं रेहती वहां मोबाइल फ़ोन चार्ज करने की शरअ़न इजाज़त नहीं है।

सवाल 32 : मस्जिद व फ़िना ए मस्जिद के किसी हिस्से को मदनी क़ाफ़िले वालों के लिए क़नात वग़ैरा लगा कर बिला वज्ह आ़म नमाज़ियों के लिए बन्द कर देना कैसा है ?

जवाब : मस्जिद व फ़िना ए मस्जिद के किसी हिस्से को मदनी क़ाफ़िले वालों के लिए क़नात वग़ैरा लगा कर बिला वज्ह आ़म नमाज़ियों के लिए बन्द कर देना जाइज़ नहीं है अलबत्ता अगर सामान वग़ैरा की हिफ़ाज़त के लिए आ़रज़ी तौ़र पर कोई ऐसा इक़्दाम किया गया (यानी क़नात वग़ैरा लगा कर मस्जिद या फ़िना ए मस्जिद के किसी हिस्से को बन्द कर दिया गया) जिस से न नमाज़ियों को तक्लीफ़ हो और न ही नमाज़ियों पर मस्जिद तंग हो तो ऐसा करना जाइज़ है।

सवाल 33 : क्या क़ाफ़िले के शुरका मस्जिद के पानी से अपने मैले कपड़े धो सकते हैं ?

www.dawateislami.net

जवाब : क़ाफ़िले के शुरका को मैले कपड़े मस्जिद के पानी से धोने की इजाज़त नहीं।

सवाल 34 : शुरका ए क़ाफ़िला में से अगर किसी के कपड़े नापाक हो गए तो क्या उस कपड़े को मस्जिद के पानी से धो सकते हैं?

जवाब : दौराने मदनी क़ाफ़िला अगर किसी के कपड़े नापाक हो गए और उस के पास उन के इलावा पेहनने के लिए कोई दूसरे कपड़े नहीं हैं या कपड़े तो हैं लेकिन उन नापाक कपड़ों को अपने बेग वग़ैरा में रखना है और बेग मस्जिद में है तो इन सूरतों में जितने हिस्से पर नापाकी लगी है, उतने हिस्से की नापाकी दूर करने के लिए मस्जिद का पानी इस्तेमाल किया जा सकता है।

सवाल 35 : शुरका ए क़ाफ़िला मस्जिद के पानी से किन सूरतों में ग़ुस्ल कर सकते हैं और किन सूरतों में ग़ुस्ल नहीं कर सकते?

जवाब : ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने की सूरत में मस्जिद के पानी से ग़ुस्ल कर सकते हैं, यूंही जुम्आ व ईदैन के ग़ुस्ल की भी इजाज़त है अलबत्ता महज़ ठन्डक हासिल करने या मैल वग़ैरा दूर करने के लिए ग़ुस्ल न किया जाए और ऐसे अ़लाक़े जहां पानी की क़िल्लत हो या पानी ख़रीद कर इस्तेमाल किया जाता है, वहां फ़र्ज़ ग़ुस्ल के इलावा दूसरे किसी क़िस्म के ग़ुस्ल की इजाज़त नहीं होगी।

सवाल 36 : अगर किसी फ़र्द से मस्जिद की किसी चीज़ का नुक़्सान हो जाए तो इस के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है?

जवाब : मस्जिद की चीज़ को अगर किसी फ़र्द से नुक़्सान पहुंचा या उस ने मस्जिद की चटाई के तिन्के निकाले या दरियों और कारपेट वग़ैरा के धागे नोचे तो ऐसा करना सख़्त नापसन्दीदा अ़मल है और बाज़ सूरतों में तावान का हुक्म भी आएगा।

www.dawateislami.net

सवाल 37 : क्या मस्जिद के इलावा मदारिसुल मदीना व जामेअ़तुल मदीना में मदनी क़ाफ़िले ठेहराने की इजाज़त है ?

जवाब : मस्जिद के इलावा मदारिसुल मदीना व जामेअ़तुल मदीना में क़ाफ़िले ठेहराने की इजाज़त नहीं ।

सवाल 38 : मदनी क़ाफ़िले वालों का मदारिस के लिए वक़्फ़ बरतन, मदारिस का किचन, गेस व लाइट का इस्तेमाल करना कैसा ?

जवाब : मदारिस के लिए वक़्फ़ बरतनों का इस्तेमाल मदनी क़ाफ़िले वालों के लिए जाइज़ नहीं । यूंही मदारिस के किचन, गेस व लाइट वग़ैरा का इस्तेमाल मदनी क़ाफ़िले वालों के लिए जाइज़ नहीं ।

अख़राजात (Expenses) के बारे में सवालो जवाब

सवाल 39 : शुरका ए क़ाफ़िला अख़राजात के लिए जो रक़म अमीरे क़ाफ़िला को जम्अ़ करवाते हैं उस का क्या हुक्म है ?

जवाब : शुरका ए क़ाफ़िला अख़राजात के लिए जो रक़म देते हैं वोह उन की ज़ाती हो या मदनी मर्कज़ की त़रफ़ से, येह रक़म अमीरे क़ाफ़िला के पास जम्अ़ होने के बाद बत़ौरे अमानत होती है ।

सवाल 40 : अमीरे क़ाफ़िला को शुरका की रक़म कहां कहां ख़र्च करने की इजाज़त है ?

जवाब : अमीरे क़ाफ़िला को सफ़र और खाने पीने के मारूफ़ अख़राजात में ख़र्च करने की इजाज़त होती है । ग़ैर मारूफ़ अख़राजात मसलन क़ाफ़िले वालों की त़रफ़ से लोगों को तह़ाइफ़ देने के लिए इत्र, तस्बीह़ व टोपी वग़ैरा ख़रीदने की इजाज़त नहीं ।

www.dawateislami.net

सवाल 41 : अमीरे क़ाफ़िला किन सूरतों में ग़ैर मारूफ़ अख़राजात (मसलन किसी की ख़ुसूसी दावत या मदनी क़ाफ़िले वालों की त़रफ़ से लोगों के लिए तह़ाइफ़ वग़ैरा ख़रीदना) कर सकता है ?

जवाब : मदनी क़ाफ़िले के अख़राजात के लिए अगर तमाम की तमाम रक़म शुरका ए क़ाफ़िला की ज़ाती हो तो ग़ैर मारूफ़ अख़राजात (मसलन किसी की ख़ुसूसी दावत या मदनी क़ाफ़िले वालों की त़रफ़ से लोगों के लिए तह़ाइफ़ वग़ैरा ख़रीदने) की इजाज़त उस सूरत में होगी कि सब के सब उस पर रिज़ामन्द हों।

सवाल 42 : अगर तमाम शुरका की रक़म ज़ाती हो और ग़ैर मारूफ़ अख़राजात की इजाज़त कुछ की त़रफ़ से हो और कुछ की त़रफ़ से न हो तो क्या हुक्म है ?

जवाब : अगर कुछ राज़ी हैं और कुछ नहीं तो येह ज़ाइद अख़राजात इजाज़त देने वालों के ह़िस्सों पर पड़ेंगे, मन्अ़ करने वालों से वुसूल नहीं किए जाएंगे।

सवाल 43 : मदनी क़ाफ़िले के अख़राजात अगर ज़ाती न हों बल्कि मदनी मर्कज़ या किसी और शख़्स की त़रफ़ से हों तो क्या ग़ैर मारूफ़ अख़राजात कर सकते हैं ?

जवाब : मदनी क़ाफ़िले के अख़राजात अगर ज़ाती रक़म से नहीं बल्कि मदनी मर्कज़ की त़रफ़ से हैं या किसी ने मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करने वालों के लिए रक़म दी तो इस सूरत में शुरका ए क़ाफ़िला की इजाज़त के साथ भी ग़ैर मारूफ़ अख़राजात करना जाइज़ नहीं कि जिस ने रक़म दी है उस की त़रफ़ से सराह़तन या दलालतन इस त़रह़ के अख़राजात करने की इजाज़त उ़मूमन नहीं होती।

सवाल 44 : मदनी क़ाफ़िले में अगर कुछ शुरका की रक़म ज़ाती और कुछ की मदनी मर्कज़ की त़रफ़ से हो तो उस रक़म का ग़ैर मारूफ़ ख़र्च करना कैसा ?

www.dawateislami.net

जवाब : मदनी क़ाफ़िले में अगर कुछ शुरका की रक़म ज़ाती और कुछ की मदनी मर्कज़ की त़रफ़ से है तो इस सूरत में भी सिर्फ़ मारूफ़ अख़राजात की इजाज़त होगी ।

सवाल 45 : मदनी क़ाफ़िले में अगर कुछ शुरका की रक़म ज़ाती और कुछ की मदनी मर्कज़ की त़रफ़ से हो तो क्या मदनी क़ाफ़िले के इलावा किसी और को खाने में शरीक कर सकते हैं ?

जवाब : मदनी क़ाफ़िले में अगर कुछ शुरका की रक़म ज़ाती और कुछ की मदनी मर्कज़ की त़रफ़ से है तो इस सूरत में मदनी क़ाफ़िले के इलावा दीगर अफ़राद को खाने में शरीक करना जाइज़ नहीं होगा ।

सवाल 46 : मदनी क़ाफ़िले में अगर कुछ शुरका की रक़म ज़ाती और कुछ की मदनी मर्कज़ की त़रफ़ से हो और बाज़ ऐसे अफ़राद भी हों जिन्हों ने अख़राजात जम्अ़ ही नहीं करवाए तो उन को क़ाफ़िले में शामिल करना कैसा ?

जवाब : ऐसे अफ़राद को शामिल करने की दो सूरतें हैं : पेहली येह (है) कि ज़ाती रक़म वाले उन का ख़र्च बरदाश्त करें, दूसरी येह (है) कि मदनी मर्कज़ से उन के अख़राजात ले लिए जाएं । अगर येह दोनों सूरतें न हों तो ऐसे अफ़राद को मदनी क़ाफ़िले में शामिल नहीं कर सकते ।

सवाल 47 : मदनी क़ाफ़िले में अगर कोई बीमार या किसी ह़ादसे का शिकार हो जाए तो क्या अमीरे क़ाफ़िला मदनी क़ाफ़िले के अख़राजात से उन का इलाज करवा सकता है ?

जवाब : मदनी क़ाफ़िले में अगर कोई बीमार या किसी ह़ादसे का शिकार हो गया तो उस के इलाज वग़ैरा के अख़राजात, दीगर शुरका की इजाज़त (जबकि शुरका की रक़म ज़ाती हो) के बग़ैर इस्तेमाल करना जाइज़ नहीं और अगर

www.dawateislami.net

अख़राजात ज़ाती नहीं बल्कि मदनी मर्कज़ से हैं तो मदनी मर्कज़ से इजाज़त लेना ज़रूरी है। याद रहे येह हुक्म, मस्अलए शरई के एतेबार से है। अख़्लाक़ व मुरव्वत का तक़ाज़ा येह है कि तमाम शुरका को चाहिए कि वोह बीमार या हादसे के शिकार अपने इस्लामी भाई की ज़ाती हैसिय्यत से भरपूर तरीक़े से मदद करें। क़ाफ़िले में सफ़र करने का बुन्यादी मक़्सद ही मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही व भलाई है तो जो अपना हम सफ़र है उस की ख़ैर ख़्वाही आम लोगों से बढ़ कर होनी चाहिए।

सवाल 48 : मदनी क़ाफ़िले के इख़्तेताम पर अगर अख़राजात या सामान बच जाए तो उस का क्या हुक्म है? नीज़ क्या अमीरे क़ाफ़िला उस बची हुई रक़म को सदक़ा या किसी दूसरे को दे सकता है?

जवाब : मदनी क़ाफ़िले के इख़्तेताम पर अगर अख़राजात या सामान वग़ैरा बच जाए तो इस की दो सूरतें हैं :

(1) अख़राजात शुरका ए क़ाफ़िला की तरफ़ से दिए गए थे और इस में से कुछ रक़म या सामान बच गया है तो इस में तमाम रक़म देने वाले शरीक हैं सब की रक़म बराबर थी तो बराबर के और अगर कम व ज़्यादा थी तो ब एतेबारे फ़ीसद इसी तनासुब से शरीक होंगे वोह जैसा चाहें इस रक़म को इस्तेमाल कर सकते हैं, अमीरे क़ाफ़िला या किसी शरीक को शुरका की इजाज़त के बग़ैर बच जाने वाली रक़म या सामान सदक़ा करने या किसी को देने की इजाज़त नहीं है।

(2) अख़राजात मदनी मर्कज़ की तरफ़ से दिए गए थे और इस में से कुछ रक़म या सामान बच गया है तो इसे मदनी मर्कज़ के अतिय्यात में जम्अ करवाना लाज़िम है। अमीरे क़ाफ़िला या किसी शरीक को इस रक़म या सामान को सदक़ा करने या किसी दूसरे फ़र्द को देने की इजाज़त नहीं है।

www.dawateislami.net

इक़्तेदा से मुतअ़ल्लिक़ सवालो जवाब

सवाल 49 : बद मज़हब व बद अ़क़ीदा इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ना कैसा ?

जवाब : बद मज़हब व बद अ़क़ीदा इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं।

सवाल 50 : फ़ासिक़े मोलिन (यानी जो अ़लल एलान यानी खुल्ले आ़म कबीरा गुनाहों का मुर्तकिब हो उस) के पीछे नमाज़ पढ़ना कैसा ?

जवाब : फ़ासिक़े मोलिन के पीछे नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं।

सवाल 51 : जो क़िराअत में लेह़ने जली जैसी ग़लतियां करता है उस के पीछे नमाज़ पढ़ना कैसा ?

जवाब : क़िराअत में लेह़ने जली जैसी ग़लतियां करने वाले के पीछे नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं।

सवाल 52 : नाबालिग़ इमाम के पीछे बालिग़ का नमाज़ पढ़ना कैसा ?

जवाब : नाबालिग़ इमाम के पीछे बालिग़ का नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं।

सवाल 53 : जिस्मानी माज़ूर के पीछे नमाज़ पढ़ना कैसा ?

जवाब : जिस्मानी माज़ूर के पीछे नमाज़ पढ़ने में कोई ह़रज नहीं बशर्ते येह कि उस में कोई ऐसी ख़राबी या ऐ़ब न हो जो इमामत के मनाफ़ी हो।

दर्सो बयान के बारे में सवालो जवाब

सवाल 54 : नमाज़ियों की फ़राग़त का इन्तेज़ार किए बग़ैर दर्सो बयान शुरूअ़ कर देना कैसा ?

जवाब : नमाज़ियों की फ़राग़त का इन्तेज़ार किए बग़ैर यूं दर्सो बयान

www.dawateislami.net

शुरूअ़ कर देना कि उन की नमाज़ों में ख़लल वाक़ेअ़ हो या आवाज़ बुलन्द होने की वज्ह से उन को परेशानी का सामना हो, ऐसा करना यक़ीनन गुनाह है।

सवाल 55 : मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करने वाले शुरका और अमीरे क़ाफ़िला को दर्सो बयान में किन बातों का ख़याल रखना ज़रूरी है ?

जवाब : मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करने वाले शुरका और अमीरे क़ाफ़िला को दर्सो बयान में इन बातों का ख़याल रखना ज़रूरी है :

❁ नमाज़ियों की नमाज़ में ख़लल न आए कि मस्जिदें नमाज़ पढ़ने वालों के लिए बनाई गई हैं।

❁ यूंही अगर कोई सो रहा है या तिलावते कलामे पाक में मश्ग़ूल है तो उन के क़रीब दर्सो बयान न किया जाए कि इस से उन के आराम व इ़बादत में ख़लल वाक़ेअ़ होगा।

सवाल 56 : क्या मदनी क़ाफ़िले में नमाज़ के अह़काम या फ़ैज़ाने सुन्नत में दर्ज शरई मसाइल बयान किए जा सकते हैं ?

जवाब : नमाज़ के अह़काम या फ़ैज़ाने सुन्नत में दर्ज शरई मसाइल को पढ़ कर सुनाने में कोई ह़रज नहीं। अगर शुरका ए क़ाफ़िला में से कोई किसी मस्अले पर सवाल करे या मस्अले की मज़ीद वज़ाह़त का त़लबगार हो तो अमीरे क़ाफ़िला समेत कोई भी अपनी त़रफ़ से इस की वज़ाह़त न करे बल्कि दारुल इफ़्ता एहले सुन्नत से रुजूअ़ करने का कहा जाए क्यूंकि बग़ैर इल्म, शरई मसाइल का जवाब देना नाजाइज़ व गुनाह है।

शरई मुसाफ़िर के ह़वाले से सवालो जवाब

सवाल 57 : शरई मुसाफ़िर किसे केहते हैं ?

www.dawateislami.net

जवाब : शरअ़न मुसाफ़िर वोह शख़्स है जो साढ़े 57 मील (तक़रीबन 92 किलो मीटर) के फ़ासले तक जाने के इरादे से अपने मक़ामे इक़ामत मसलन शेहर या गाऊं से बाहर हो गया हो।

सवाल 58 : मुसाफ़िर को कौन सी नमाज़ में क़स्र करना ज़रूरी है ?

जवाब : जो शरई मुसाफ़िर है उस पर चार रक्अ़त फ़र्ज़ नमाज़ में क़स्र करना (यानी चार रक्अ़त की जगह दो रक्अ़त पढ़ना) वाजिब है जबकि वोह इनफ़िरादी तौ़र पर नमाज़ अदा कर रहा हो।

सवाल 59 : मुसाफ़िर अगर मुक़ीम इमाम के पीछे जमाअ़त से नमाज़ अदा कर रहा हो तो क्या क़स्र करेगा ?

जवाब : मुसाफ़िर अगर किसी सह़ीहुल अ़क़ीदा मुक़ीम इमाम के पीछे जमाअ़त से नमाज़ अदा कर रहा हो तो अब पूरी चार रक्अ़त पढ़ेगा, क़स्र नहीं करेगा।

सवाल 60 : मुसाफ़िर कब से क़स्र करेगा और कब तक करेगा ?

जवाब : इनफ़िरादी नमाज़ में क़स्र करने का हुक्म उस वक़्त से होगा जब वोह अपनी बस्ती की आबादी से बाहर आ जाए (यानी शेहर में है तो शेहर से, गाऊं में है तो गाऊं से और शेहर वाले के लिए येह भी ज़रूरी है कि शेहर के आस पास जो आबादी शेहर से मुत्तसिल है उस से भी बाहर आ जाए) और उस वक़्त तक रहेगा जब तक वोह अपनी बस्ती में वापस न पहुंच जाए या किसी आबादी में पूरे 15 दिन ठेहरने की निय्यत न कर ले और जब वोह अपनी बस्ती में वापस पहुंच जाए या किसी आबादी में पूरे 15 दिन ठेहरने की निय्यत कर ले तो अब क़स्र नहीं कर सकता, बल्कि अब पूरी नमाज़ (यानी चार रक्अ़त) पढ़ेगा।

सवाल 61 : अगर कोई शख़्स 92 किलो मीटर सफ़र के इरादे से घर से निकले और रास्ते में 92 किलो मीटर सफ़र तै़ करने से पेहले वापसी का इरादा कर

www.dawateislami.net

ले और आगे सफ़र करना बन्द कर दे तो क्या वोह मुक़ीम होगा या मुसाफ़िर ?

जवाब : जो शख़्स 92 किलो मीटर के इरादे से चला लेकिन इस से पेहले ही (यानी 90 किलो मीटर का सफ़र तै करने से पेहले ही रास्ते में) उस का वापसी का इरादा हो गया और उस ने आगे सफ़र करना ख़त्म कर दिया तो अब वोह मुसाफ़िर नहीं रहेगा लेहाज़ा इनफ़िरादी नमाज़ में भी क़स्र नहीं करेगा बल्कि पूरी अदा करेगा।

सवाल 62 : मदनी क़ाफ़िले में सफ़र के दौरान अमीरे क़ाफ़िला या मजलिस की निय्यत का एतेबार होगा या शुरका की निय्यत का एतेबार होगा ?

जवाब : क़स्र में शुरका की अपनी निय्यत का एतेबार होगा, मजलिस या अमीरे क़ाफ़िला की निय्यत का एतेबार नहीं होगा।

सवाल 63 : बाज़ अवक़ात इमाम न होने की सूरत में लोग क़ाफ़िले वालों को इमामत का केहते हैं और कई मरतबा शुरका ए क़ाफ़िला शरई मुसाफ़िर होते हैं ऐसी सूरत में अगर कोई मुसाफ़िर शख़्स इमामत करवाए और मस्अला मालूम न होने की बिना पर चार रक्अ़त नमाज़ पढ़ा दे तो मुक़ीम मुक़्तदियों की नमाज़ का क्या हुक्म होगा ?

जवाब : मुसाफ़िर इमाम ने अगर चार रक्अ़त पढ़ा दीं तो मुक़ीम मुक़्तदियों के फ़र्ज़ बहर सूरत बातिल हो जाएंगे फिर अगर इमाम ने आख़िर में सजदए सहव कर लिया तो ख़ुद उस की और मुसाफ़िर मुक़्तदियों की नमाज़ दुरुस्त हो जाएगी और अगर सजदए सहव न किया तो नमाज़ वाजिबुल इआ़दा होगी।

सवाल 64 : मदनी क़ाफ़िले के शुरका अगर शरई मुसाफ़िर हों तो उन्हें मुक़ीम लोगों की मौजूदगी में इमामत करवानी चाहिए या नहीं ?

जवाब : शरई मुसाफ़िर के लिए ऐसी जगह कि जहां मुक़ीम लोग मौजूद

www.dawateislami.net

हों चार रक्अ़त वाली नमाज़ की इमामत न करवाना बेहतर है क्यूंकि इमाम अगर दो रक्अ़त पर सलाम फेर दे तो मुक़्तदी ला इ़ल्मी की वज्ह से परेशान हो जाते हैं और बाज़ तो नमाज़ ही फ़ासिद कर देते हैं लेहाज़ा ऐसी जगह पर इमामत के अहल किसी मुक़ीम से ही इमामत करवाई जाए। हां, अगर कोई अहल इमाम मुयस्सर नहीं तो नमाज़ से पेहले लोगों को अच्छी त़रह़ मस्अला समझा दिया जाए (कि मैं मुसाफ़िर हूं, दो रक्अ़त के बाद सलाम फेर दूंगा, मुक़ीम मुक़्तदियों ने सलाम नहीं फेरना बल्कि खड़े हो कर अपनी बक़िय्या दो रक्अ़तें इस त़रह़ पूरी करें कि ह़ालते क़ियाम में कुछ न पढ़ें बल्कि जितनी देर में सूरए फ़ातिह़ा पढ़ी जाती है, उतनी देर ख़ामोश खड़े रहें) और दो रक्अ़त पर सलाम फेरने के बाद भी इमाम ज़ोर से कहे कि मैं मुसाफ़िर हूं आप लोग नमाज़ मुकम्मल कर लें।

सवाल 65 : जिस पर शरअ़न क़स्र थी उस ने पूरी पढ़ ली तो उस नमाज़ का क्या हुक्म है ?

जवाब : जिस पर शरअ़न क़स्र थी उस ने पूरी पढ़ ली, उस पर नमाज़ का दोबारा पढ़ना वाजिब है।

सवाल 66 : चलती बस और ट्रेन में नमाज़ पढ़ना कैसा ?

जवाब : चलती बस और ट्रेन में बिला उ़ज़्रे शरई फ़र्ज़, वाजिब और सुन्नते फ़ज्र नहीं पढ़ सकते।

सवाल 67 : अगर उ़ज़्र की वज्ह से चलती ट्रेन या बस में नमाज़ पढ़नी पढ़ जाए तो नमाज़ का क्या हुक्म है नीज़ नमाज़ किस त़रफ़ मुंह कर के पढ़ें ?

जवाब : चलती ट्रेन या बस वग़ैरा में अगर उ़ज़्र की वज्ह से नमाज़ पढ़नी पड़े तो अगर क़िब्ला रू होना मुमकिन है तो क़िब्ला रुख़ हो कर नमाज़ पढ़ें वरना जिस त़रह़ भी मुमकिन हो, पढ़ लें मगर बाद में फिर पढ़नी होगी।

www.dawateislami.net

मुतफ़र्रिक़ सवालो जवाब

सवाल 68 : मदनी क़ाफ़िले का सामान अगर गुम हो जाए तो इस का क्या हुक्म होगा ?

जवाब : मदनी क़ाफ़िले का सामान गुम होने की दो सूरतें हैं : अगर किसी शरीक के सिपुर्द था और उस ने हिफ़ाज़त में कोई कोताही नहीं की तो किसी पर तावान नहीं और अगर किसी की कोताही के साथ गुम हुवा तो उस पर तावान होगा ।

सवाल 69 : मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करने वाले अफ़राद बाज़ चीज़ें दारुस्सुन्नह में छोड़ जाते हैं, क्या येह सामान किसी दूसरे को दे सकते हैं ?

जवाब : मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करने वाले अफ़राद जो चीज़ें दारुस्सुन्नह (मदनी मर्कज़) में छोड़ जाते हैं, उन का हुक्म येह है कि जिन चीज़ों के मालिकों का इल्म हो तो उन के मालिकान से राबेता कर के वोह चीज़ें उन के हवाले की जाएं । जब तक वोह न आएं उन की हिफ़ाज़त करनी होगी । अगर मालिक लेने नहीं आता या नहीं लेना चाहता तो उन से इजाज़त ले कर येह चीज़ें किसी और को दे दी जाएं ।

सवाल 70 : बाज़ अफ़राद अपना सामान दारुस्सुन्नह (मदनी मर्कज़) पर छोड़ जाते हैं और मालिक कौन है येह मालूम नहीं होता तो ऐसी सूरत में उस सामान का क्या करें ?

जवाब : जिन चीज़ों के मालिक के बारे में इल्म न हो वोह लुक़्ते के हुक्म में है, उन के मालिक को तलाश कर के सामान उन के हवाले कर दिया जाए। अगर भरपूर तलाश के बाद भी मालिक का कुछ पता न लगे तो उस सामान की हिफ़ाज़त करें या किसी मिस्कीन पर तसद्दुक़ कर दें ।

www.dawateislami.net

सवाल 71 : बाज़ अवक़ात मदनी क़ाफ़िले में शुरका ए क़ाफ़िला में से कोई फ़र्द खाने में शरीक नहीं होता तो क्या उस से खाने की रक़म ले सकते हैं ?

जवाब : शुरका ए क़ाफ़िला में से अगर कोई किसी वज्ह से खाने में शरीक नहीं हो सका तो उस से खाने की रक़म लेने या न लेने में तफ़्सील है : अगर तो खाना लाने से पेहले ही उस ने अमीरे क़ाफ़िला को खाना न खाने के वक़्त मौजूद न होने की (Advance में) इत्तेलाअ़ दे दी थी और बाद में खाने में शरीक भी नहीं हुवा तो उस खाने के अख़राजात उस के इलावा दीगर शुरका पर पड़ेंगे, उस से कुछ वुसूल नहीं किया जाएगा और अगर खाना लाने से पेहले उस ने अमीरे क़ाफ़िला को अपने न खाने से मुतअ़ल्लिक़ आगाह नहीं किया और यूंही बग़ैर बताए कहीं चला गया और अमीरे क़ाफ़िला ने उस का खाना भी मंगवा लिया तो इस की अदाएगी उस पर लाज़िम होगी, यूंही मौजूद था मगर खाया नहीं तो भी उस पर अदाएगी लाज़िम है।

सवाल 72 : बाज़ अवक़ात मदनी क़ाफ़िले में ऐसे अफ़राद भी होते हैं जो कम दिन के लिए आते हैं तो क्या उन से भी मुकम्मल दिनों के अख़राजात (Expenses) लिए जाएंगे ?

जवाब : जिस इस्लामी भाई ने जितने दिन मदनी क़ाफ़िले में सफ़र किया और खाना मुश्तरका तौ़र पर मंगवाया जाता रहा तो उस से सिर्फ़ उस के अय्यामे शुमूलियत के अख़राजात लिए जाएंगे, इस से पेहले या बाद के अख़राजात लेना जाइज़ नहीं। हां अगर कोई शख़्स शामिल न होने के बावुजूद भी अपनी रिज़ामन्दी से अ़तिय्यात देना चाहता है तो उस से लेने में कोई ह़रज नहीं।

सवाल 73 : मदनी क़ाफ़िले में जदवल की दोहराई नीज़ बयानात वग़ैरा में अमीरे क़ाफ़िला या बयान करने वाले मुबल्लिग़ की त़रफ़ से तरग़ीब दिलाई जाती है और शुरका से हाथ उठवाए जाते हैं इस में क्या एह़तियात़ होनी चाहिए ?

www.dawateislami.net

जवाब : मदनी क़ाफ़िले में जदवल की दोहराई नीज़ बयानात वग़ैरा में अमीरे क़ाफ़िला या बयान करने वाले मुबल्लिग़ की त़रफ़ से मुख़्तलिफ़ उमूर अन्जाम देने की तरग़ीब दिलाई जाती है जिस पर शुरका ए क़ाफ़िला को अच्छी अच्छी निय्यत करने की तरग़ीब दिलाई जाती है, शुरका ए क़ाफ़िला इस निय्यत पर आमादगी के लिए हाथ उठाते हैं या اِنْ شَآءَاللّٰه केह कर अपनी निय्यत का इज़्हार करते हैं ऐसे मौक़ेअ़ पर महज़ शर्मा हुज़ूरी (दो आंखों की शर्म) में झूटी निय्यतों का इज़्हार न किया जाए। यानी जिस काम के बारे में पता है कि न मेरा करने का इरादा है और न मैं ने करना है तो महज़ किसी को ख़ुश करने या लोगों को दिखाने की निय्यत से इस काम को करने का इज़्हार झूट है इस से हर एक को बचना ज़रूरी है।

सवाल 74 : मदनी क़ाफ़िले वालों का बीच रास्ते में खड़े हो कर नेकी की दावत या चौक दर्स देना कैसा ?

जवाब : मदनी क़ाफ़िले वाले अ़लाक़ाई दौरे के लिए निकलें या चौक दर्स के लिए किसी भी सूरत में लोगों को बीच रास्ते में रोक कर चौक दर्स और नेकी की दावत देने की हरगिज़ इजाज़त नहीं कि इस से रास्ते पर चलने वालों को बहुत ज़्यादा तक्लीफ़ का सामना करना पड़ता है। यूंही अगर रास्ता तंग हो तो किनारे पर भी न खड़े हों कि इस से रास्ता ब्लोक होने का शदीद ख़दशा है।

सवाल 75 : फ़ज्र और ज़ोहर की नमाज़ से पेहले अगर वक़्त कम हो तो फ़ज्र के लिए जगाने और चौक दर्स के लिए जाना कैसा ?

www.dawateislami.net

जवाब : मदनी क़ाफ़िले के जदवल में फ़ज्र की नमाज़ से पेहले फ़ज्र के लिए जगाने और ज़ोहर की नमाज़ से पेहले चौक दर्स का जदवल होता है। फ़ज्र के लिए जगाने या चौक दर्स की वज्ह से सुन्नते क़ब्लिया को इन के वक़्त से क़ज़ा कर देना जाइज़ नहीं। अगर किसी दिन इन कामों की वज्ह से सुन्नते क़ब्लिया के निकलने का अन्देशा हो तो उस दिन इन दोनों कामों को तर्क कर के सुन्नते क़ब्लिया अदा करना ज़रूरी है।

सवाल 76 : क्या मस्जिद में मैले कुचैले या बदबूदार कपड़े पेहन कर आ सकते हैं?

जवाब : मस्जिद में बदबूदार और ऐसे मैले कुचैले कपड़े पेहन कर न आएं कि जिन से नमाज़ी घिन खाएं।

सवाल 77 : मज़दूर या मिकेनिक जो काम वाले कपड़ों में हों या ऐसे अफ़राद जिन के कपड़े मैले हों उन को मस्जिद में ले कर जाना कैसा?

जवाब : अ़लाक़ाई दौरे में आ़म तौ़र पर कुछ लोगों को हाथों हाथ मस्जिद के दर्स में शिर्कत कराने की तरकीब होती है, मज़दूर या मिकेनिक आ़म तौ़र पर काम के कपड़ों में होते हैं जो इन्तेहाई मैले कुचैले होते हैं, ऐसे अफ़राद को मस्जिद ले कर आने की इजाज़त नहीं।

सवाल 78 : बाज़ अवक़ात एक मक़ाम से दूसरे मक़ाम पर जाने के लिए गाड़ी की बुकिंग करानी पड़ती है, इस के लिए किन उमूर का ख़याल रखना ज़रूरी है?

जवाब : गाड़ी की बुकिंग करवाने के लिए 3 बातों का ख़याल रखना ज़रूरी है :

(1) किराया पेहले तै़ करना ज़रूरी है।

(2) जिस जगह जाना है उस का मुकम्मल तअ़य्युन हो, अगर किसी मश्हूर जगह से मज़ीद आगे भी कुछ किलो मीटर का सफ़र है तो पेहले से ही तै़ कर

www.dawateislami.net

लिया जाए कि फुलां मश्हूर जगह से इतने किलो मीटर आगे जाना है, इस त़रह़ की वज़ाह़त न करना बाहमी नज़ाअ़ (आपसी झगड़े) का सबब बन सकता है।

(3) जितने अफ़राद सफ़र करेंगे, उन की तादाद और उन के सफ़री सामान की तादाद वग़ैरा भी पेहले ही से वाज़ेह़ त़ौर पर बता दी जाए।

सवाल 79 : अमीरे क़ाफ़िला किस शख़्स को बनाया जाए नीज़ अमीरे क़ाफ़िला की ज़िम्मेदारी क्या है?

जवाब : अमीरे क़ाफ़िला ऐसे फ़र्द को बनाना चाहिए जो कम अज़ कम इन शरई मदनी फूलों (सवालन जवाबन) में बयान कर्दा मसाइल का इदराक रखता हो, इमामत वग़ैरा का भी अहल हो, सफ़र में बिल ख़ुसूस और मसाजिद में बिल उ़मूम, इमाम की ग़ैर ह़ाज़री की सूरत में क़ाफ़िले वालों को जमाअ़त कराने का मौक़अ़ मिलता है, लेहाज़ा ऐसे अफ़राद का होना ज़रूरी है जो इमामत के अहल हों।

अमीरे क़ाफ़िला बनना भी एक त़रह़ का दीनी मन्सब है, जिस में अमीरे क़ाफ़िला की ज़िम्मेदारी पूरे क़ाफ़िले वालों की तरबियत करना और उन को दीन के अह़काम सिखाना होता है, फ़ासिक़ इस मन्सब के लाइक़ नहीं। अमीरे क़ाफ़िला किसी बा शरअ़, दीनदार शख़्स को बनाया जाए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जहन्नम का मख़्सूस दरवाज़ा

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "बेशक जहन्नम का एक ऐसा दरवाज़ा है जिस से वोही शख़्स दाख़िल होगा जिस का ग़ुस्सा अल्लाह पाक की ना फ़रमानी पर ही ठन्डा होता है।"

(شعب الایمان للبیھقی، 320/2، حدیث: 8331، احیاء العلوم، 534/3)

www.dawateislami.net

मदनी क़ाफ़िले का तआ़रुफ़

मदनी क़ाफ़िला ज़ैली ह़ल्क़े के 12 दीनी कामों में से एक अहम तरीन दीनी काम और दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल में बोली जाने वाली एक इस्त़ेलाह़ है, जिस से मुराद चन्द इस्लामी भाइयों का बाहम (आपस में) मिल कर कम से कम 3 दिन, 12 दिन, एक माह, 63 दिन या फिर 12 माह के लिए राहे ख़ुदा का मुसाफ़िर बनना है।

मदनी क़ाफ़िले के बारे में 19 फ़रामीने अमीरे एहले सुन्नत

(1) दावते इस्लामी की बक़ा मदनी क़ाफ़िलों में है।

(2) मदनी क़ाफ़िले दावते इस्लामी के लिए रीढ़ की हड्डी की हैसिय्यत रखते हैं।

(3) हर इस्लामी भाई ज़िन्दगी में यकमुश्त 12 माह और हर 12 माह में एक माह और उ़म्र भर हर माह 3 दिन के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करे और इस सफ़र के मामूल को अपने ऊपर नाफ़िज़ कर के दूसरों तक पहुंचाने की कोशिश करे।

(4) एक माह के मदनी क़ाफ़िलों की कामयाबी के लिए ज़िम्मेदारान का सफ़र बेह़द ज़रूरी है।

(5) मुझे ऐसे ज़िम्मेदारान चाहिएं जो मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने वाले हों।

(6) मेरा पसन्दीदा इस्लामी भाई वोह है जो लाख सुस्ती हो मगर तीन दिन मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करता हो, जो दाढ़ी और ज़ुल्फ़ों से आरास्ता और सुन्नत के मुत़ाबिक़ मदनी लिबास व इमामा शरीफ़ से मुज़य्यन हो, मुझे (नेकियां) कमाव बेटे पसन्द हैं।

(7) मदनी क़ाफ़िले में सफ़र के बग़ैर कोई भी दावते इस्लामी वाला मेरा पसन्दीदा नहीं बन सकता।

(8) मेरी नज़र में ह़क़ीक़ी मानों में दावते इस्लामी वाला वोह है जो कम अज़ कम इन पांच नेक आमाल का आ़मिल हो : (1) हर माह पाबन्दी से 3 दिन

www.dawateislami.net

मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करता हो। (तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर वोह माना जाएगा जो येह तीन दिन मुकम्मल जदवल के मुताबिक़ गुज़ारता हो) (2) हफ़्तावार इजतेमाअ़ में अव्वल ता आख़िर शिर्कत करता हो। (3) हर हफ़्ते अ़लाक़ाई दौरे में अव्वल ता आख़िर शिर्कत करता हो। (4) रोज़ाना जाइज़ा लेते हुवे नेक आमाल का रिसाला पुर कर के हर ईसवी (अंग्रेज़ी) माह की पेहली तारीख़ को अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ कराता हो। (5) रोज़ाना कम अज़ कम दो घन्टे दावते इस्लामी के दीनी कामों में सर्फ़ करता हो।

(9) तमाम इस्लामी भाइयों को बस येही धुन होनी चाहिए कि जिस त़रह़ भी बन पड़े हम लोगों को मदनी क़ाफ़िलों के लिए तैयार करें।

(10) मुझे मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने वालों से प्यार है।

(11) हमारी मन्ज़िल मदनी क़ाफ़िलों के ज़रीए दुन्या भर में सुन्नतों की बहारें आ़म करना है।

(12) दुन्यावी या तन्ज़ीमी काम में चाहे जितनी भी मसरूफ़िय्यत हो जब तक कोई मानेए शरई न हो हर माह 3 दिन के मदनी क़ाफ़िले में ज़रूर सफ़र कीजिए।

(13) इस्लामी भाइयों के साथ ख़ुश त़बई के लिए होने वाली गुफ़्तगू में भी मदनी क़ाफ़िलों के वाक़ेआ़त सुनाते रहिए।

(14) अगर वुस्अ़त हो तो हर माह या हर दूसरे माह एक इस्लामी भाई को अपने ख़र्च पर सफ़र भी करवाइए।

(15) इधर उधर की बातों के बजाए मदनी क़ाफ़िलों ही की बातें कीजिए। आप का ओढ़ना बिछोना बस मदनी क़ाफ़िला मदनी क़ाफ़िला मदनी क़ाफ़िला मदनी क़ाफ़िला मदनी क़ाफ़िला हो।

(16) मश्हूर मज़ारात और बड़ी मसाजिद में लोग ज़्यादा होते हैं, लेहाज़ा वहां ऐसे इस्लामी भाइयों की बा क़ाइ़दा ज़िम्मेदारी लगाई जाए कि वोह मदनी

www.dawateislami.net

क़ाफ़िलों में सफ़र के लिए इनफ़िरादी कोशिश के ज़रीए इस्लामी भाइयों को तैयार करें।

(17) दूसरों को तरग़ीब दिलाने के लिए ख़ुद सरापा तरग़ीब बन जाइए।

(18) दावते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल मर्कज़ी मजलिसे शूरा का हर निगरान व रुक्न और हर ज़िम्मेदार हर माह तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में जदवल के मुताबिक़ सफ़र करे। मदनी क़ाफ़िले या तन्ज़ीमी कामों के लिए दूसरे शेहर या दूसरे मुल्क जाए तो सिर्फ़ मस्जिद ही में मोतकिफ़ रहे, हस्बे ज़रूरत बाहर निकले तो फिर मस्जिद में आ कर मोतकिफ़ हो जाए, अपने जुम्ला मदनी मश्वरे भी मसाजिद में कीजिए। हर दम मस्जिद को आबाद रखिए। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप की क़ब्र मीठे मीठे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जल्वों से आबाद होगी।

(19) अगर शरई रुकावट न हो तो दीन की ख़ातिर घर से बाहर राहे ख़ुदा में रेहने की आदत बनाइए। मैं ने घर में मुक़य्यद रेह कर नहीं, कसरत के साथ घर से बाहर रेह कर अल्लाह पाक के हुक्म से दीन की ख़िदमत की सआदत पाई है।

आओ मदनी क़ाफ़िले में हम करें मिल कर सफ़र
सुन्नतें सीखेंगे इस में اِنْ شَآءَاللّٰه सर बसर
मुझ को जज़्बा दे सफ़र करता रहूं परवरदगार
सुन्नतों की तरबियत के क़ाफ़िले में बार बार
जो भी शैदाई है मदनी क़ाफ़िलों का या ख़ुदा
दो जहां में उस का बेड़ा पार फ़रमा या ख़ुदा
तीन दिन हर माह जो अपनाए मदनी क़ाफ़िला
बे हिसाब उस का ख़ुदाया ख़ुल्द में हो दाख़ला
जो गुनाहों के मरज़ से तंग है बेज़ार है
क़ाफ़िला अत्तार उस के वास्ते तैयार है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की 72 निय्यतें

(1) अस्ल मक़्सूद यानी मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करूंगा (2) अपने ज़ाती ख़र्च पर सफ़र करूंगा (3) अपने पल्ले से खाऊंगा (4) सवारी की दुआ पढ़ूंगा (5) अगर किसी इस्लामी भाई को जगह नहीं मिली तो अपनी निशस्त पर ब इसरार बिठाऊंगा (6,7) कोई बूढ़ा या बीमार मुसलमान नज़र आएगा तो उस के लिए निशस्त ख़ाली कर दूंगा (8) मदनी क़ाफ़िले वालों की ख़िदमत करूंगा (9) अमीरे क़ाफ़िला की इताअ़त करूंगा (10,11,12) ज़बान, आंख और पेट का कुफ़्ले मदीना लगाऊंगा यानी फ़ुज़ूल गोई, फ़ुज़ूल निगाही से बचूंगा और भूक से कम खाऊंगा (13) सफ़र में हर मौक़ेअ़ पर नेक आमाल पर अ़मल जारी रखूंगा (14,15,16) वुज़ू, नमाज़ और क़ुरआने पाक पढ़ने में जो ग़लतियां होंगी वोह आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत में रेह कर दुरुस्त करूंगा (जानने वाला निय्यत करे कि सिखाऊंगा) (17,18) सुन्नतें और दुआएं सीखूंगा और (19) दूसरों को सिखाऊंगा और (20) इन पर ज़िन्दगी भर अ़मल करता रहूंगा (21,22,23,24,25) तमाम फ़र्ज़ नमाज़ें मस्जिद की पेहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त अदा करूंगा (26) तहज्जुद (27,28) इशराक़ व चाश्त और (29) अव्वाबीन की नमाज़ें पढ़ूंगा (30,31) एक लम्ह़ा भी ज़ाएअ़ नहीं होने दूंगा, अल्लाह अल्लाह करता रहूंगा, दुरूद शरीफ़ पढ़ता रहूंगा (दौराने दर्सो बयान बग़ैर कुछ पढ़े ख़ामोशी से सुनना होता है) (32) नमाज़े फ़ज्र के लिए मुसलमानों को जगाऊंगा (33,34,35) रास्ते में जब मस्जिद नज़र आएगी तो उस की ज़ियारत करूंगा और बुलन्द आवाज़ से दुरूद शरीफ़ पढ़ूंगा, मौक़अ़ मिला तो صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! केह कर दूसरों को भी दुरूद शरीफ़ पढ़ाऊंगा (36,37) बाज़ार में जाना पड़ा तो बिल ख़ुसूस नीची निगाहें किए गुज़रते हुवे बाज़ार की दुआ पढ़ूंगा (38,39,40) मुसलमानों को

www.dawateislami.net

सलाम कर के उन से पुर तपाक त़रीक़े पर मुलाक़ात करूंगा (41) ख़ूब इनफ़िरादी कोशिश करूंगा (42,43) हाथों हाथ मदनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिए मुसलमानों को तैयार करूंगा (44) नेकी की दावत दूंगा (45) दर्स दूंगा (46) मौक़अ़ मिला तो सुन्नतों भरा बयान करूंगा (47,48) जहां क़ाफ़िला जाएगा वहां के किसी बुज़ुर्ग के मज़ार शरीफ़ पर मदनी क़ाफ़िले के हमराह ह़ाज़री दूंगा (49) सुन्नी आ़लिम की ज़ियारत करूंगा (50) अगर मदनी क़ाफ़िले का कोई मुसाफ़िर बीमार हो गया तो तीमारदारी करूंगा (51) अगर किसी मुसाफ़िर के पास ख़र्च ख़त्म हो गया तो अमीरे क़ाफ़िला के मश्वरे से उस की माली इमदाद करूंगा (52,53,54), सफ़र में अपने लिए, अपने घर वालों के लिए और उम्मते मुस्लिमा के लिए दुआ ए ख़ैर करूंगा (55,56) जिस मस्जिद में क़ियाम होगा उस मस्जिद और वहां के वुज़ूख़ाने की सफ़ाई करूंगा (57) अगर किसी ने बिला वज्ह सख़्ती की तब भी सब्र करूंगा (58,59) थकन वग़ैरा के सबब ग़ुस्सा आ गया तो ज़बान का कुफ़्ले मदीना लगाते हुवे ज़ब्त करूंगा (60,61,62) अगर मस्जिद में मदनी क़ाफ़िले को क़ियाम की इजाज़त न मिली तो किसी से उलझने के बजाए इस को अपने इख़्लास की कमी तसव्वुर करूंगा और मदनी क़ाफ़िले के साथ हाथ उठा कर दुआ ए ख़ैर करता हुवा पलटूंगा (63) अगर कोई झगड़ा करेगा तो ह़क़ पर होने के बावुजूद उस से झगड़ा न कर के ह़दीसे पाक में दी हुई बिशारते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ह़क़दार बनूंगा : "जो ह़क़ पर होते हुवे झगड़ा तर्क कर दे उस के लिए जन्नत के दरमियान में मकान बनाया जाएगा।"[1] (64,65) अगर किसी ने ज़ुल्मन मारा भी तो जवाबी कारवाई करने के बजाए शुक्र अदा करूंगा कि राहे ख़ुदा में मार खाने वाली सुन्नते बिलाली अदा हुई (66,67,68) अगर मेरी वज्ह से किसी मुसलमान की दिल आज़ारी हो

1 . . . ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی المراء، 3/400، حدیث: 2000۔

www.dawateislami.net

गई तो उसी वक़्त अहसन त़रीक़े पर मुआ़फ़ी मांगूंगा (69,70,71) चूंकि हर वक़्त साथ रेहने में ह़क़ तलफ़ियों का ज़्यादा इमकान रेहता है लेहाज़ा वापसी पर इन्तेहाई लजाजत के साथ फ़र्दन फ़र्दन मुआ़फ़ी तलाफ़ी करूंगा (72) सफ़र से वापसी पर घर वालों के लिए तोह़फ़ा ले जाने की सुन्नत अदा करूंगा । सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब सफ़र से कोई वापस आए तो घर वालों के लिए कुछ न कुछ तोह़फ़ा लाए, अगर्चे अपनी झोली में पथ्थर ही डाल लाए ।"[1]

अल्लाह पाक हमें जदवल के मुत़ाबिक़ मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए ।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दावते इस्लामी तेरी धूम मची हो

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मसाजिद की आबादकारी का ज़रीआ़

आ़शिक़ाने रसूल के साथ मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र मसाजिद की आबादकारी का भी ज़रीआ़ है । क्यूंकि जो लोग मस्जिद में नहीं आते जब उन तक मदनी क़ाफ़िलों के ज़रीए़ नेकी की दावत पहुंचेगी तो उम्मीद है कि वोह मस्जिद में आने लगेंगे और नमाज़ पढ़ने लगेंगे और यूं मस्जिद में नमाज़ियों की तादाद बढ़ने से اِنْ شَآءَاللہ मस्जिदें आबाद होंगी ।

1 . . . کنزالعمال، کتاب السفر، قسم الاقوال، اداب متفرقہ، 301/3، حدیث: 17502، الجزء السادس۔

www.dawateislami.net

अमीरे क़ाफ़िला को कैसा होना चाहिए ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! दावते इस्लामी का दीनी काम दिन ब दिन वसीअ़ और मज़बूत़ तर होता जा रहा है। इब्तेदा के तजरिबाती मराहि़ल से गुज़रने के बाद अब हर काम की बा क़ाइ़दा तरकीब बन चुकी है और येह बात अब रोज़े रौशन की त़रह़ वाज़ेह़ हो चुकी है कि अगर हम पूरी दुन्या में दावते इस्लामी का दीनी काम करना चाहते हैं और अपने मदनी मक़्सद (मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है) में कामिल कामयाबी की तमन्ना रखते हैं तो हमें अपने मदनी क़ाफ़िलों को मज़बूत़ बनाना होगा। इस के लिए हमें हर इस्लामी भाई को राहे ख़ुदा का मुसाफ़िर बनाने के लिए मुसलसल कोशिश करना होगी ताकि हर मुसलमान सुन्नतों का आ़मिल और तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत का मुख़्लिस मुबल्लिग़ बन कर दूसरों को नेकी की दावत देने वाला बन जाए। इस के इ़लावा हमें ख़ुद भी मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मुस्तक़िल मामूल बनाना होगा। इन मदनी क़ाफ़िलों की कामयाबी और तरक़्क़ी का राज़ इस में पोशीदा है कि मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने वाले इस्लामी भाइयों को इतनी बेहतरीन तरबियत दी जाए कि वोह एक मरतबा सफ़र करने के बाद न सिर्फ़ ख़ुद बार बार मदनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बनें बल्कि दूसरे इस्लामी भाइयों को भी मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करवाने वाले बन जाएं। मदनी क़ाफ़िले में बेहतरीन तरबियत देने में आसानी के लिए हमारे मदनी मर्कज़ ने "जदवल" की सूरत में हमें एक रेहनुमा अ़त़ा फ़रमा दिया है। अब इस जदवल पर कमा ह़क़्क़ुहू अ़मल करवाने के लिए ऐसा मज़बूत़ अमीरे क़ाफ़िला दरकार है जो बा अख़्लाक़, इस्लामी भाइयों का ख़ैर ख़्वाह, उन की नफ़्सियात को समझने वाला, बा ह़िक्मत, तजरिबा कार और दीनी ज़ेहन रखने वाला हो। क्यूंकि अगर अमीरे क़ाफ़िला कमज़ोर होगा तो क़ाफ़िले में इन्तेशार, जदवल पर अ़दम अ़मल, आपस में उलझने,

www.dawateislami.net

एक दूसरे के बारे में बद गुमानी करने और क़ाफ़िला टूटने जैसे नुक़्सानात का सामना करना पड़ेगा, जिस की बिना पर क़ाफ़िला अपने मक़ासिद में नाकाम हो सकता है। अल ग़रज़ मदनी क़ाफ़िलों की कामयाबी के लिए अमीरे क़ाफ़िला का मज़बूत होना बेहद ज़रूरी है। याद रहे ! अमीरे क़ाफ़िला के लिए अगर्चे सनद याफ़्ता आ़लिम होना ज़रूरी नहीं ताहम (फिर भी) उस में (1) फ़र्ज़ उ़लूम ह़ासिल करने का जज़बा (2) समझ व ह़िक्मते अ़मली (3) हुस्ने अख़्लाक़ (4) क़ुव्वते बरदाश्त (5) सन्जीदगी (6) ख़िदमत का जज़बा (7) हर किसी को अपने साथ ले कर चलने और काम लेने की सलाह़िय्यत का पाया जाना ज़रूरी है।

शुरका ए क़ाफ़िला की तरबियत के मदनी फूल

अमीरे क़ाफ़िला शुरका ए क़ाफ़िला की तरबियत करने में दर्जे ज़ैल पेहलूओं को मद्दे नज़र रखे :

(1) **इत़ाअ़ते अमीर के लिए ज़ेहन बनाना :** अमीरे क़ाफ़िला को चाहिए कि इत़ाअ़ते अमीर के ह़वाले से शुरका ए क़ाफ़िला का इस त़रह़ ज़ेहन बनाए : "प्यारे इस्लामी भाइयो ! मदनी क़ाफ़िले में अमीरे क़ाफ़िला इस लिए बनाया जाता है कि क़ाफ़िले में तमाम मामूलात मुनज़्ज़म अन्दाज़ में पायए तक्मील को पहुंच जाएं। जब भी कोई सफ़र किया जाए तो हमें चाहिए कि किसी इस्लामी भाई को अपना अमीर मुक़र्रर कर लें" जैसा कि प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अगर तीन शख़्स सफ़र में हों तो उन्हें चाहिए कि एक को अपना अमीर बना लें।"[1]

अमीर की इत़ाअ़त हम पर लाज़िम है लेकिन अमीर को चाहिए कि ख़ुद को क़ौम का ख़ादिम समझे यानी लोगों को चाहिए कि अमीरे क़ाफ़िला की इत़ाअ़त करें और अमीर को चाहिए कि अपने आप को दूसरों से बड़ा समझने के बजाए ख़ुद को उन का ख़ादिम तसव्वुर करे और उन की ख़ैर ख़्वाही करता रहे।

1 ... کنز العمال، کتاب السفر، قسم الاقوال، آداب متفرقة، 300/3، حدیث: 17496، الجزء السادس۔

www.dawateislami.net

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मुझे मदनी मर्कज़ की त़रफ़ से आप की ख़िदमत पर मामूर किया गया है, आप की ख़िदमत में दरख़्वास्त है कि जब भी कोई बात आप की बारगाह में अ़र्ज़ करूं बयान कर्दा बातों की रौशनी में उसे ज़रूर शर्फ़े क़बूलिय्यत बख़्शियेगा और अगर कहीं कोई कमी पाएं तो नेकी की दावत के आदाब का ख़याल रखते हुवे मेरी इस्लाह़ फ़रमा दें।

(2) **नज़्मो ज़ब्त :** अमीरे क़ाफ़िला का सब से अहम काम येह है कि शुरका ए क़ाफ़िला को नेकी की दावत, नमाज़, ज़िक्र, दुरूद और सीखने सिखाने में जदवल के मुत़ाबिक़ इनफ़िरादी और इजतेमाई त़ौर पर मश्ग़ूल रखे। इस के लिए मदनी क़ाफ़िले में नज़्मो ज़ब्त का जितना ख़याल रखा जाएगा जदवल पर अ़मल उतना ही आसान होगा और जदवल पर अ़मल करने की बरकत से येह क़ाफ़िला अपने मक़ासिद में अ़ज़ीम कामयाबी ह़ासिल करेगा। नज़्मो ज़ब्त क़ाइम रखने के सिलसिले में शुरका ए क़ाफ़िला के इत्तेह़ाद को बुन्यादी ह़ैसिय्यत ह़ासिल है। लेहाज़ा अमीरे क़ाफ़िला के लिए ज़रूरी है कि क़ाफ़िले में नज़्मो ज़ब्त क़ाइम रखने के लिए शुरका ए क़ाफ़िला में बिल ख़ुसूस इन मवाक़ेअ़ पर इत्तेह़ाद पैदा करने की कोशिश करे : ❁ खाना खाते वक़्त ❁ सफ़र में दुआ़ पढ़ाते वक़्त ❁ तरबियत देते वक़्त ❁ रात को आराम करते वक़्त ❁ सफ़र के दौरान ❁ नवाफ़िल, इशराक़ो चाश्त व तहज्जुद में ❁ फ़ज्र के लिए जगाते वक़्त ❁ नेकी की दावत देते वक़्त। और आपस में इत्तेह़ाद उसी वक़्त पैदा हो सकता है जब तमाम शुरका ए क़ाफ़िला एक दूसरे से अल्लाह पाक की रिज़ा के लिए मह़ब्बत करें। इसी त़रह़ अमीरे क़ाफ़िला को भी चाहिए कि अपने दिल में शुरका ए क़ाफ़िला की मह़ब्बत रखे। अल्लाह पाक की रिज़ा के लिए आपस में मह़ब्बत करने वालों के बारे में ग़ैब दां आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस में येह तीन अवसाफ़

www.dawateislami.net

होंगे वोह ईमान की लज़्ज़त पाएगा : (1) अल्लाह पाक और उस के ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत तमाम आ़लम से ज़्यादा हो। (2) किसी से मह़ब्बत हो तो ख़ास अल्लाह ही के लिए हो। (3) ईमान लाने के बाद कुफ़्र की त़रफ़ पलटने से ऐसी नफ़रत हो जैसी आग में डाले जाने से नफ़रत होती है।"[1]

जब शुरका ए क़ाफ़िला के दरमियान मह़ब्बत भरी फ़ज़ा क़ाइम हो जाएगी तो हर इस्लामी भाई इस्लाम का मुख़्लिस मुबल्लिग़ बन कर नेकी की दावत की ज़िम्मेदारियां पूरी दियानत दारी से अदा करने की पूरी कोशिश करेगा। सब के सामने एक ही मक़्सद होगा कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ" और येह मक़्सद तमाम शुरका ए क़ाफ़िला को मह़ब्बत व उख़ुव्वत की मज़बूत़ लड़ी में पिरोए रखेगा जिस की वज्ह से क़ाफ़िले में सब का वक़्त ख़ुश गवार गुज़रेगा।

(3) **मदनी मश्वरा :** अमीरे क़ाफ़िला को चाहिए कि क़ाफ़िले के तमाम उमूर मदनी मश्वरे के त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ शुरका ए क़ाफ़िला के मश्वरे से त़ै करे। इस की बरकत से दूसरे इस्लामी भाइयों को अपनी अहमिय्यत और क़ाफ़िले के मुआ़मलात में शिर्कत का एह़सास होगा, क़ाफ़िले में उन की दिल चस्पी बढ़ेगी और उन के दिल में अमीरे क़ाफ़िला के लिए एह़तेराम वसीअ़ हो जाएगा। मश्वरे के ज़रीए़ ज़िम्मेदारियां अह़सन अन्दाज़ में बाहम तक़्सीम हो जाती हैं और हर काम के मुख़्तलिफ़ पेहलू निखर कर सामने आते हैं। मश्वरा करना हमारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत भी है जैसा कि अल्लाह पाक ने क़ुरआने ह़कीम में इरशाद फ़रमाया :

---

1 ... بخاری، کتاب الایمان، باب حلاوۃ الایمان، 1/17، حدیث: 16۔

www.dawateislami.net

وَشَاوِرْهُمْ فِي الْاَمْرِ ۚ فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ (پ۴، آل عمران: ۱۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और कामों में उन से मश्वरा लो और जिस किसी बात का इरादा पक्का कर लो तो अल्लाह पर भरोसा करो।

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स किसी काम का इरादा करे और उस के बारे में किसी से मश्वरा करे और अल्लाह पाक की रिज़ा के लिए फ़ैसला करे तो उसे सब से बेहतर काम की त़रफ़ रेहनुमाई की जाती है।"(1)

ह़ज़रते सैयदना ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का इरशाद है : कोई क़ौम जब भी आपस में मश्वरा करती है अल्लाह पाक उसे उन की अफ़्ज़ल राए की त़रफ़ हिदायत दे देता है।(2)

मश्वरे से पेहले अमीरे क़ाफ़िला तमाम शुरका को इस बात का ज़रूर एह़सास दिलाए कि हम एक अहम मक़्सद के लिए मदनी क़ाफ़िले में सफ़र कर रहे हैं लेहाज़ा हम सब को चाहिए कि सन्जीदगी का दामन थामे रखें, किसी की बात काट कर दरमियान में बोलना या कई इस्लामी भाइयों का एक साथ बोलना या गुफ़्तगू के दौरान त़न्ज़ व मज़ाक़ का सिलसिला शुरूअ़ कर देना इन्तेहाई ग़ैर मुनासिब है। अमीरे क़ाफ़िला को चाहिए कि मश्वरे के दौरान सब की तजावीज़ तवज्जोह से सुने ताकि इस्लामी भाइयों की ह़ौसला शिकनी न हो क्यूंकि अगर किसी की तजवीज़ या मश्वरा तवज्जोह से न सुना गया तो मुमकिन है कि वोह आइन्दा मश्वरा देने से ही गुरेज़ करे। इस त़रह़ अमीरे क़ाफ़िला उस की फ़िक्री सलाह़िय्यतों से इस्तेफ़ादा न कर पाएगा। फिर अगर किसी की तजवीज़ क़ाबिले

1 . . . شعب الایمان للبیهقی، الحادی والخمسون، باب فی الحکم بین الناس، 6/75، حدیث: 7538۔

2 . . . تفسیر قرطبی، سورۃ آل عمران، تحت الآیۃ: 159، 2/193۔

www.dawateislami.net

अ़मल न हो तब भी उस के अच्छे पेहलूओं की तारीफ़ करे और मुमकिन हो तो हौसला अफ़्ज़ाई करने के साथ साथ उसे समझाए कि उस की तजवीज़ के कौन से पेहलू किन वुजूहात की बिना पर क़ाबिले अ़मल नहीं। शुरका ए क़ाफ़िला का येह भी ज़ेहन बनाया जाए कि जब एक ही मौज़ूअ़ पर मश्वरा देने वाले कसीर हों तो हर एक की राए पर अ़मल मुमकिन नहीं होता लेहाज़ा कोई भी इस्लामी भाई उसे हरगिज़ अना का मस्अला न बनाए कि मेरा मश्वरा क्यूं नहीं माना गया ?

(4) **शुरका ए क़ाफ़िला से अच्छा बरताव :** अच्छा अमीर वोही होता है जो अल्लाह पाक की रिज़ा को अपने पेशे नज़र रखे, अपने मक़्सद से मुख़्लिस हो, अपने ज़ेरे तरबियत इस्लामी भाइयों से पुर ख़ुलूस महब्बत करने वाला हो, अपने इस्लामी भाइयों की तरबियत के लिए हर वक़्त कोशां रहे और उन के दिल में ऐसा घर कर जाए कि शरीअ़त के दाइरे में रेह कर उन्हें ख़्वाह कैसा ही काम करने को कहे वोह बे चूनो चरा उस के हुक्म को बजा लाएं। बाज़ अमीरे क़ाफ़िला येह शिक्वा करते हैं कि शुरका ए क़ाफ़िला इताअ़त नहीं करते। इस की वज्ह साफ़ ज़ाहिर है कि अमीरे क़ाफ़िला को इताअ़त करवाना ही नहीं आता, हर वक़्त हुक्म देने के अन्दाज़ में गुफ़्तगू करना, ख़ुद को इस्लामी भाइयों से बरतर जानना, इस्लामी भाइयों की मामूली ग़लतियों पर उन्हें सख़्त अल्फ़ाज़ और हक़ारत भरे लेहजे में डांटना वग़ैरा येह सब चीज़ें मिल कर शुरका ए क़ाफ़िला को अमीरे क़ाफ़िला से दूर कर देती हैं।

याद रखिए ! किसी की महब्बत उस की इताअ़त करवाती है लेहाज़ा ज़रूरी है कि अमीरे क़ाफ़िला और शुरका ए क़ाफ़िला के दरमियान उख़ुव्वत (भाईचारा) और महब्बत का मज़बूत रिश्ता क़ाइम हो। इस के इलावा अमीरे क़ाफ़िला ख़ुद भी जदवल की पाबन्दी करने में बेहद चुस्ती का मुज़ाहरा करे क्यूंकि

www.dawateislami.net

अमीरे क़ाफ़िला के अ़मल का असर पूरे क़ाफ़िले पर पड़ता है। इस लिए अगर अमीरे क़ाफ़िला, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र का पाबन्द, नेक आमाल का आ़मिल, तक़्वा ओ परहेज़गारी से आरास्ता होगा तो पूरा क़ाफ़िला नेक आमाल पर अ़मल पैरा हो जाएगा। लेकिन अगर अमीरे क़ाफ़िला ख़ुद बे अ़मल होगा या जदवल पर अ़मल में सुस्ती का मुज़ाहरा करेगा तो शुरका ए क़ाफ़िला का सुस्त हो जाना बईद अज़् गुमान नहीं। शुरका ए क़ाफ़िला के दिल नाज़ुक आबगीनों की त़रह़ होते हैं, जो मामूली सी ठेस से टूट सकते हैं, लेहाज़ा ! अमीरे क़ाफ़िला को चाहिए कि हर एक से उस के नफ़्सियाती तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ सुलूक करे और उन्हें बोरियत से बचाने के लिए ख़ुश्क मिज़ाजी और अफ़्सुर्दगी से कोसों दूर भागे बल्कि शरई इजाज़त के तह़त ख़ुश त़बई भी करे। हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी अपने शायाने शान ख़ुश त़बई फ़रमाते चुनान्चे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : "मैं ने आक़ा ओ मौला صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ज़्यादा मुस्कुराने वाला कोई नहीं देखा।"(1)

शुरका ए क़ाफ़िला की तरबियत के लिए मज़्कूरा बाला त़रीक़ों को अपनाने से आप का क़ाफ़िला एक यादगार क़ाफ़िला केहलाएगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अमीरे एहले सुन्नत की दुआएं लेने का ज़रीआ़

मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने वाले इस्लामी भाइयों से ख़ुश होते हुवे शैख़े त़रीक़त, अमीरे एहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : "मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करने वाले मेरे लाडले हैं और मेरे दिल में उन का बहुत मक़ाम है। मैं मदनी क़ाफ़िले वाला हूं, मुझे मदनी क़ाफ़िले से प्यार है।"

(मदनी क़ाफ़िला, स. 26)

1 ... ترمذی، الشمائل، باب ماجاء فی ضحک رسول اللہ، 5/542، حدیث: 226۔

www.dawateislami.net

मदनी क़ाफ़िले का मुख़्तसर जदवल

आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तेह़रीक दावते इस्लामी इन्डिया के तह़त राहे ख़ुदा के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र के भरपूर व मुकम्मल फ़वाइद हम उसी सूरत में ह़ासिल कर सकते हैं, जब अव्वल ता आख़िर मदनी क़ाफ़िले में सफ़र मदनी मर्कज़ के अ़त़ा कर्दा मदनी क़ाफ़िले के जदवल (Schedule) के मुत़ाबिक़ करें यानी घर से निकलने से ले कर वापस लौटने तक मदनी क़ाफ़िले में दीनी दर्सो बयान करने, खाने पीने, सोने जागने और मदनी तरबियत (सीखने सिखाने) के तमाम मुआ़मलात में मदनी क़ाफ़िले के शिड्यूल पर अ़मल करें।

मदनी क़ाफ़िले का मुख़्तसर शिड्यूल पेशे ख़िदमत है :

नम्बर	काम	वज़ाहत
(1)	शिड्यूल और एलानात की दोहराई और मदनी मश्वरे का ह़ल्क़ा (9 : 30 ता 9 : 56)	इस ह़ल्क़े में 5 मिनट तिलावत व नात और बाक़ी 21 मिनट (क्यूंकि इस का दौरानिया ही कुल 26 मिनट है) में शिड्यूल और एलानात की दोहराई और मश्वरे का ह़ल्क़ा लगाया जाए, तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में शिड्यूल की दोहराई अमीरे क़ाफ़िला ख़ुद ही करे, शुरका से सिर्फ़ एक एक काम पर मश्वरा किया जाए।
(2)	मदनी मक़्सद (9 : 56 ता 10 : 37) (41 मिनट)	इस ह़ल्क़े में इब्तेदाई 26 मिनट अमीरे एहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रसाइल से बयान और आख़री 15 मिनट में ज़ैली ह़ल्क़े के 12 दीनी कामों में से किसी एक दीनी काम पर ज़ेहन बनाया जाए। (रिसाला "**12 दीनी काम**" से देख कर)
(3)	इनफ़िरादी इबादत का ह़ल्क़ा (10 : 37 ता 10 : 56) (19 मिनट)	इस ह़ल्क़े में तिलावते क़ुरआन, ज़िक्रुल्लाह, दुरूद शरीफ़, "40 रूह़ानी इलाज / बीमार आ़बिद / मेंडक सवार बिच्छू" रसाइल से वज़ाइफ़ का एहतेमाम किया जाए, इस में मुत़ालआ़ भी कर सकते हैं।
(4)	मुख़्तसर नेकी की दावत (10 : 56 ता 11 : 08) (12 मिनट)	इस में मुख़्तसर नेकी की दावत याद करवाई जाए, अगर येह किसी को याद हो तो उसे इनफ़िरादी कोशिश के लिए तरग़ीबात याद करवाई जाएं।

www.dawateislami.net

(5)	इनफ़िरादी कोशिश का त़रीक़ा (11 : 08 ता 11 : 20) (12 मिनट)	अमीरे क़ाफ़िला, इनफ़िरादी कोशिश का त़रीक़ए कार सिखाए और अ़मली त़रीक़ा कर के दिखाए और जिन इस्लामी भाइयों को तरग़ीबात पिछले ह़ल्क़ों में याद न हुई हों तो उन को इस ह़ल्क़े में भी याद करवाई जाएं।
(6)	इनफ़िरादी कोशिश का ह़ल्क़ा (11 : 20 ता 12 : 00) (40 मिनट)	इस में इस्लामी भाई बाहर जा कर मुख़्तलिफ़ जगहों पर इनफ़िरादी कोशिश फ़रमाएं और इस्लामी भाइयों को हाथों हाथ मस्जिद में लाने का एहतेमाम करें, कुछ इस्लामी भाई मस्जिद में ज़ैली ह़ल्क़े के दीनी कामों पर एक दूसरे का ज़ेहन बनाएं। इसी वक़्त में बा असर शख़्सियात मसलन उ़लमा, मशाइख़, चौधरी वडेरों वग़ैरा से मुलाक़ात कर के दावते इस्लामी और इस के शोबाजात का तआ़रुफ़ और मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की दावत पेश करें।
(7)	सुन्नतें और आदाब सीखने का ह़ल्क़ा (12 : 00 ता 12 : 30) (30 मिनट)	इस ह़ल्क़े में अमीरे क़ाफ़िला शुरका को सुन्नतें व आदाब सिखाए, 3 दिन, 12 दिन और एक माह के मदनी क़ाफ़िलों में सुन्नतें और आदाब सीखने की तरतीब अलग अलग होगी।
(8)	वक़्फ़ए त़आ़म व चौक दर्स (12 : 30)	खाना खाएं और अज़ाने ज़ोहर से 12 मिनट पेहले (7 मिनट) फ़ैज़ाने सुन्नत से चौक दर्स दें। बादे दर्स नमाज़े ज़ोहर की दावत दे कर शुरका को अपने साथ मस्जिद में लाने की कोशिश करें। जो इस्लामी भाई क़रीब की मस्जिदों में ज़ोहर के दर्स के लिए जाएंगे वोह चौक दर्स के बाद रवाना हो जाएं।
(9)	बादे ज़ोहर दर्स (7 मिनट)	फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स दिया जाए।
(10)	नमाज़ के अह़काम (30 मिनट)	इस ह़ल्क़े में 3 दिन, 12 दिन और 1 माह के मदनी क़ाफ़िलों में सीखने की तरतीब अलग अलग होगी।
(11)	दर्सो बयान सीखने का ह़ल्क़ा (19 मिनट)	इस ह़ल्क़े में **अमीरे क़ाफ़िला**, शुरका में से जो दर्स नहीं दे सकते, उन को दर्स और जिन को बयान करना नहीं आता, उन को बयान करना सिखाए।
(12)	दुआ़ओं का ह़ल्क़ा (19 मिनट)	गर्मियों में येह ह़ल्क़ा इसी वक़्त और सर्दियों में इ़शा के बाद होगा।

www.dawateislami.net

(13)	वक़्फ़ए आराम	ह़ल्क़ों के बाद अ़स्र तक वक़्फ़ए आराम।
(14)	बादे अ़स्र एलानो बयान	(12 मिनट) नेकी की दावत के फ़ज़ाइल पर बयान हो।
(15)	अ़लाक़ाई दौरा	अ़लाक़ाई दौरा अ़स्र के बाद ही किया जाए।
(16)	अ़स्र ता मग़रिब का दर्स	इस दौरान फ़ैज़ाने सुन्नत (जिल्द अव्वल) और बयानाते अ़त्तारिया वग़ैरा से दर्स दिया जाए। आख़िर में चन्द मिनट सुन्नतें और आदाब सीखने सिखाने का ह़ल्क़ा लगाया जाए।
(17)	बादे मग़रिब एलान व बयान	मग़रिब के बाद किसी अच्छे मुबल्लिग़ से बयान करवाया जाए, इस के बाद इनफ़िरादी कोशिश (12 मिनट) की जाए। पेहले दिन मदनी क़ाफ़िलों की निय्यत और राहे ख़ुदा में सफ़र की अहमिय्यत और निय्यत के फ़ज़ाइल पर बयान हो। दूसरे दिन नाम लिखवाने की तरग़ीब दिलाएं और नाम लिखे जाएं और तीसरे दिन बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰه की दीन की ख़ातिर क़ुरबानियां बता कर सफ़र की तरग़ीब दिलाएं और फ़ौरी सफ़र का एहतेमाम करें।
(18)	वक़्फ़ए त़आ़म	बादे बयान व मुलाक़ात खाना खाएं।
(19)	बादे इ़शा दर्स (7 मिनट)	फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) / अमीरे एहले सुन्नत की दीगर कुतुबो रसाइल से दर्स दिया जाए। (तफ़्सील जानने के लिए रिसाला मस्जिद दर्स का मुत़ालआ़ कीजिए)
(20)	मदनी ह़ल्क़ा	मदनी ह़ल्क़े में पेहले दिन अमीरे एहले सुन्नत का बयान और दूसरे दिन फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा मेमोरी कार्ड से अपने ज़ाती मोबाइल पर सुनें अगर मेमोरी कार्ड मुयस्सर न हो तो अमीरे एहले सुन्नत के रसाइल से 20 मिनट दर्स दिया जाए। जिन ज़िम्मेदारान के बयानात मक्तबतुल मदीना पर आ चुके हैं इस वक़्त में उन के बयानात भी सुने जा सकते हैं।
(21)	दोहराई का ह़ल्क़ा	पूरे दिन में जो कुछ सीखा हो, अमीरे क़ाफ़िला ख़ुद ही इस की दोहराई करे और अगर कोई ब ख़ुशी

www.dawateislami.net

		बताना चाहे तो पूछा जाए और ज़रूरतन हौसला अफ़्ज़ाई भी की जाए।
(22)	सोने से पेहले और बेदार होने के बाद के मामूलात	इजतेमाई मुहासबा करने, सलातुत्तौबा पढ़ने, सूरए मुल्क सुनने के बाद वक़्फ़ए आराम हो और सुब्हे सादिक़ से (19 मिनट) पेहले बेदार हो कर नमाज़े तहज्जुद अदा की जाए। जो इस्लामी भाई क़रीब की मस्जिदों में दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत के लिए जाएंगे अज़ाने फ़ज्र से पेहले रवाना हो जाएं।
(23)	फ़ज्र के लिए जगाना	अज़ाने फ़ज्र के बाद फ़ज्र के लिए जगाया जाए।
(24)	बादे फ़ज्र एलान व बयान	7 मिनट से 12 मिनट, इन मौज़ूआत ज़िक्रुल्लाह, बिस्मिल्लाह शरीफ़, तिलावते क़ुरआन और दुरूद शरीफ़ के फ़ज़ाइल में से किसी एक पर बयान किया जाए।
(25)	तफ़्सीर सुनने सुनाने का हल्क़ा	अमीरे क़ाफ़िला फ़ज्र के बयान के बाद शुरका को हल्क़े की सूरत में बिठा कर 3 आयात की तिलावत मअ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान व तफ़्सीर सिरातुल जिनान / ख़ज़ाइनुल इरफ़ान / नूरुल इरफ़ान और फ़ैज़ाने सुन्नत से तरतीब वार चार सफ़्हात सुनाने के बाद शुरका के साथ मिल कर मन्ज़ूम शजरा शरीफ़ पढ़े।
(26)	इशराक़ो चाश्त	तुलूए शम्स के बाद इशराक़ो चाश्त का एहतेमाम किया जाए।
(27)	आख़री 10 सूरतें याद करने या इस्लामी भाइयों का मद्रसतुल मदीना का हल्क़ा	3 दिन के मदनी क़ाफ़िले में शुरका को आख़री 10 सूरतों में से कोई **एक सूरत** याद करवाई जाए, 12 दिन और 1 माह के मदनी क़ाफ़िले में इस्लामी भाइयों का मद्रसतुल मदीना लगाया जाए, जिस में मदनी क़ाइदा मुकम्मल पढ़ाया जाए।
(28)	बादे इशराक़ो चाश्त वक़्फ़ए आराम और नाश्ता	9 : 00 बजे नाश्ता और 9 : 30 को दोबारा मदनी हल्क़े का आग़ाज़ किया जाए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

आदाबे मस्जिद का बयान

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की बरकत से हमें दिन रात मस्जिद में गुज़ारने की सआ़दत ह़ासिल होती है जो कि यक़ीनन बहुत बड़ी सआ़दत है। ह़ज़रते सैयदना अबू दर्दा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : "मस्जिद हर मुत्तक़ी (यानी परहेज़गार) का घर है और जिस का घर मस्जिद हो अल्लाह पाक उस की मग़्फ़िरत, रेह़मत और सूए जन्नत ले जाने वाले पुल सिरात़ से ब ह़िफ़ाज़त गुज़ारने का ज़ामिन बन जाता है।"(1)

मस्जिद को घर बनाने से हरगिज़ येह मुराद नहीं कि वहां रेहाइश इख़्तियार कर ले बल्कि मुराद येह है कि इतनी कसरत से मस्जिद में इबादत में वक़्त गुज़ारे कि जैसे घर में वक़्त गुज़ारता है या मस्जिद में उस का दिल ऐसे लगे जैसे घर में लगता है।(2)

ह़ज़रते सैयदना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब कोई बन्दा ज़िक्रो नमाज़ के लिए मस्जिद को ठिकाना बना लेता है तो अल्लाह पाक उस से ऐसे रिज़ा का इज़्हार फ़रमाता है जैसे लोग अपने गुमशुदा शख़्स की अपने यहां आमद पर ख़ुश होते हैं।"(3)

जहां मस्जिद में रेहना इस क़दर अज्रो सवाब का बाइ़स है वहीं मस्जिद का अदबो एह़तेराम न करने पर सख़्त वईदें भी आई हैं : ह़ज़रते सैयदना ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से रिवायत है कि सरवरे काइनात, शहेनशाहे मौजूदात

1 ... مجمع الزوائد، کتاب الصلاۃ، باب لزوم المسجد، 2/134، حدیث: 2026۔

2 फ़ैज़ाने नमाज़, स. 235

3 ... ابن ماجہ، کتاب المساجد والجماعت، باب لزوم المساجد، 1/438، حدیث: 800۔

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "लोगों पर एक ज़माना ऐसा आएगा कि मसाजिद में दुन्या की बातें होंगी, तुम उन के पास मत बैठो कि उन को अल्लाह पाक से कुछ काम नहीं।"[1]

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मस्जिद अल्लाह का घर है, इसे आबाद करना ईमान की निशानी है। ۞ मस्जिद की बे अदबी करने वाले सख़्त मेहरूम और इस को वीरान करने वाले ब हुक्मे कुरआन ज़ालिम हैं। ۞ हर मुसलमान पर लाज़िम है कि वोह मस्जिद के आदाब से मुतअ़ल्लिक़ इल्म हासिल करे और मस्जिद की हाज़री के वक़्त मस्जिद के आदाब को मल्हूज़ रखे। मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करने वालों का उठना बैठना, रेहना सेहना, खाना पकाना सोना जागना चूंकि मस्जिद में होता है, इस लिए इन में से हर एक फ़र्द को मस्जिद के आदाब और इस की अश्या के इस्तेमाल का इल्म होना ज़रूरी है ताकि मस्जिद में क़ियाम की सूरत में इस के आदाब पेशे नज़र रहें।

आदाबे मस्जिद से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अहम मसाइल

मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करने वाले ख़ुश नसीब आ़शिक़ाने रसूल ! अब मस्जिद के आदाब से मुतअ़ल्लिक़ अहम मसाइल बयान किए जाएंगे ख़ूब तवज्जोह से सुनें, हो सके तो अपने पास लिख लें :

(1) फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "मस्जिद में हंसना क़ब्र में अन्धेरा (लाता) है।"[2] हां ज़रूरतन मुस्कुराने में ह़रज नहीं।

1 ... کشف الخفاء، 2/363، حدیث: 3246۔

2 ... جامع صغیر، فصل فی الحلی بال من هذا الحرف، ص322، حدیث: 5231۔

www.dawateislami.net

(2) आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नक़्ल फ़रमाते हैं : ''जो मस्जिद में दुन्या की बात करे, अल्लाह पाक उस के चालीस बरस के नेक आमाल बरबाद फ़रमा दे।''[1]

(3) मुंह में बदबू होने की ह़ालत में नमाज़ पढ़ना मकरूह है और जब तक मुंह साफ़ न कर ले ऐसी ह़ालत में मस्जिद में जाना भी ह़राम है कि इस से नमाज़ी को ईज़ा पहुंचेगी और नमाज़ी को ईज़ा पहुंचानी ह़राम है और अगर कोई नमाज़ी न भी हो तो बदबू से मलाइका को ईज़ा पहुंचती है।[2]

(4) मस्जिद में रीह़ ख़ारिज करना मन्अ़ है।

(5) मस्जिद में ऐसे बच्चों को (पेम्पर बांध कर भी) लाना गुनाह है जिन के बारे में ग़ालिब गुमान हो कि पेशाब वग़ैरा कर देंगे या शोर मचाएंगे।

(6) फ़र्शे मस्जिद पर गिरे पड़े बालों के गुच्छे और तिन्के वग़ैरा डालने के लिए हो सके तो एक शॉपर जेब में रख लीजिए। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''जो मस्जिद से तक्लीफ़ देने वाली चीज़ निकालेगा, अल्लाह पाक उस के लिए जन्नत में एक घर बनाएगा।''[3]

(7) पसीने और मुंह की राल वग़ैरा से मस्जिद के फ़र्श, दरी या कारपेट को बचाने के लिए मोतकिफ़ीन (मदनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर) अपनी ज़ाती चादर वग़ैरा पर ही सोएं, नीज़ इस्तिन्जा ख़ाने के लिए अस्ल मालिक की इजाज़त के बग़ैर किसी की चप्पल मत पेहनिए। (इस के सवाल से भी बचिए)

(8) मस्जिद में अगर ख़स (यानी मामूली सा तिन्का या ज़र्रा) भी फेंका जाए तो इस से मस्जिद को ऐसे तक्लीफ़ होती है जैसे इन्सान को अपनी आंख में मामूली ज़र्रा पड़ जाने से होती है।[4]

---

1 ...फ़तावा रज़विया, 16 / 311

2 ...फ़तावा रज़विया, 7 / 384

3 ...ابنِ ماجہ، کتاب المساجد والجماعات، باب تطہیر المساجد وتطییبھا، 1/419، حدیث: 757۔

4 ...जज़्बुल क़ुलूब, स. 222

www.dawateislami.net

(9) आज़ा ए वुज़ू से वुज़ू के पानी के क़तरे फ़र्शे मस्जिद पर गिराना, नाजाइज़ो गुनाह है।

(10) मस्जिद की दरियों के धागे और चटाइयों के तिन्के नोचने से परहेज़ कीजिए। (हर जगह ख़ुसूसन किसी के घर या कहीं मेह़फ़िल वग़ैरा में जाएं तो इस बात का ख़याल रखें।)

(11) मस्जिद में दौड़ना या ज़ोर से क़दम रखना, जिस से धमक (यानी आवाज़) पैदा हो मन्अ़ है।

(12) मस्जिद के फ़र्श पर कोई चीज़ ज़ोर से न फेंकी जाए और चादर या रूमाल से फ़र्श इस त़रह़ न झाड़ें कि आवाज़ पैदा हो।

(13) इतनी बुलन्द आवाज़ से तिलावत व नात (व एलान) वग़ैरा की तरकीब करना जिस से किसी नमाज़ी को तशवीश हो या सोते को ईज़ा पहुंचे, गुनाह है। (मस्जिद में नारे लगाने और माईक इस्तेमाल करने में सख़्त एह़तियात़ की ह़ाजत है)

(14) ऐसे मरीज़ जिन को यूरीन बेग लगा हो या क़त़रों का ऐसा मरज़ हो कि मुसलसल क़त़रे टपकने से मस्जिद या मस्जिद की दरियों वग़ैरा के आलूदा होने का ख़त़रा हो उन को मसाजिद में ठेहराना जाइज़ नहीं।

(15) मच्छर या तक्लीफ़ देने वाले दीगर जानवरों कीड़े मकोड़ों से बचने के लिए बदबूदार लोशन या क्वाइल वग़ैरा का इस्तेमाल जाइज़ नहीं। ख़ुश्बूदार या बग़ैर बू वाले लोशन का इस्तेमाल जाइज़ है अलबत्ता मस्जिद की दरियों को इन से आलूदा होने से बचाना होगा।

(16) मदनी क़ाफ़िलों में आ़म त़ौर पर खाना मदनी क़ाफ़िले वाले ख़ुद बनाते हैं, सालन बनाते वक़्त बाज़ चीज़ों की ना गवार बू या हीक मस्जिद तक भी जाती है जैसे मछली पकाने के लिए मस्जिद में लाना। अगर कोई ऐसी चीज़

www.dawateislami.net

बनानी है जिस की ना गवार बू हो उस को मस्जिद से इतना दूर पकाया जाए कि उस की वोह ना गवार बू मस्जिद में न जाए।

(17) बाज़ अवक़ात दस्तर ख़्वान और बरतनों की सहीह़ सफ़ाई न होने या गीला दस्तर ख़्वान लपेट कर सामान में रख देने से वोह बदबूदार हो जाता है, ऐसा दस्तर ख़्वान मस्जिद में बिछाना जाइज़ नहीं, येही हुक्म उन बरतनों का भी होगा जो बे धुले या सहीह़ न धुलने की वज्ह से बदबू छोड़ते हैं।

(18) मोतकिफ़ को मस्जिद में खाना खाना जाइज़ है जबकि ग़िज़ा या सालन वग़ैरा से मस्जिद आलूदा न हो। ख़ारिजे मस्जिद या इमाम व मोअज़्ज़िन वग़ैरा के हुजरों में अपने सिलेन्डर पर खाना पकाया जा सकता है बशर्ते येह कि मस्जिद के अन्दर धुवां या बू वग़ैरा दाख़िल न हो और मस्जिद की कोई चीज़ आलूदा न हो।

(19) वुज़ू का पानी मस्जिद में टपकाना गुनाह है, लेहाज़ा मस्जिद में दाख़िल होने से पेहले आज़ाए वुज़ू पर हाथ फेर कर बूंदें टपका दें या किसी कपड़े से आज़ा पूंछ लें ताकि मस्जिद में पानी के क़तरे न गिरें। येह हुक्म बिल उ़मूम तमाम मुसलमानों के लिए है और बिल ख़ुसूस मदनी क़ाफ़िले वालों को इस का ख़याल रखना ज़रूरी है क्यूंकि इन का अक्सर वक़्त मस्जिद में गुज़रता है।

(20) मस्जिद में नाख़ुन काटना, तेल लगाना या कन्घी करना, अगर इस त़ौर पर है कि काटे जाने वाले बाल या नाख़ुन मस्जिद में नहीं फैलते तो मस्जिद में काटने में भी ह़रज नहीं, अगर बाल या नाख़ुन फैलने का अन्देशा है तो इस की इजाज़त नहीं कि मस्जिद को हर त़रह़ की आलूदगी से पाक रखना ज़रूरी है।

(21) मदनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िरों का बर वक़्त उठने के लिए मस्जिद में होते हुवे, मोबाइल पर एलार्म लगाना जाइज़ है बशर्ते येह कि म्यूज़ीकल ट्यून न हो। याद रहे मोबाइल में म्यूज़ीकल ट्यून्ज़ का होना सिर्फ़ मस्जिद के साथ ख़ास

www.dawateislami.net

नहीं, उ़मूमी हुक्म भी इस के नाजाइज़ होने का है, मस्जिद की वज्ह से इस की बुराई और भी बढ़ जाती है।

(22) मस्जिद में सोते हुवे एह़तेलाम हो जाए तो फ़ौरन तयम्मुम कर के मस्जिद से बाहर निकल जाए और ग़ुस्ल करने के बाद मस्जिद में आए। अलबत्ता अगर फ़िना ए मस्जिद में ग़ुस्लख़ाना न हो और बाहर जाने में कोई सह़ीह़ ख़त़रा हो और मस्जिद में ठेहरने के सिवा कोई चारा न हो तो फ़ौरन बिला ताख़ीर तयम्मुम करे और अब मस्जिद में रेहना भी जाइज़ है मगर इस तयम्मुम से नमाज़ व तिलावत जाइज़ नहीं, इन के लिए दोबारा इन की निय्यत से तयम्मुम करना होगा, जैसे ही बाहर निकलना मुमकिन हो फ़ौरन निकल जाए।

(23) मसाजिद की जिन अश्या का जिस क़दर ज़ाती इस्तेमाल मारूफ़ है, मदनी क़ाफ़िले वालों को उस क़दर इस्तेमाल की इजाज़त होगी जैसे नमाज़ के अवक़ात के इ़लावा ज़ाती इस्तेमाल के लिए ब क़दरे ज़रूरत मस्जिद की लाइट और पंखों का इस्तेमाल, यूंही वुज़ू के इ़लावा पीने के लिए मस्जिद के पानी का इस्तेमाल जाइज़ है। ताहम इन तमाम चीज़ों के इस्तेमाल में और ज़्यादा एह़तियात़ की ज़रूरत है, नजात की राह इसी में है कि मदनी क़ाफ़िले के ठेहरने के बावुजूद भी पानी, बिजली व दीगर चीज़ों के इस्तेमाल की वज्ह से मस्जिद पर कोई इज़ाफ़ी बोझ न पड़े। अगर मामूल येह है कि नमाज़ के बाद रात में सिर्फ़ एक लाइट ज़रूरतन रौशन रेहती है तो एक ही लाइट रौशन रखी जाए, यूंही जब नमाज़ के बाद पंखे वग़ैरा बन्द हो जाएं, अगर पंखा चलाए बग़ैर गुज़ारा हो सकता है तो पंखा न चलाया जाए, चलाने की ज़रूरत पड़े तो कम से कम पर इक्तेफ़ा किया जाए।

(24) मदनी क़ाफ़िले वालों के बाज़ इस्तेमालात ऐसे हैं जो मस्जिद की अश्या (चीज़ों) को इस्तेमाल करने के एतेबार से मारूफ़ नहीं, ऐसे इस्तेमालात की शरअ़न इजाज़त नहीं होगी वोह इस्तेमालात येह हैं : ❁ मस्जिद की गेस पर खाना

www.dawateislami.net

पकाना । ❁ कपड़े इस्तरी करना । ❁ मस्जिद की दरियों को बतौ़रे कम्बल इस्तेमाल करना । ❁ ज़ाती लेप टॉप मस्जिद की बिजली से चार्ज करना । ❁ मस्जिद में सोते हुवे मस्जिद के एर कंडीशन्ज़ चलाना या सर्दियों की रात में हीटर चलाना । ❁ मदनी मराकिज़ के इलावा दीगर आम मसाजिद जहां क़ाफ़िलों की आमदो रफ़्त नहीं रेहती वहां मोबाइल फ़ोन चार्ज करना ।

(25) मदनी क़ाफ़िले वालों का एतेकाफ़ की निय्यत से मस्जिद या फ़िना ए मस्जिद में सोना जाइज़ है, अलबत्ता मस्जिद व फ़िना ए मस्जिद के किसी हिस्से को मदनी क़ाफ़िले वालों के लिए क़नात वग़ैरा लगा कर बिला वज्ह आम नमाज़ियों के लिए बन्द कर देना या इमाम व मोअज़्ज़िन के हुजरों में यूं बिराजमान हो जाना कि खुद इमाम व मोअज़्ज़िन के लिए उस कमरे का दाख़ला बन्द हो जाए ऐसा करना जाइज़ नहीं, अगर सामान वग़ैरा की हिफ़ाज़त के लिए आरज़ी तौर पर कोई ऐसा इक़्दाम किया गया (यानी क़नात वग़ैरा लगा कर मस्जिद या फ़िना ए मस्जिद के किसी हिस्से को बन्द कर दिया गया) जिस से न नमाज़ियों को तक्लीफ़ हो और न ही नमाज़ियों पर मस्जिद तंग हो तो ऐसा करना जाइज़ है ।

(26) कपड़े नापाक हो गए इस के इलावा पेहनने के लिए कोई दूसरे कपड़े नहीं, या कपड़े तो हैं लेकिन उन नापाक कपड़ों को अपने बेग वग़ैरा में रखना है और बेग मस्जिद में है तो इन सूरतों में जितने हिस्से पर नापाकी लगी है उतने हिस्से की नापाकी दूर करने के लिए मस्जिद का पानी इस्तेमाल किया जा सकता है, इस के इलावा मैले कपड़ों को मस्जिद के पानी से धोने की इजाज़त नहीं ।

(27) गुस्ल फ़र्ज़ होने की सूरत में मस्जिद के पानी से गुस्ल की इजाज़त है, यूंही जुम्आ व इ़दैन के गुस्ल की भी इजाज़त है, अलबत्ता महज़ ठन्डक हासिल करने या मैल वग़ैरा दूर करने के लिए गुस्ल न किया जाए, जहां पानी की क़िल्लत हो या पानी ख़रीद कर इस्तेमाल किया जाता हो वहां फ़र्ज़ गुस्ल के इलावा दूसरे किसी क़िस्म के गुस्ल की इजाज़त नहीं होगी ।

www.dawateislami.net

(28) मस्जिद की चीज़ों के इस्तेमाल में मोहतात रेहना चाहिए। उन को किसी भी त़रह़ का कोई नुक़्सान नहीं होना चाहिए। अगर किसी फ़र्द से मस्जिद की किसी चीज़ को कोई नुक़्सान पहुंचाया उस ने मस्जिद की चटाई के तिन्के निकाले या दरियों और कारपेट के धागे वग़ैरा नोचे ऐसा करना सख़्त ना पसन्दीदा अ़मल है और बाज़ सूरतों में तावान का हुक्म भी आएगा।

मदनी क़ाफ़िले के अख़राजात (Expenses) की इजाज़त

मस्जिद के आदाब बयान करने के बाद अमीरे क़ाफ़िला इन अल्फ़ाज़ के साथ एक एक से अख़राजात की रक़म इस त़रह़ ख़र्च करने की इजाज़त ह़ासिल करे :

"मदनी क़ाफ़िले में बाज़ अवक़ात ऐसे इस्लामी भाई भी होते हैं जो रक़म कम देते हैं या नहीं दे पाते। कभी ऐसों की तादाद कम, कभी ज़्यादा भी होती है तो अगर ऐसे इस्लामी भाई हमारे मदनी क़ाफ़िले में हों तो आप उन पर रक़म ख़र्च करने की मुकम्मल इजाज़त दे दें अगर्चे आप खाने वग़ैरा में शरीक न हों नीज़ मौक़अ़ ब मौक़अ़ इस्लामी भाई मदनी क़ाफ़िले वालों के पास आते हैं या नमाज़ी व इमाम साह़ब वग़ैरा को खाने में शरीक किया जाता है ग़रज़ हर क़िस्म के अमीरो ग़रीब मेहमान को नीज़ बचा हुवा सामान दूसरे मदनी क़ाफ़िले वालों को इस्तेमाल करने की इजाज़त भी दे दीजिए।"

नोट : अगर मदनी क़ाफ़िले के अख़राजात किसी और इस्लामी भाई ने उठाए हैं तो उन ही से इजाज़त लेना होगी। जब भी किसी मुख़य्यर (ख़ैर ख़्वाही करने वाले) इस्लामी भाई से मदनी क़ाफ़िले के अख़राजात की इजाज़त लें तो इन अल्फ़ाज़ से लें : "आप हमें इजाज़त दे दें कि मदनी क़ाफ़िले के किसी शरीक का मुकम्मल ख़र्चा या कमी वग़ैरा आप की रक़म से पूरी करें नीज़ मौक़अ़ ब मौक़अ़ इस्लामी भाई मदनी क़ाफ़िले वालों के पास आते हैं या नमाज़ी व इमाम साह़ब वग़ैरा को खाने में शरीक किया जाता है ग़रज़ हर क़िस्म के अमीरो ग़रीब मेहमान की मेहमानी आप की रक़म से की जा सके।"

www.dawateislami.net

मदनी क़ाफ़िले के अख़राजात के मसाइल

(1) शुरका ए मदनी क़ाफ़िला अख़राजात के लिए जो रक़म देते हैं वोह उन की ज़ाती हो या मदनी मर्कज़ की त़रफ़ से, येह रक़म अमीरे क़ाफ़िला के पास जम्अ़ होने के बाद बत़ौरे अमानत होती है। अमीरे क़ाफ़िला को सफ़र और खाने पीने के मारूफ़ अख़राजात में ख़र्च करने की इजाज़त होती है। ग़ैर मारूफ़ अख़राजात मसलन मदनी क़ाफ़िले वालों की त़रफ़ से लोगों को तह़ाइफ़ देने के लिए इत्र, तस्बीह़ व टोपी वग़ैरा ख़रीदने की इजाज़त नहीं।

(2) मदनी क़ाफ़िले के अख़राजात के लिए अगर तमाम की तमाम रक़म शुरका ए क़ाफ़िला की ज़ाती हो तो ग़ैर मारूफ़ अख़राजात (मसलन किसी की ख़ुसूसी दावत या मदनी क़ाफ़िले वालों की त़रफ़ से लोगों के लिए तह़ाइफ़ वग़ैरा ख़रीदने) की इजाज़त इस सूरत में होगी कि सब के सब इस पर रिज़ामन्द हों, अगर कुछ राज़ी हैं और कुछ नहीं तो येह ज़ाइद अख़राजात इजाज़त देने वालों के हिस्सों पर पड़ेंगे, मन्अ़ करने वालों से वुसूल नहीं किए जाएंगे।

(3) मदनी क़ाफ़िले के अख़राजात अगर ज़ाती रक़म से नहीं बल्कि मदनी मर्कज़ की त़रफ़ से हैं या किसी ने मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करने वालों के लिए रक़म दी तो इस सूरत में शुरका ए मदनी क़ाफ़िला की इजाज़त के साथ भी ग़ैर मारूफ़ अख़राजात करना जाइज़ नहीं कि जिस ने रक़म दी है उस की त़रफ़ से सराह़तन या दलालतन इस त़रह़ के अख़राजात करने की इजाज़त उ़मूमन नहीं होती।

(4) अगर कुछ शुरका की रक़म ज़ाती और कुछ की मदनी मर्कज़ की त़रफ़ से है तो इस सूरत में भी सिर्फ़ मारूफ़ अख़राजात की इजाज़त होगी, इस सूरत में मदनी क़ाफ़िले के इ़लावा दीगर अफ़राद को खाने में शरीक करना भी जाइज़ नहीं होगा, इसी त़रह़ अगर शुरका में से किसी ने अख़राजात नहीं दिए तो उन का खाना भी महले नज़र होगा, ऐसे अफ़राद को शामिल करने की दो सूरतें

www.dawateislami.net

हैं : पेहली येह कि ज़ाती रक़म वाले उन का ख़र्च बरदाश्त करें, दूसरी येह कि मदनी मर्कज़ से उन के अख़राजात की तरकीब कर ली जाए।

(5) ऐसे शुरका जिन के अख़राजात मदनी मर्कज़ की त़रफ़ से दिए जाते हैं उन का मदनी क़ाफ़िले के अख़राजात ले कर मदनी क़ाफ़िले में सफ़र न करना या तमाम रक़म का यकबारगी ख़र्च कर के घरों को चले जाना हरगिज़ हरगिज़ जाइज़ नहीं, यूंही मदनी मर्कज़ से मिलने वाली रक़म आपस में तक़्सीम कर के इधर उधर निकल जाना, मदनी क़ाफ़िले के जदवल पर अ़मल न करना, मदनी क़ाफ़िले के अय्याम घूमने फिरने में गुज़ार देना जाइज़ नहीं। येह तमाम उमूर झूट, धोका देही और ख़ियानत के ज़ुमरे में शामिल हैं जो कि ना जाइज़ो ह़राम है। नीज़ इस में चन्दे का ग़लत़ इस्तेमाल भी है इस लिए दीगर गुनाहों से तौबा करने के साथ साथ चन्दे की रक़म ज़ाएअ़ करने की वज्ह से इस रक़म का तावान भी देना होगा।

(6) मदनी क़ाफ़िले में अगर कोई बीमार या किसी ह़ादसे का शिकार हो गया तो उस के इ़लाज वग़ैरा के अख़राजात, दीगर शुरका की इजाज़त (जबकि शुरका की रक़म ज़ाती हो) के बग़ैर इस्तेमाल करना जाइज़ नहीं और अगर अख़राजात ज़ाती नहीं बल्कि मदनी मर्कज़ से हैं तो मदनी मर्कज़ से इजाज़त लेना ज़रूरी है। याद रहे कि येह हुक्म मस्अलए शरई के एतेबार से है। अख़्लाक़ व मुरव्वत का तक़ाज़ा येह है कि तमाम शुरका को चाहिए कि वोह बीमार या ह़ादसे के शिकार अपने इस्लामी भाई की ज़ाती ह़ैसियत से भरपूर त़रीक़े से मदद करें। मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करने का बुन्यादी मक़्सद ही मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही व भलाई है तो जो अपना हम सफ़र है उस की ख़ैर ख़्वाही आ़म लोगों से बढ़ कर होनी चाहिए।

(7) मदनी क़ाफ़िले के इख़्तेताम पर मुश्तरका अख़राजात में से कुछ रक़म या सामान बच गया तो इस में तमाम रक़म देने वाले शरीक हैं। सब की रक़म बराबर थी तो बराबर के और अगर कम व ज़्यादा थी तो ब एतेबारे फ़ीसद इसी

www.dawateislami.net

तनासुब से शरीक होंगे। अमीरे क़ाफ़िला या किसी भी शरीक को दूसरे शुरका की इजाज़त के बग़ैर इस को सदक़ा करने या किसी को देने की इजाज़त नहीं। जिन अफ़राद की रक़म मदनी मर्कज़ की त़रफ़ से दी गई उन का बचा हुवा हिस्सा उन की इजाज़त से भी सदक़ा करना जाइज़ नहीं बल्कि उन पर लाज़िम है कि बक़िय्या रक़म वापस ले कर मदनी मर्कज़ के अ़त़ियात में जम्अ़ कराएं।

शरई मसाफ़त के बारे में मालूमात

अख़राजात जम्अ़ करने के बाद मदनी क़ाफ़िला अगर शेहर से बाहर जा रहा है तो अमीरे क़ाफ़िला को चाहिए कि शरई मसाफ़त के बारे में मुकम्मल मालूमात ह़ासिल कर ले और तमाम शुरका को बता दे कि वोह मुसाफ़िर हैं या मुक़ीम और अगर मुसाफ़िर हैं तो कब कब और कौन कौन सी नमाज़ में उन को क़स्र करना है। अमीरे क़ाफ़िला की आसानी के लिए मुसाफ़िर के चन्द अह़काम यहां बयान किए जा रहे हैं अमीरे क़ाफ़िला अच्छी त़रह़ इस का मुत़ालआ़ कर ले। (सफ़र के तफ़्सीली अह़काम के लिए मुसाफ़िर की नमाज़ का मुत़ालआ़ फ़रमाएं) मदनी क़ाफ़िले के वोह मुसाफ़िर जो 92 किलो मीटर या इस से ज़्यादा मसाफ़त का सफ़र करें (इस सफ़र की इब्तेदा चाहे अपने घर से हो या मक़ामे इक़ामत से हो) उन पर सफ़र में नमाज़ व दीगर पेश आने वाले ज़रूरी मसाइल का सीखना ज़रूरी है। बिल ख़ुसूस येह कि "कोई शख़्स मुसाफ़िर कब बनता है ? क़स्र कहां से शुरूअ़ होती और कब ख़त्म होती है ? किन नमाज़ों में क़स्र करेगा किन में नहीं ? सवारी पर फ़र्ज़ व वाजिब अदा कर लेने से उन की अदाएगी दुरुस्त होती है या नहीं ?"

(1) शरअ़न मुसाफ़िर वोह शख़्स है जो साढ़े 57 मील (तक़रीबन 92 किलो मीटर) के फ़ासिले तक जाने के इरादे से अपने मक़ामे इक़ामत मसलन शेहर या गाऊं से बाहर हो गया हो और जो शरई मुसाफ़िर है उस पर चार रक्अ़त फ़र्ज़ नमाज़ में क़स्र करना यानी चार रक्अ़त की जगह दो रक्अ़त पढ़ना वाजिब है जबकि वोह इनफ़िरादी त़ौर पर नमाज़ अदा कर रहा हो अलबत्ता अगर किसी

www.dawateislami.net

सहीहुल अ़क़ीदा मुक़ीम इमाम के पीछे जमाअ़त से नमाज़ अदा कर रहा हो तो अब पूरी चार रक्अ़त पढ़ेगा।

(2) इनफ़िरादी नमाज़ में क़स्र करने का हुक्म उस वक़्त से होगा जब वोह अपनी बस्ती की आबादी से बाहर आ जाए (यानी शेहर में है तो शेहर से, गाऊं में है तो गाऊं से और शेहर वाले के लिए येह भी ज़रूरी है कि शेहर के आस पास जो आबादी शेहर से मुत्तसिल है उस से भी बाहर आ जाए) और उस वक़्त तक रहेगा जब तक वोह अपनी बस्ती में वापस न पहुंच जाए या किसी आबादी में पूरे 15 दिन ठेहरने की निय्यत न कर ले और जब वोह अपनी बस्ती में वापस पहुंच जाए या किसी आबादी में पूरे 15 दिन ठेहरने की निय्यत कर ले तो अब क़स्र नहीं कर सकता, बल्कि अब पूरी नमाज़ यानी चार रक्अ़त पढ़ेगा।

(3) अगर कोई शख़्स 92 किलो मीटर के इरादे से चला लेकिन इस से पेहले ही (यानी नब्बे किलो मीटर का सफ़र तै़ करने से पेहले रास्ते में) उस का वापसी का इरादा हो गया और उस ने आगे सफ़र करना ख़त्म कर दिया तो अब वोह मुसाफ़िर नहीं रहेगा लेहाज़ा इनफ़िरादी नमाज़ में क़स्र नहीं करेगा बल्कि पूरी अदा करेगा।

(4) क़स्र में शुरका की अपनी निय्यत का एतेबार होगा, मजलिस या अमीरे क़ाफ़िला की निय्यत का एतेबार नहीं होगा।

(5) बाज़ अवक़ात इमाम न होने की सूरत में लोग मदनी क़ाफ़िले वालों को इमामत का केहते हैं, शुरका ए क़ाफ़िला की अक्सरिय्यत बिल उ़मूम मुसाफ़िर होती है। मस्अला मालूम न होने की वज्ह से बाज़ अवक़ात इमामत करने वाला दो रक्अ़त की बजाए चार रक्अ़तें पढ़ा देता है यूं मुक़ीम मुक़्तदियों के फ़र्ज़ जाएअ़ हो जाते हैं।

www.dawateislami.net

बिलफ़र्ज़ अगर इमाम को मस्अला मालूम हो और वोह दो रक्अ़त पर सलाम फेर दे तो मुक़्तदी ला इ़ल्मी की वज्ह से परेशान हो जाते हैं बाज़ नमाज़ ही फ़ासिद कर देते हैं। लेहाज़ा बेहतर येह है कि मदनी क़ाफ़िले वाले चार रक्अ़त वाली नमाज़ की इमामत न कराएं। हां, अगर कोई एहल इमाम मुयस्सर नहीं तो नमाज़ से पेहले लोगों को अच्छी त़रह़ मस्अला समझा दिया जाए (कि मैं मुसाफ़िर हूं, दो रक्अ़त के बाद सलाम फेर दूंगा, मुक़ीम मुक़्तदियों ने सलाम नहीं फेरना बल्कि खड़े हो कर अपनी बक़िय्या दो रक्अ़तें इस त़रह़ पूरी करें कि ह़ालते क़ियाम में कुछ न पढ़ें बल्कि जितनी देर में सूरए फ़ातेह़ा पढ़ी जाती है उतनी देर ख़ामोश खड़े रहें) और दो रक्अ़त पर सलाम फेरने के बाद भी इमाम ज़ोर से कहे कि मैं मुसाफ़िर हूं आप लोग नमाज़ मुकम्मल कर लें।

(6) चलती बस और ट्रेन में बिला उ़ज़्रे शरई फ़र्ज़, वाजिब और सुन्नते फ़ज्र नहीं पढ़ सकते और अगर उ़ज़्र की वज्ह से पढ़नी पड़े और ऐसी सवारी में हैं जिस में क़िब्ला रू होना मुमकिन है तो क़िब्ला रुख़ हो कर नमाज़ पढ़ें वरना जिस त़रह़ भी मुमकिन हो पढ़ लें मगर बाद में फिर पढ़नी होगी। (7) जिस पर शरअ़न क़स्र थी उस ने पूरी पढ़ ली उस पर नमाज़ का फेरना वाजिब है।

सामाने मदनी क़ाफ़िला

अब अमीरे क़ाफ़िला रवानगी से पेहले सामाने मदनी क़ाफ़िला ख़रीदे अगर पेहले से सामाने मदनी क़ाफ़िला मौजूद है तो सामान को अच्छी त़रह़ चेक कर ले कि सामान या बेग से बदबू तो नहीं आ रही (और) अगर बदबू हो तो मस्जिद में ले कर जाना दुरुस्त नहीं। 3 दिन और 12 दिन के मदनी क़ाफ़िले में डिस्पोज़ेबल सामान इस्तेमाल किया जाए।

www.dawateislami.net

सामाने मदनी क़ाफ़िला की तफ़्सील

नम्बर शुमार	सामान की तफ़्सील	सामान की तादाद
1	दस्तर ख़्वान	7 अ़दद
2	प्लेटें	20 अ़दद
3	चाए के कप	20 अ़दद
4	पानी के गिलास	4 अ़दद
5	पानी की बोतल	2 अ़दद
6	सामान रखने का बेग	1 अ़दद

नोट : शोबा मदनी क़ाफ़िले की त़रफ़ से सामाने मदनी क़ाफ़िला के बग़ैर मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करने की इजाज़त नहीं है।

मस्जिद पहुंचने के बाद एलान

मत़लूबा मस्जिद पहुंच कर मस्जिद में दाख़िल होने से पेहले अमीरे क़ाफ़िला येह एलान करे :

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मस्जिद में दाख़िल होने की निय्यतें कर लेते हैं : (1) मस्जिद की ज़ियारत करूंगा। (2) मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त सीधे और बाहर निकलते वक़्त उल्टे पाउं से पहेल कर के इत्तेबाए़ सुन्नत करूंगा। (3) दाख़िल होने और बाहर निकलने की मस्नून दुआ़एं (अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ) पढ़ूंगा। (4) एतेकाफ़ करूंगा (इस एतेकाफ़ के लिए रोज़ा शर्त़ नहीं और येह एक लम्हे का भी हो सकता है।) (5) मुसलमानों से सलाम व मुसाफ़हा करूंगा, اَمر بِالمَعرُوف وَ نَهی عَنِ المُنکَر (यानी नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना) करूंगा। (6) नमाज़े बा जमाअ़त में मुसलमानों के क़ुर्ब की बरकतें ह़ासिल करूंगा।

www.dawateislami.net

नोट : मस्जिद में दाख़िल होने से पेहले सामान झाड़ लें और इस अन्दाज़ से रखें कि नमाज़ पढ़ने वालों को दुश्वारी न हो, नमाज़ पढ़ने की जगह न घेरे और इस से सफ़ क़त्अ़ न हो और न ही नमाज़ियों को तशवीश हो।

इस्तिन्जा वुज़ू से फ़राग़त

सामान रखने के बाद तमाम शुरका इस्तिन्जा वुज़ू वग़ैरा से फ़ारिग़ हो जाएं, जब भी इस्तिन्जा वुज़ू से फ़राग़त का मौक़अ़ हो तो अमीरे क़ाफ़िला इस त़रह़ एलान करे :

दिन का अक्सर हिस्सा बा वुज़ू रेहने पर अ़मल करते हुवे वुज़ू करें मगर वुज़ू करने के बाद पाउं वुज़ू ख़ाने ही पर अच्छी त़रह़ ख़ुश्क कर लीजिए। गीले पाउं ले कर चलने से मस्जिद का फ़र्श गन्दा और दरियां मैली और बदनुमा हो जाती हैं। वुज़ू करने के बाद आज़ाए वुज़ू से एक भी छींट पानी फ़र्शे मस्जिद पर न गिरे।[1] (याद रखिए ! आज़ाए वुज़ू से वुज़ू के पानी के क़त़रे फ़र्शे मस्जिद पर गिराना ना जाइज़ है।)

बैतुल ख़ला जाने की नियतें

(1) بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ पढ़ कर, सर ढांप कर अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ मस्नून दुआ पढ़ कर दाख़िल होने में इत्तेबाए़ सुन्नत में उल्टे पाउं से पहेल करूंगा। (2) सित्र खुला होने की सूरत में क़िब्ले की त़रफ़ मुंह और पीठ करने से बचूंगा। (3) निकलते वक़्त इत्तेबाए़ सुन्नत में पेहले सीधा पाउं बाहर रखूंगा। (4) बाहर निकल आने के बाद अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ मस्नून दुआ पढ़ूंगा। (5) अ़वामी या मस्जिद के इस्तिन्जा ख़ाने पर अगर क़ित़ार हुई तो सब्र के साथ अपनी बारी का इन्तेज़ार करूंगा। (6) अगर किसी को ज़्यादा ह़ाजत हुई और मुझे सख़्त मजबूरी या नमाज़ फ़ौत होने का अन्देशा न हुवा तो

1 ...फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब नेकी की दावत, 2/418

www.dawateislami.net

ईसार करूंगा। (7) बार बार दरवाज़ा बजा कर अन्दर वाले को ईज़ा नहीं दूंगा। (8) अगर किसी ने बार बार मेरा दरवाज़ा बजाया तो सब्र करूंगा। (9) दरो दीवार पर कुछ नहीं लिखूंगा न वहां लिखा हुवा पढ़ूंगा।

वुज़ू की निय्यतें

(1) हुक्मे इलाही बजा लाते हुवे वुज़ू करता हूं। (2) بِسْمِ اللّٰهِ وَ الْحَمْدُ لِلّٰه कहूंगा। (3) इत्तेबाए सुन्नत में मिस्वाक करूंगा। (4) और इस के ज़रीए ज़िक्रो दुरूद के लिए मुंह की पाकीज़गी हासिल करूंगा। (5) मकरूहात और पानी के इसराफ़ से बचूंगा। (6) फ़राइज़, सुनन और मुस्तहबात का ख़याल रखूंगा। (7) हर उज़्व धोने के दौरान दुरूद शरीफ़ पढ़ूंगा। (8) फ़ारिग़ हो कर येह दुआ पढ़ूंगा اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِیْ مِنَ التَّوَّابِیْنَ وَاجْعَلْنِیْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِیْنَ यानी ऐ अल्लाह पाक! मुझे कसरत से तौबा करने वालों में बना दे और मुझे पाकीज़ा लोगों में शामिल कर दे।" (9) आस्मान की तरफ़ देख कर कलेमए शहादत और सूरतुल क़द्र पढ़ूंगा। (10) आख़िर में बातिनी वुज़ू के लिए गुनाहों से तौबा करूंगा।[1]

मदनी क़ाफ़िले का तफ़्सीली जदवल

मदनी क़ाफ़िले में जदवल की इब्तेदा मदनी मश्वरे से होती है

जदवल और एलानात की दोहराई, मदनी मश्वरे का हल्क़ा : (9:30) ता (9:56)

मस्जिद में पहुंच कर बा वुज़ू रेहने की निय्यत के साथ वुज़ू फ़रमा कर मकरूह वक़्त न हो तो तहिय्यतुल वुज़ू और तहिय्यतुल मस्जिद अदा कीजिए (याद रहे कि तहिय्यतुल मस्जिद दिन में एक ही मरतबा अदा करनी होती है) अगर थकन हो तो आराम ले कर, वरना अब (5 मिनट) तिलावत व नात से जदवल का आग़ाज़ कीजिए।

1 ...सवाब बढ़ाने के नुस्ख़ें, स. 6

www.dawateislami.net

तिलावत करने की निय्यतें

तिलावत से पेहले अमीरे क़ाफ़िला इस त़रह़ तरग़ीब दिलाए : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अब तिलावत होगी, उसे कान लगा के सुनें और इस दौरान न बात चीत करें न इशारे । तिलावत सुनने की निय्यतें भी कर लें कि ۞ रिज़ा ए इलाही के लिए हुक्मे कुरआनी पर अ़मल करते हुवे कान लगा कर ख़ूब तवज्जोह के साथ चुप चाप तिलावत सुनूंगा । ۞ अपने इख़्तियार में हुवा और दिल में इख़्लास पाया तो हुक्मे ह़दीस पर अ़मल करते हुवे अश्कबारी करते हुवे और येह न हो सका तो रोने वालों जैसी सूरत बनाए तिलावत सुनूंगा ।[1]

अहम मस्अला : इ़शा के दर्स के बाद सूरतुल मुल्क की तिलावत होती है, इसी त़रह़ ह़ल्क़ों का आग़ाज़ भी तिलावते कलामे पाक से होता है जो लोग सुनने के लिए बैठे हैं उन पर कुरआने मजीद का सुनना फ़र्ज़ है, इस दौरान आपस में बात चीत वग़ैरा करना जाइज़ नहीं । नीज़ सूरए मुल्क या जदवल के आग़ाज़ में तिलावत वोही करे जो दुरुस्त मख़ारिज के साथ कुरआने पाक पढ़ सकता हो ब सूरते दीगर इमाम व मोअज़्ज़िन साह़िबान में से किसी को तिलावत की गुज़ारिश की जाए ।

नात शरीफ़ पढ़ने सुनने की निय्यतें

तिलावत के बाद नात शरीफ़ पढ़ने सुनने से पेहले अमीरे क़ाफ़िला इस त़रह़ निय्यतें करवाए : ۞ अल्लाह पाक व रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा के लिए बा वुज़ू, ۞ आंखें बन्द किए, ۞ सर झुकाए, ۞ गुम्बदे ख़ज़रा बल्कि मकीने गुम्बदे ख़ज़रा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का तसव्वुर बांध कर नात शरीफ़ पढ़ूं और सुनूंगा । ۞ रोना आया और रियाकारी का ख़दशा मेह़सूस हुवा तो रोना बन्द करने के बजाए रियाकारी से बचने की कोशिश करूंगा । ۞ किसी को रोता तड़पता देख कर बदगुमानी नहीं करूंगा ।[2] इस के बाद अमीरे क़ाफ़िला मदनी मश्वरा शुरूअ़

1 ...सवाब बढ़ाने के नुस्ख़े, स. 25
2 ...सवाब बढ़ाने के नुस्ख़े, स. 26

www.dawateislami.net

करे, मुख़्तलिफ़ उमूर के बारे में मदनी मश्वरा करे। (रोज़ाना सुब्ह साढ़े नव बजे मदनी मश्वरे से पेहले (5 मिनट) तिलावत व नात का इसी त़रह़ एहतेमाम फ़रमाइए।)

मदनी मश्वरा करने और देने की निय्यतें

नात शरीफ़ सुनने के बाद अमीरे क़ाफ़िला इस त़रह़ निय्यत करे। ۞ मदनी मश्वरा करने की सुन्नत पर अ़मल और अच्छा मदनी मश्वरा देने वाले की ह़ौसला अफ़्ज़ाई करूंगा। ۞ नाक़िस मदनी मश्वरा देने वाले की दिल शिकनी से बचूंगा। ۞ किसी के मश्वरे पर अ़मल के नतीजे में नुक़्सान उठाना पड़ा तो उसे उस नुक़्सान का ज़िम्मेदार नहीं ठेहराऊंगा। ۞ जब कोई मुझ से मदनी मश्वरा मांगेगा तो दियानत दारी के साथ दुरुस्त मदनी मश्वरा दूंगा। ۞ अपने दिए हुवे मश्वरे पर ही अ़मल का इसरार और अ़मल न किया तो नाराज़गी का इज़्हार नहीं करूंगा।[1]

मदनी मश्वरे को तीन ह़िस्सों में तक़्सीम किया गया है :

(1) जदवल की दोहराई (2) एलानात की दोहराई

(3) दर्सो बयान वग़ैरा की ज़िम्मेदारियां मदनी मश्वरे के ज़रीए तक़्सीम करना।

अब जदवल की दोहराई अमीरे क़ाफ़िला ख़ुद ही करे :

(1) जदवल की दोहराई

3 दिन के मदनी क़ाफ़िले में अमीरे क़ाफ़िला जदवल की दोहराई इस त़रह़ करे कि तमाम शुरका को जदवल समझ में आ जाए, न बहुत तेज़ी के साथ दोहराए न ही इतना आहिस्ता कि शुरका बोर हो जाएं। 3 दिन के मदनी क़ाफ़िले में जदवल की दोहराई सिर्फ़ अमीरे क़ाफ़िला ही करे। 12 दिन और एक माह के मदनी क़ाफ़िले में दीगर मज़बूत़ इस्लामी भाइयों से भी दोहराई करवाई जा सकती है। अगर शुरका

1 ...सवाब बढ़ाने के नुस्ख़े, स. 34

www.dawateislami.net

में से कोई दोहराना चाहे तो उसे इजाज़त दें लेकिन किसी से ज़बरदस्ती दोहराई न करवाएं, अगर शुरका में से कोई दोहराए तो अमीरे क़ाफ़िला उसे दरमियान में न टोके। जदवल की दोहराई इस त़रह़ होगी।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मदनी मश्वरे का ह़ल्क़ा जारी है, اِنْ شَآءَاللّٰہ साढ़े 12 बजे तक सीखने सिखाने का अ़मल जारी रहेगा। इस के बाद सुन्नत के मुत़ाबिक़ बैठ कर खाना खाया जाएगा, (माहे रमज़ानुल मुबारक में इस जगह खाने का तज़केरा न करें) इस के बाद निगाहें झुकाए, मुसलमानों को सलाम करते हुवे किसी बा रौनक़ मक़ाम पर हुक़ूक़े आ़म्मा का ख़याल रखते हुवे चौक दर्स दिया जाएगा।

नमाज़े ज़ोहर के लिए जल्दी से तैयार हो कर मस्जिद की पेहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त नमाज़े ज़ोहर अदा की जाएगी। नमाज़े ज़ोहर के बाद दर्स देने या सुनने की सआ़दत ह़ासिल की जाएगी। फिर اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सीखने सिखाने का अ़मल जारी रहेगा, इस के बाद कुछ देर वक़्फ़ए आराम होगा, फिर अज़ाने अ़स्र से पेहले तैयार हो कर मस्जिद की पेहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त नमाज़े अ़स्र अदा की जाएगी। नमाज़ के बाद एक इस्लामी भाई एलान फ़रमाएंगे फिर اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बयान होगा। बयान के बाद अ़लाक़ाई दौरा (मस्जिद से बाहर जा कर लोगों को नेकी की दावत देने) की सआ़दत ह़ासिल करने के लिए बाहर जाएंगे। इस दौरान मस्जिद में भी दर्स का सिलसिला जारी रहेगा, अज़ाने मग़रिब से तक़रीबन दस मिनट पेहले दोबारा मस्जिद में आ जाएंगे और इस्तिन्जा वुज़ू से फ़ारिग़ हो कर अज़ानो इक़ामत के वक़्त ख़ामोश रेह कर जवाब देंगे और तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त नमाज़े मग़रिब अदा करेंगे। (जुमेरात के दिन मग़रिब ता इशराक़ चाश्त मदनी क़ाफ़िले का शिड्यूल भी ह़फ़्तावार इजतेमाअ़ में शिर्कत और रात एतेकाफ़ का होगा) नमाज़ के बाद एक इस्लामी भाई एलान करेंगे फिर اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बयान होगा। बयान के बाद (12 मिनट) इनफ़िरादी

www.dawateislami.net

कोशिश करने की सआ़दत ह़ासिल की जाएगी, इस के बाद सुन्नत के मुत़ाबिक़ बैठ कर खाना खाया जाएगा, फिर अज़ाने इ़शा से पेहले नमाज़ की तैयारी कर के मस्जिद की पेहली सफ़ में सुन्नते क़ब्लिया, मअ़ तक्बीरे ऊला नमाज़े इ़शा बा जमाअ़त अदा की जाएगी, नमाज़ के बाद दर्स होगा, दर्स के बाद सूरए मुल्क की तिलावत होगी, फिर कुछ इस्लामी भाई (12 मिनट) के लिए बाहर जा कर इस्लामी भाइयों पर इनफ़िरादी कोशिश करने की सआ़दत ह़ासिल करेंगे और फिर اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मदनी ह़ल्क़ा होगा । इस के बाद दोहराई का ह़ल्क़ा होगा फिर सलातुत्तौबा के नवाफ़िल अदा किए जाएंगे, इस के बाद तमाम इस्लामी भाई जाइज़ा करने की सआ़दत पा कर सुन्नत बॉक्स सिरहाने रख कर सोते वक़्त के अवराद पढ़ कर सो जाएंगे ।

वक़्ते मुनासिब पर ख़्वाहिश मन्द इस्लामी भाइयों को तहज्जुद की नमाज़ के लिए जगाया जाएगा, ख़ुश नसीब इस्लामी भाई तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने की सआ़दत ह़ासिल करेंगे फिर ज़िक्रो दुरूद में मश्ग़ूल हो जाएंगे । अज़ाने फ़ज्र के बाद तमाम इस्लामी भाई फ़ज्र के लिए जगाने की सआ़दत पाने के लिए मस्जिद से बाहर तशरीफ़ ले जाएंगे । जमाअ़ते फ़ज्र से तक़रीबन दस मिनट पेहले वापस आ कर सुन्नते क़ब्लिया अदा करने के बाद मस्जिद की पेहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ नमाज़े फ़ज्र बा जमाअ़त अदा करेंगे, नमाज़ के बाद एक इस्लामी भाई एलान फ़रमाएंगे फिर बयान होगा, इस के बाद اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सीखने सिखाने का अ़मल जारी रहेगा । फिर तमाम इस्लामी भाई इशराक़ो चाश्त के नवाफ़िल अदा करने की सआ़दत ह़ासिल करेंगे । फिर वक़्फ़ए आराम होगा । 8 : 45 पर तमाम इस्लामी भाइयों को नींद से बेदार किया जाएगा । तमाम इस्लामी भाई इस्तिन्जा वुज़ू से फ़ारिग़ हो कर 9 : 00 बजे नाश्ता करेंगे और اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ साढ़े नव बजे दोबारा इसी त़रह़ मदनी मश्वरे का ह़ल्क़ा शुरूअ़ हो जाएगा ।

www.dawateislami.net

वापसी के जदवल की दोहराई

अमीरे क़ाफ़िला को चाहिए कि जिस दिन का जो जदवल हो उसी के मुताबिक़ जदवल की दोहराई करे, ऐसा न हो कि जदवल शुरूअ़ हो रहा हो ज़ोहर से और दोहराई 9 : 30 बजे से शुरूअ़ की जाए और अगर वापसी मग़रिब में है या इ़शा में या किसी भी वक़्त हो वहीं तक जदवल दोहराए आगे न दोहराए। बिल ख़ुसूस आख़री दिन अमीरे क़ाफ़िला को चाहिए कि जदवल की दोहराई करने के बाद शुरका को वापसी का जदवल भी इस अन्दाज़ में बता दे : आह ! आज हमारे, मदनी क़ाफ़िले का आख़री दिन है और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारे मदनी क़ाफ़िले की वापसी दारुस्सुन्नह (मदनी मर्कज़) में होगी, जहां हम अपने मदनी क़ाफ़िले की कारकर्दगी पेश करेंगे और फिर अपने अपने घरों को जाएंगे। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

(2) एलानात की दोहराई

जदवल की दोहराई के बाद अब अमीरे क़ाफ़िला एलानात की अहमिय्यत बताए और रोज़ाना एलान के मदनी फूलों में से चन्द मदनी फूल पेश करे। (एलानात के मदनी फूल आगे आ रहे हैं) पेहले दिन एलान की फ़ज़ीलत और एलान के 3 मदनी फूल याद करवाए (मदनी फूल नम्बर 1,2,3)। दूसरे दिन नेक आमाल में से कोई से दो नेक आमाल याद करवाए और एलान के मज़ीद दो मदनी फूल याद करवाए जाएं (मदनी फूल नम्बर 4,5)। तीसरे दिन नेक आमाल में से कोई से दो नेक आमाल और एलान के मज़ीद दो मदनी फूल याद करवाए जाएं (मदनी फूल नम्बर 6,7)।

एलान करने की फ़ज़ीलत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! एलान बयान ही की एक कड़ी है, अगर हम बयान करना चाहते हैं तो हमें चाहिए कि पेहले एलान करना सीखें। एलान भी

www.dawateislami.net

एक क़िस्म की नेकी की दावत है, चुनान्चे अगर किसी के एलान करने से कोई बयान में बैठ गया और अ़मल करने वाला बन गया तो एलान करने वाले को भी रब्बे करीम के फ़ज़्ल से बराबर सवाब मिलता रहेगा اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ । सैयदना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सैयदना मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : "ऐ अल्लाह पाक ! जो अपने भाई को बुलाए, उसे नेकी का हुक्म दे और बुराई से मन्अ़ करे तो उस की जज़ा क्या है ?" इरशाद फ़रमाया : "मैं उस की हर बात पर एक साल की इ़बादत का सवाब लिखता हूं और उसे जहन्नम की सज़ा देने में मुझे ह़या आती है।"[1]

एलान के आदाब

चूंकि एलान भी एक क़िस्म की नेकी की दावत है लेहाज़ा इस के आदाब को पेशे नज़र रखना भी बहुत ज़रूरी है।

(1) एलान करने वाले के लिए ज़रूरी है कि पेहली सफ़ में इमाम साह़ब के क़रीब, इक़ामत केहने वाले की दाईं जानिब नमाज़ अदा करे।

(2) इमाम साह़ब के सलाम फेरते ही एलान करने वाला इस्लामी भाई खड़े हो कर क़िब्ला शरीफ़ की त़रफ़ रुख़ कर के नमाज़ियों की तादाद के मुत़ाबिक़ आवाज़ बुलन्द करते हुवे एलान करे। मगर इस बात का ख़याल रखे कि ऐसी बुलन्द आवाज़ भी न हो जिस से नमाज़ पढ़ने वालों को तशवीश हो।

(3) एलान बयान के लिए तआ़रुफ़ की ह़ैसियत रखता है। चुनान्चे एलान जितने अच्छे अन्दाज़ से होगा, सुनने वाले बयान के बारे में उतना ही अच्छा तास्सुर लेंगे और अगर एलान का अन्दाज़ ना मुनासिब हुवा या निहायत तेज़ी से एलान

1 . . . مكاشفة القلوب، الباب الخامس عشر۔۔۔الخ، ص 48 नेकी की दावत, स. 231

किया गया तो सुनने वाले बयान के बारे में भी इसी क़िस्म के तास्सुरात क़ाइम कर सकते हैं।

(4) एलान करने वाला चादर नीचे रख कर खड़ा हो और हाथ नमाज़ के अन्दाज़ में न बांधे।

(5) एलान को पेहले ही से याद करना भी ज़रूरी है।

(6) एलान वोही किया जाए जो जदवल में दिया गया है।

(7) एलान ठेहर ठेहर कर समझाने वाले अन्दाज़ में हो।

अमीरे क़ाफ़िला एलान के मदनी फूल देख कर ही बयान करे और फिर दौराने मदनी मश्वरा पेहले खड़े हो कर एलान सुनाए, फिर शुरका से यूं अ़र्ज़ करे : "आप भी इसी त़रह़ एलान दोहराने की कोशिश करें।" लेकिन अमीरे क़ाफ़िला किसी से ज़बरदस्ती न करे, अब शुरका एलाने अ़स्र दोहराएं फिर अमीरे क़ाफ़िला खड़े हो कर एलाने मग़रिब दोहरा कर दिखाए, फिर शुरका एलाने मग़रिब दोहराएं, इसी त़रह़ फ़ज्र का एलान। एलानात दर्जे ज़ैल हैं :

एलाने फ़ज्र

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَا رَسُوۡلَ اللّٰہ

"प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अभी दुआ के फ़ौरन बाद اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सुन्नतों भरा बयान होगा तशरीफ़ रखिए और ढेरों सवाब कमाइए।"

एलाने अ़स्र

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَا رَسُوۡلَ اللّٰہ

www.dawateislami.net

आप के अ़लाक़े में नेकी की दावत आ़म करने के लिए आप की मदद दरकार है बराहे करम दुआ़ के बाद तशरीफ़ रखिए और ढेरों सवाब कमाइए।"

एलाने मग़रिब

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَارَسُوۡلَ اللّٰہ

"प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अभी नमाज़ के फ़ौरन बाद اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सुन्नतों भरा बयान होगा तशरीफ़ रखिए और ढेरों सवाब कमाइए।"

(3) ज़िम्मेदारियां तक़्सीम करना

एलानात की दोहराई के बाद अमीरे क़ाफ़िला दर्सो बयान व दीगर मसाजिद में फ़ज्र व ज़ोहर में मअ़ रुफ़क़ा जा कर दर्स देने और खाना पकाने की ज़िम्मेदारियों के बारे में मदनी मश्वरा कर के ज़िम्मेदारियां तक़्सीम करे। खाने की तैयारी इशराक़ व चाश्त से ले कर मश्वरे के ह़ल्क़े से पेहले कर ली जाए। नीज़ दो वक़्त का सालन एक साथ ही तैयार कर लिया जाए। रोज़ाना बदल बदल कर ज़िम्मेदारियां दी जाएं, येह न हो कि रोज़ाना के लिए बरतन धोने या पकाने के लिए एक ही इस्लामी भाई को मख़्सूस कर लिया जाए। एक इस्लामी भाई की ज़िम्मेदारी येह हो कि ज़रूरतन आराम के वक़्फ़े में जाग कर सामान वग़ैरा की ह़िफ़ाज़त करे।

मदनी मश्वरा लिए जाने वाले 9 कम

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मदनी क़ाफ़िलों में मदनी मश्वरा इन 9 कामों पर लिया जाता है : (1) चौक दर्स (2) ज़ोहर का दर्स (3) एलाने अ़स्र (4) बयाने अ़स्र (5) एलाने मग़रिब (6) बयाने मग़रिब (7) इ़शा का दर्स

www.dawateislami.net

(8) एलाने फ़ज्र (9) बयाने फ़ज्र। इन 9 कामों के बारे में शुरका ए क़ाफ़िला में से हर एक इस्लामी भाई से सिर्फ़ एक ही काम पर मदनी मश्वरा लिया जाए, मदनी मश्वरा मश्वरे के तौ़र पर ही होना चाहिए मज़ाक़ मस्ख़री से परहेज़ कीजिए।

मदनी मश्वरा लेने का त़रीक़ए कार

❁ मदनी मश्वरा देने वाला इस्लामी भाई अपने मश्वरे के बारे में बतौ़रे आ़जिज़ी के "नाक़िस मश्वरा" का लफ़्ज़ इस्तेमाल करे। ❁ जब किसी ज़िम्मेदारी के बारे में मदनी मश्वरा दे तो अपने इ़लावा दीगर मौजूद शुरका ए क़ाफ़िला के बारे में ही मदनी मश्वरा दे।

❁ जिस इस्लामी भाई को ज़िम्मेदारी देने के बारे में मदनी मश्वरा दिया जाए, अगर वाक़ेई उस का ज़ेहन हो तो वोह اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ कहे। ❁ दूसरों की मौजूदगी में निय्यत का इज़हार करते हुवे एह़तियात़ फ़रमाइए दिल में निय्यत न होने के बा वुजूद जान बूझ कर ऐसा अन्दाज़ इख़्तियार करना कि दूसरों पर असर क़ाइम हो कि येह निय्यत कर रहा है, येह झूट और धोका है। लेहाज़ा अगर किसी ने आप के मुतअ़ल्लिक़ मदनी मश्वरा दिया और आप का इरादा उस काम को करने का नहीं तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ न कहें। ❁ इसी त़रह़ "हर वक़्त हर काम के लिए ह़ाज़िर हूं।" केहने वाले को भी अपने दिल पर ग़ौर कर लेना चाहिए। ❁ मदनी मश्वरा सीधी जानिब से इस त़रह़ लेना है मसलन अमीरे क़ाफ़िला शुरका से यूं पूछे : "शाकिर भाई ! आप मदनी मश्वरा दें ज़ोहर का दर्स किस इस्लामी भाई से करवाया जाए ?" अब शाकिर भाई यूं अ़र्ज़ करें : "मेरा नाक़िस मश्वरा है कि ज़ोहर का दर्स ख़लील भाई से करवा लिया जाए आगे जैसी आप की मरज़ी।" ❁ अब अमीरे क़ाफ़िला दूसरे इस्लामी भाई से अ़स्र के एलान का मदनी मश्वरा

www.dawateislami.net

ले। ❁ अब बारी बारी तमाम शुरका से इसी त़रह़ मदनी मश्वरा ले। इस त़रह़ मदनी मश्वरा देने वाले और जिस के बारे में मदनी मश्वरा दिया गया दोनों की ह़ौसला अफ़्ज़ाई भी हो जाएगी।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मदनी मश्वरा करने के इस त़रीक़े पर अ़मल करने की बरकत से अजनबिय्यत मेह़सूस करने वाले इस्लामी भाई मदनी क़ाफ़िले वालों के साथ घुल मिल जाएंगे और उन से मदनी मश्वरा लेने से उन की ह़ौसला अफ़्ज़ाई होगी। मदनी मश्वरा देने वाले इस्लामी भाइयों की ख़िदमत में तन्हाई में येह दरख़्वास्त भी की जाए कि दर्सो बयान की ज़िम्मेदारी के बारे में मदनी मश्वरा देते वक़्त उन इस्लामी भाइयों का नाम भी लें जो फ़िलह़ाल दर्सो बयान की सलाह़िय्यत नहीं रखते। इस का फ़ाइदा येह होगा कि उन इस्लामी भाइयों का भी दर्सो बयान करने के बारे में ज़ेहन बनेगा।

ज़िम्मेदारियों की तक़्सीम

सब से मदनी मश्वरा लेने के बाद अमीरे क़ाफ़िला दर्जे ज़ैल ज़िम्मेदारियां तक़्सीम करे।

(1) चौक दर्स (2) नमाज़े फ़ज्र व ज़ोहर में मुख़्तलिफ़ मसाजिद में जाने की ज़िम्मेदारी (3) ज़ोहर का दर्स (4) अ़स्र का एलान (5) अ़स्र का 12 मिनट का बयान (6) अ़स्र ता मग़रिब दर्स (7) अ़लाक़ाई दौरे में जो इस्लामी भाई बाहर जाएंगे उन को इसी ह़ल्क़े में बता दिया जाए (8) अ़लाक़ाई दौरे का निगरान (9) मग़रिब का एलान (10) मग़रिब का बयान (11) इ़शा का दर्स (12) बादे इ़शा मदनी ह़ल्क़ा या रसाइले अ़त्तारिय्या का दर्स (13) फ़ज्र का एलान (14) फ़ज्र का बयान।

ख़ैर ख़्वाह इस्लामी भाइयों की ज़िम्मेदारी

(15) खाने की ख़ैर ख़्वाही की ज़िम्मेदारी (दो इस्लामी भाई) (16) सोने वालों को जगाने की ज़िम्मेदारी (17) मस्जिद की ख़ैर ख़्वाही की ज़िम्मेदारी

www.dawateislami.net

(मसलन ट्यूब लाइट, पंखे, दरियां वग़ैरा की ख़ैर ख़्वाही) (18) दर्सो बयान के वक़्त जाने वाले नमाज़ी इस्लामी भाइयों पर इनफ़िरादी कोशिश कर के दर्स में बिठाने की ज़िम्मेदारी। (नमाज़ियों और आने जाने वालों का लेहाज़ रखें न आप के बोलने से किसी को तक्लीफ़ हो और न ही जाने के रास्ते के बीच में खड़े हों।)

जब येह ज़िम्मेदारियां तक़्सीम हो जाएं तो जिस इस्लामी भाई को जो ज़िम्मेदारी दी जाए वोह उसे अपने मदनी पेड़ या डायरी में लिख ले और अमीरे मदनी क़ाफ़िला भी सब की ज़िम्मेदारियां अपने पास डायरी में तेह़रीर कर ले ताकि वक़्तन फ़ वक़्तन उन को याद देहानी करवा सके।

मदनी मक़्सद का बयान (9:57) ता (10:37)

इस ह़ल्के़ में अमीरे क़ाफ़िला इब्तेदाई 26 मिनट अमीरे एहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रसाइल से बयान करे, बयान इस अन्दाज़ में हो कि शुरका बोर न हों। और आख़िर में ज़ैली ह़ल्के़ के बारह (12) दीनी कामों में से किसी एक दीनी काम का ज़ेहन रिसाले से देख कर बनाए।

ज़ैली ह़ल्के़ के 12 दीनी काम

(रोज़ाना के पांच दीनी काम) (1) फ़ज्र के लिए जगाना (2) तफ़्सीर सुनने सुनाने का ह़ल्क़ा (3) मस्जिद दर्स (4) चौक दर्स (5) इस्लामी भाइयों के मद्रसतुल मदीना। **(हफ़्तावार पांच दीनी काम)** (1) हफ़्तावार इजतेमाअ़ (2) हफ़्तावार एतेकाफ़ / ह़ल्क़ा (3) हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा (4) हफ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़ (5) हफ़्तावार अ़लाक़ाई दौरा। **(माहाना दो दीनी काम)** (1) नेक आमाल (2) मदनी क़ाफ़िला।

बैरूने मुल्क के 12 दीनी काम

(रोज़ाना के पांच दीनी काम) (1) फ़ज्र के लिए जगाना (2) तफ़्सीर सुनने सुनाने का ह़ल्क़ा (3) इनफ़िरादी कोशिश (4) दर्स (5) इस्लामी

www.dawateislami.net

भाइयों के मद्रसतुल मदीना। ۞ **(हफ़्तावार पांच दीनी काम)** (1) हफ़्तावार इजतेमाअ़ (2) हफ़्तावार एतेकाफ़ / हल्क़ा (3) हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा (4) हफ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़ (5) हफ़्तावार अ़लाक़ाई दौरा। ۞ **(माहाना दो दीनी काम)** (1) नेक आमाल (2) मदनी क़ाफ़िला।

इनफ़िरादी इबादत / तिलावत / मुत़ालआ़ (10:38) ता (10:56)

इस हल्क़े में अमीरे क़ाफ़िला कोशिश करे कि तमाम इस्लामी भाई इनफ़िरादी इबादत में मसरूफ़ हो जाएं, जो तिलावत करना चाहे वोह तिलावते कुरआन में मसरूफ़ हो जाए, जो अल्लाह पाक का ज़िक्र करना चाहे वोह ज़िक्र में मश्ग़ूल हो जाए, जो दुरूदे पाक पढ़ना चाहे वोह गुम्बदे ख़ज़रा का तसव्वुर बांध कर मदीने शरीफ़ की त़रफ़ रुख़ कर के दुरूद शरीफ़ पढ़ने में मसरूफ़ हो जाए, जो इस्लामी भाई शजरा शरीफ़ से वज़ाइफ़ पढ़ना चाहें वोह वज़ाइफ़ पढ़ने लग जाएं, मुत़ालए का शौक़ रखने वाले मुत़ालए में मसरूफ़ हो जाएं। अल ग़रज़ इस हल्क़े में कोई भी इस्लामी भाई फ़ारिग़ न बैठे।

दीनी किताब पढ़ने की निय्यतें

۞ रिज़ा ए इलाही के लिए, हो सका तो बा वुज़ू और क़िब्ला रू हो कर मुत़ालआ़ करूंगा। ۞ मौक़ेअ़ की मुनासेबत से عَزَّوَجَلَّ, صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, رَضِیَ اللهُ عَنْه, رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه, पढ़ूंगा। ۞ अगर कोई बात समझ न आई तो उ़लमा से पूछ लूंगा। ۞ अपनी ज़ाती किताब पर जहां जहां ज़रूरत होगी अन्डर लाइन करूंगा। ۞ याद दाश्त के इशारे (Points) लिखूंगा। ۞ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो मुसन्निफ़ या नाशिरीन को तेह़रीरन मुत्त़लअ़ करूंगा। (नाशिरीन व मुसन्निफ़ वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)[1]

1 ...सवाब बढ़ाने के नुस्ख़े, स. 23।

www.dawateislami.net

मुख़्तसर नेकी की दावत व तरग़ीबात (10:57) ता (11:08)

इस हल्क़े में मुख़्तसर नेकी की दावत याद करवाई जाए अगर सब को याद हो जाए तो अ़लाक़ाई दौरा नामी रिसाले से देख कर अ़लाक़ाई दौरे का त़रीक़ए कार बताएं और शुरका का अपने अ़लाक़े में जा कर भी अ़लाक़ाई दौरे में शामिल होने का ज़ेहन बनाएं। ۞ नेकी की दावत याद करवाने के बाद तरग़ीबात भी याद करवाई जा सकती हैं। तरग़ीबात आख़री सफ़ह़ात पर मौजूद हैं।

इनफ़िरादी कोशिश का त़रीक़ा (11:09) ता (11:19)

अमीरे क़ाफ़िला इनफ़िरादी कोशिश के मदनी फूलों में से पेहले दिन मदनी फूल नम्बर 1 ता 10 तक पढ़ कर सुनाए। (मदनी फूल आगे आ रहे हैं) ۞ दूसरे दिन मदनी फूल नम्बर 11 ता 16 तक पढ़ कर सुनाए। ۞ तीसरे दिन मदनी फूल नम्बर 17 ता 23 तक पढ़ कर सुनाए। मदनी फूल बयान करने के बाद तरग़ीबात भी याद करवाई जा सकती हैं तरग़ीबात आख़री सफ़ह़ात पर मौजूद हैं।

इनफ़िरादी कोशिश के मदनी फूल

(1) इनफ़िरादी कोशिश दीनी कामों की जान है। (2) दावते इस्लामी का तक़रीबन 99 फ़ीसद दीनी काम इनफ़िरादी कोशिश से ही हो रहा है। (3) इनफ़िरादी कोशिश की रूह़ मिलनसारी है।

(4) इनफ़िरादी कोशिश करने वाले के लिए मुख़ात़ब (यानी जिस से बात कर रहा है उस) की नफ़्सियात परखना बेह़द ज़रूरी है। (5) इनफ़िरादी कोशिश हो या मदनी क़ाफ़िला या इजतेमाअ़ के सुन्नतों भरे हल्क़े हों कहीं भी कुछ अपनी त़रफ़ से बयान न किया जाए जो तरग़ीबात हों वोह अच्छी त़रह़ याद कर के ज़बानी सुनाई जाएं। (6) दो दो इस्लामी भाई मिल कर जाएं। (7) आपस में गुफ़्तगू करने के बजाए ज़िक्रो दुरूद में मश्ग़ूल रहें। (8) जिस किसी इस्लामी भाई के पास जाएं उसे सलाम करें और गर्म जोशी से मुलाक़ात करें। (9) नाम वग़ैरा पूछ लें ताकि

www.dawateislami.net

अजनबिय्यत कम हो जाए। (10) इस के बाद यूं कहे : दावते इस्लामी का एक मदनी क़ाफ़िला राहे ख़ुदा में सफ़र करता हुवा आप के यहां की..... मस्जिद में आया हुवा है।" (फिर दी गई तरग़ीबात में से किसी एक के ज़रीए इनफ़िरादी कोशिश करें।) (11) उस के अ़लाक़े की उस मस्जिद में नमाज़ की दरख़्वास्त कीजिए जहां दावते इस्लामी का दीनी काम हो रहा हो। (12) अगर सामने वाला सिर्फ़ "हां" कहे तो उस से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ भी केहलवा लीजिए और मुमकिना सूरत में येह भी केह दीजिए कि हमें माना पर नज़र रखते हुवे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ केहने की आ़दत डालनी चाहिए اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ के माना हैं "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो" और वाक़ेई अल्लाह पाक के चाहे बग़ैर हम कुछ भी नहीं कर सकते। (13) अगर मदनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिए तैयार हो जाए तो सफ़र की तारीख़ ले लीजिए, नाम व पता, फ़ोन नम्बर वग़ैरा अपने पास मेह़फ़ूज़ कर लीजिए और उस वक़्त तक राबेत़ा करते रहिए जब तक सफ़र मुकम्मल कर लेने की सआ़दत ह़ासिल न कर ले। (ह़ासिल कर्दा निय्यत मुमकिन हो तो मदनी क़ाफ़िला एपलीकेशन में दर्ज कर दें वरना अमीरे क़ाफ़िला के ज़रीए दारुस्सुन्नह (मदनी मर्कज़) में जम्अ़ करवा दें) (14) मदनी क़ाफ़िले में सफ़र के बाद भी उस से राबते में रहिए यहां तक कि वोह मदनी माह़ोल में रच बस कर दूसरों को मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बनाने वाला बन जाए। (15) हाथों हाथ मस्जिद में आने की दावत इस त़रह़ दें : "اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस वक़्त मस्जिद में सीखने सिखाने का ह़ल्क़ा जारी है। आप भी इस में शिर्कत फ़रमा लीजिए।" (16) अगर वोह तैयार हो जाए तो उन को अपने साथ मस्जिद में ले आएं और ह़ल्क़े में शामिल कर दें। (17) अगर वोह साथ चलने के लिए तैयार न हों तो उन से पूछ लें कि "फिर आप किस वक़्त तशरीफ़ लाएंगे ?" (18) इनफ़िरादी कोशिश के दौरान किसी से बह़स में हरगिज़ हरगिज़ न उलझें,

www.dawateislami.net

अगर कोई बह़स शुरूअ़ करे तो फ़ौरन ख़ामोशी के साथ वहां से रुख़्सत हो जाएं। (19) अगर कोई तंग करे या डांट दे तो ख़ामोशी इख़्तियार करें और सब्र कर के ढेरों सवाब ह़ासिल करें। (20) इनफ़िरादी कोशिश के लिए दिए गए 30 मिनट के वक़्त की पाबन्दी फ़रमाएं, ऐसा न हो कि कोई एक घन्टा इनफ़िरादी कोशिश में सर्फ़ कर दे तो कोई डेढ़ घन्टा, क्यूंकि इस सूरत में जदवल के दूसरे ह़ल्क़े मुतास्सिर होंगे। (21) आपस में किसी पर तन्क़ीद न करें। (22) अमीरे क़ाफ़िला के बारे में बद गुमानियां न करें। (23) किसी ज़िम्मेदार के बारे में बह़सो मुबाह़सा करने के बजाए सिर्फ़ और सिर्फ़ मदनी क़ाफ़िले से मदनी क़ाफ़िला तैयार करने और वापस अ़लाक़े में जा कर ज़ैली ह़ल्क़े में दीनी काम (मज़बूत़) करने के बारे में गुफ़्तगू करें।

इनफ़िरादी कोशिश (11:20) ता (12:00)

۞ इस ह़ल्क़े में मस्जिद से बाहर आ़म मुसलमानों को सलाम कर के इस्लाह़े आमाल, गुनाहों से इजतेनाब और मौत व फ़िक्रे आख़ेरत की सोच देते हुवे मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र के लिए उन पर इनफ़िरादी कोशिश करें और अपने साथ मस्जिद में लाने की कोशिश करें। ۞ मुख़ात़ब के चेहरे पर निगाहें गाड़े बग़ैर गुफ़्तगू करने की कोशिश फ़रमाएं। ۞ इनफ़िरादी कोशिश के दौरान कम अज़ कम तीन इस्लामी भाई मस्जिद में ही तशरीफ़ रखें और फ़ैज़ाने नमाज़ किताब से दर्स का सिलसिला जारी रखें। ۞ अमीरे क़ाफ़िला इनफ़िरादी कोशिश के लिए बिलकुल नए इस्लामी भाई को न ले कर जाएं बल्कि वोह मस्जिद में मौजूद ह़ल्क़े में सीखते रहें और अगर जाना ही पड़े तो वोह सामेअ़ (यानी सुनने वाले) होंगे और कुछ नहीं करेंगे। ۞ जो इस्लामी भाई इनफ़िरादी कोशिश करेंगे वोह सिर्फ़ याद शुदा तरग़ीब ही सुनाएंगे, अगर कोई तरग़ीब याद नहीं तो येह अल्फ़ाज़ याद करवा दें। "हमारा

www.dawateislami.net

मदनी क़ाफ़िला.....से आया हुवा है, इस वक़्त सीखने सिखाने का सिलसिला जारी है, अगर वक़्त हो तो.....मस्जिद तशरीफ़ ले चलें, अगर अभी नहीं आ सकते तो नमाज़े ज़ोहर में तशरीफ़ ले आएं।" अगर येह जुम्ले भी याद न हो सकें तो इनफ़िरादी कोशिश के लिए न जाएं बल्कि इन जुम्लों को याद करें।

सुन्नतें सीखने का हल्क़ा (12 : 00) ता (12 : 30)

इस हल्क़े में 3 दिन 12 दिन और एक माह के मदनी क़ाफ़िलों में सुन्नतें सीखने की तरतीब अलग अलग होगी अमीरे क़ाफ़िला सुन्नतें और आदाब पढ़ कर सुनाए और याद करवाए और याद रहे कि इस हल्क़े में सुन्नतें और आदाब सिखानी और याद करवानी हैं, ऐसा न हो कि शुरका को खड़ा कर के सुन्नतें सुनाने पर ज़ोर दिया जाए, याद करने के बाद कोई ख़ुद सुनाना चाहे तो उस की मरज़ी लेकिन अमीरे मदनी क़ाफ़िला इस मुआ़मले में शुरका पर हरगिज़ हरगिज़ सख़्ती न करे।

है फ़लाह़ो कामरानी नर्मी व आसानी में
हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में

वक़्फ़ए त़आ़म (12 : 30)

हर मरतबा खाने से पेहले अमीरे क़ाफ़िला येह मदनी फूल बयान करे :

जब कभी दाख़िले मस्जिद हों, याद आने पर एतेकाफ़ की निय्यत कर लिया करें कि जब तक मस्जिद में रहेंगे एतेकाफ़ का सवाब मिलता रहेगा। याद रखिए ! मस्जिद में खाने, पीने, सोने की शरअ़न इजाज़त नहीं, अलबत्ता अगर एतेकाफ़ की निय्यत होगी तो येह सब चीज़ें ज़िम्नन जाइज़ हो जाएंगी। अगर कोई मस्जिद में खाना, पीना, सोना चाहे तो एतेकाफ़ की निय्यत कर ले, कुछ देर

www.dawateislami.net

ज़िक्रुल्लाह करे, फिर जो चाहे करे। (यानी अब चाहे तो खा पी या सो सकता है) अमीरे क़ाफ़िला एतेकाफ़ की निय्यत करवा कर चन्द बार दुरूदे पाक पढ़ा दें या चार बार येह तस्बीह़ पढ़ा दें : سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ۔

मस्जिद की सफ़ाई के बारे में अहम मसाइल

(1) बाज़ अवक़ात दस्तर ख़्वान व बरतनों की सह़ीह़ सफ़ाई न होने या गीला दस्तर ख़्वान लपेट कर सामान में रख देने से, वोह बदबूदार हो जाता है, ऐसा दस्तर ख़्वान मस्जिद में बिछाना जाइज़ नहीं, येही हुक्म उन बरतनों का भी होगा जो बे धुले या सह़ीह़ न धुलने की वज्ह से बदबू छोड़ते हैं। (2) अगर किसी ने मदनी क़ाफ़िले वालों की ख़ैर ख़्वाही की तो उन्हें बता दें कि मस्जिद में कच्ची मूली, कच्ची प्याज़, कच्चा लेहसन और हर वोह चीज़ कि जिस की बू नापसन्द हो उसे खा कर मस्जिद में उस वक़्त तक जाना जाइज़ नहीं जब तक कि हाथ मुंह वग़ैरा में बू बाक़ी हो कि फ़रिश्तों को इस से तक्लीफ़ होती है। (अगर वोह इस्लामी भाई मह़ब्बत में इस क़िस्म की चीज़ जो ऊपर बयान हुई ले आएं तो उन्हें मह़ब्बत भरे अन्दाज़ में मस्अला समझा दें और वापस कर दें) मज़ीद मदनी क़ाफ़िले वालों के साथ साथ हर मुसलमान के लिए खाने की इजाज़त लीजिए ताकि शुरका ए क़ाफ़िला के इलावा अगर कोई दूसरा शामेल हो जाए तो उस के लिए खाने की कोई मुमानअ़त न रहे। खाना खाने के कुल्ली (जिस त़रह़ चाहे इस त़रह़ खाने के) इख़्तियार भी ले लें। जो खाना बच जाए उसे दूसरे वक़्त इस्तेमाल करने या किसी को भी देने की इजाज़त भी ले लें अगर इजाज़त नहीं ली गई तो खाना बच जाने की सूरत में वापस करना होगा क्यूंकि ख़ैर ख़्वाही करने वाले ने एक वक़्त के खाने की ख़ैर ख़्वाही की है। (3) अस्ल मस्जिद में ऐसा खाना या पीना कि जिस से मस्जिद

www.dawateislami.net

की आलूदगी हो शरअ़न नाजाइज़ है। लेहाज़ा मदनी क़ाफ़िले वाले कोशिश कर के खाने का इन्तेज़ाम फ़िना ए मस्जिद या ख़ारिजे मस्जिद में करें। (4) फ़िना ए मस्जिद में भी बैठने का येह मत़लब नहीं कि इस को आलूदा करने में कोई ह़रज नहीं, बल्कि फ़िना ए मस्जिद को भी आलूदगी से बचाना ज़रूरी है। (5) खाना खाते वक़्त, बैठने के लिए मस्जिद की दरियां इस्तेमाल न की जाएं, बल्कि इस मक़्सद के लिए अलग से चादर या चटाई और दस्तर ख़्वान का इन्तेज़ाम किया जाए। जब खाना, खाना हो तो इस को बिछा लिया जाए ताकि मस्जिद की दरी या फ़र्श आलूदा न हो।

खाने से पेहले की निय्यतें

(1) खाने से पेहले और बाद में खाने का वुज़ू करूंगा। (यानी दोनों हाथ पहुंचों तक धोऊंगा) (2) खाने के ज़रीए इबादत और ह़स्बे ज़रूरत कस्बे ह़लाल के लिए भाग दौड़ पर कुव्वत ह़ासिल करूंगा। (भूक से कम खाना मुनासिब है, जितनी भूक हो उतना ही खाने से भी इबादत पर कुव्वत मिल सकती है। अलबत्ता ख़ूब डट कर खाने से उल्टा इबादत में सुस्ती पैदा होती, गुनाहों की त़रफ़ रुजह़ान बढ़ता और पेट की ख़राबियां जनम लेती हैं) (3) इत्तेबाए सुन्नत में ज़मीन पर बिछे हुवे दस्तर ख़्वान पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ बैठ कर بِسْمِ اللّٰه और दीगर दुआएं पढ़ कर तीन उंगलियों से छोटा निवाला ले कर अच्छी त़रह़ चबा कर खाऊंगा। (4) खाने के दौरान हर लुक़्मे पर يَاوَاجِدُ और بِسْمِ اللّٰه नीज़ हर लुक़्मा खा लेने के बाद اَلْحَمْدُلِلّٰه कहूंगा। (5) गिरे हुवे दाने वग़ैरा दस्तर ख़्वान से उठा कर खाऊंगा। (6) आख़िर में अदा ए सुन्नत की निय्यत से बरतन और तीन तीन बार उंगलियां चाटूंगा। (अगर खाने का असर बाक़ी रेह जाए तो तीन बार के बाद भी चाटते रहिए यहां तक कि ग़िज़ा का असर जाता रहे।)

www.dawateislami.net

मिल कर खाने की मज़ीद निय्यतें

(1) मौक़अ़ मिला तो खाने से पेहले और बाद की दुआ़एं पढ़ाऊंगा। (2) दस्तर ख़्वान पर अगर कोई आ़लिम या बुज़ुर्ग मौजूद हुवे तो उन से पेहले खाना शुरूअ़ नहीं करूंगा। (3) गिज़ा का उ़म्दा हिस्सा मसलन बोटी वग़ैरा हि़र्स (लालच) से बचते हुवे दूसरों की ख़ातिर ईसार करूंगा। (4) खाने के हर लुक़्मे पर हो सका तो इस निय्यत के साथ बुलन्द आवाज़ से يَاوَاجِدُ कहूंगा कि दूसरों को भी याद आ जाए और अत्राफ़ की अश्या गवाह हों। (5) जब तक दस्तर ख़्वान न उठा लिया जाए उस वक़्त तक नहीं उठूंगा। (6) जब तक सब फ़ारिग़ न हो जाएं हाथ नहीं रोकूंगा, अगर रोकना हुवा तो हुक्मे ह़दीसे पाक पर अ़मल करते हुवे माज़ेरत पेश करूंगा।

खाने से पेहले की दुआ़एं

❁ पेहले लुक़्मे पर بِسْمِ اللّٰه दूसरे से पेहले بِسمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰن और तीसरे से पेहले بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़िए।[1] ❁ बिस्मिल्लाह ज़ोर से पढ़िए ताकि दूसरों को भी याद आ जाए। ❁ खाना शुरूअ़ करने से पेहले येह दुआ़ पढ़ ली जाए, अगर खाने पीने में ज़हर भी होगा तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ असर नहीं करेगा। दुआ़ येह है : بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَاءِ یَاحَیُّ یَاقَیُّوْم "यानी अल्लाह पाक के नाम से शुरूअ़ करता हूं जिस के नाम की बरकत से ज़मीनो आस्मान की कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती, ऐ हमेशा ज़िन्दा व क़ाइम रेहने वाले।"[2] ❁ अगर शुरूअ़ में बिस्मिल्लाह पढ़ना भूल गए तो दौराने

---

1 . . . احیاء العلوم، القسم الثانی فی آداب حالۃ الاکل، 6/2۔

2 . . . مسند الفردوس، باب الالف، 282/1، حدیث:1106۔

www.dawateislami.net

त़आ़म याद आने पर इस त़रह़ केह लीजिए : بِسْمِ اللّٰهِ اَوَّلَهٗ وَاٰخِرَهٗ ''यानी अल्लाह पाक के नाम से खाने की इब्तेदा और इन्तेहा।''

खाने के बाद की दुआएं

(1) اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَاوَجَعَلَنَا مُسْلِمِیْنَ ''यानी अल्लाह पाक का शुक्र है जिस ने हमें खिलाया, पिलाया और हमें मुसलमान बनाया।''[1]

(2) اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَنِیْ هٰذَا وَرَزَقَنِیْهِ مِنْ غَیْرِ حَوْلٍ مِّنِّیْ وَلَاقُوَّةٍ ''यानी तमाम तारीफ़ें अल्लाह पाक के लिए हैं जिस ने मुझे येह खाना खिलाया और मेरी किसी महारत व कुव्वत के बग़ैर मुझे येह रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाया।''[2]

(3) अगर किसी ने खिलाया हो तो येह दुआ भी पढ़िए : اَللّٰهُمَّ اَطْعِمْ مَنْ اَطْعَمَنِیْ وَ اسْقِ مَنْ سَقَانِیْ ''यानी ऐ अल्लाह उस को खिला जिस ने मुझे खिलाया और उस को पिला जिस ने मुझे पिलाया।''[3]

(4) اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَافِیْهِ وَاَطْعِمْنَاخَیْرًا مِّنْهُ ''यानी ऐ अल्लाह पाक! हमारे लिए इस खाने में बरकत अ़त़ा फ़रमा और इस से बेहतर खाना हमें खिला।''[4]

(5) اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَافِیْهِ وَزِدْنَامِنْهُ यानी ''ऐ अल्लाह पाक! हमारे लिए इस में बरकत दे और हमें इस से ज़्यादा इनायत फ़रमा।''[5]

---

1 . . . ابوداود، کتاب الاطعمة، باب مایقول الرجل اذا طعم، 3/513، حدیث: 3850۔

2 . . . ترمذی، کتاب الدعوات، باب مایقول اذا فرغ من الطعام، 5/284، حدیث: 3469۔

3 . . . الحصن الحصین، مایتعلق بالآکل والشرب واللباس، ص 71۔

4 . . . ابوداود، کتاب الاشربة، باب مایقول اذا شرب اللبن، 3/476، حدیث: 3730۔

5 . . . ابوداود، کتاب الاشربة، باب مایقول اذا شرب اللبن، 3/476، حدیث: 3730۔

www.dawateislami.net

चौक दर्स

अज़ाने ज़ोहर से 12 मिनट पेहले किसी बा रौनक़ मक़ाम पर हुक़ूक़े आ़म्मा का ख़याल रखते हुवे (रास्ता वग़ैरा रोके बग़ैर) निगाहों की हिफ़ाज़त के लिए नज़रें नीची किए, घरों में झांकने से बचते हुवे फ़ैज़ाने सुन्नत से चौक दर्स दीजिए। (1) रोज़ाना कम अज़ कम दो दर्स देने की निय्यत के साथ फ़ैज़ाने सुन्नत से 7 मिनट चौक दर्स दीजिए। (2) अज़ान होने पर ख़ामोश हो जाइए और अज़ान का जवाब दीजिए। (3) इस दौरान इशारे से गुफ़्तगू और रखने उठाने वग़ैरा के कामों से भी इजतेनाब कीजिए। (अज़ानो इक़ामत के वक़्त हमेशा इसी त़रह़ एहतेमाम फ़रमाइए) (4) हर इस्लामी भाई कम अज़ कम एक इस्लामी भाई को साथ लाए और सुन्नते क़ब्लिया के बाद नमाज़े ज़ोहर पेहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ (यानी ज़ाहिरी ओ बात़िनी आदाब के साथ) बा जमाअ़त अदा करे।

चौक दर्स से मुतअ़ल्लिक़ अहम मसाइल

(1) मदनी क़ाफ़िले वाले चौक दर्स के लिए निकलें या अ़लाक़ाई दौरा के लिए किसी भी सूरत में लोगों को बीच रास्ते में रोक कर चौक दर्स व नेकी की दावत देने की हरगिज़ इजाज़त नहीं कि इस से रास्ते पर चलने वालों को बहुत ज़्यादा तक्लीफ़ का सामना करना पड़ता है। यूंही अगर रास्ता तंग हो तो किनारे पर भी न खड़े हों कि इस से रास्ता ब्लॉक होने का शदीद ख़दशा है।

(2) मदनी क़ाफ़िले के जदवल में फ़ज्र की नमाज़ से पेहले फ़ज्र के लिए जगाना और ज़ोहर की नमाज़ से पेहले चौक दर्स का जदवल होता है। फ़ज्र के लिए जगाने या चौक दर्स की वज्ह से सुन्नते क़ब्लिया को उन के वक़्त से क़ज़ा कर देना जाइज़ नहीं। अगर किसी दिन इन कामों की वज्ह से सुन्नते क़ब्लिया के निकलने का अन्देशा हो तो उस दिन इन दोनों कामों को तर्क कर के सुन्नते क़ब्लिया अदा करना ज़रूरी है।

www.dawateislami.net

(3) चौक दर्स हो या अ़लाक़ाई दौरा या इनफ़िरादी कोशिश पेहले लोगों को अपनी त़रफ़ मुतवज्जेह करें, अगर वोह काम काज में मसरूफ़ हैं, तवज्जोह नहीं देते तो उन्हें छोड़ कर आगे चले जाएं।

(4) चौक दर्स हो या अ़लाक़ाई दौरा या इनफ़िरादी कोशिश जहां गाने की आवाज़ें साफ़ आ रही हों वहां से आगे चले जाएं नीज़ ऐसी दुकानों पर भी न जाएं जहां फ़िल्मों वग़ैरा की बा कसरत ह़यासोज़ तसावीर हों बल्कि उन्हें बाहर बुला कर मदनी फूल पेश करें।

दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत

बाद नमाज़े ज़ोहर (7 मिनट) फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स दिया जाए। (एक इस्लामी भाई को ख़ैर ख़्वाह बनाइए जो दर्स / बयान में सब को मुबल्लिग़ के क़रीब बिठाए और जाने वालों को नर्मी के साथ शिर्कत की दरख़्वास्त करे मगर न तो किसी की नमाज़ में ख़लल आए न आने जाने वालों का रास्ता रुके, बादे दर्स बैठे बैठे इनफ़िरादी कोशिश कीजिए।)

(1) दर्स देने वाले की उर्दू कम अज़ कम इतनी दुरुस्त हो कि देख कर सह़ीह़ त़ौर पर तर्जमए क़ुरआन, ह़दीस व शरई मसाइल वग़ैरा बयान कर सके।

(2) दर्सो बयान व एलान ख़्वाह मदनी क़ाफ़िले में हो या अ़लाक़े में या मस्जिद के इमाम साह़ब करें, किसी का चेहरा नमाज़ी की सीध में नहीं होना चाहिए कि नमाज़ी के चेहरे की त़रफ़ मुंह करने की इजाज़त नहीं ख़्वाह बीच में सुतरा हो।

नमाज़ सीखने का ह़ल्क़ा (30 मिनट)

"नमाज़ के अह़काम" से (30 मिनट) का ह़ल्क़ा लगाया जाए, जिस दिन का जो शिड्यूल मदनी मर्कज़ की त़रफ़ से दिया गया है वोही पढ़ कर सुनाएं

www.dawateislami.net

अपनी त़रफ़ से कुछ भी बयान न करें, अगर कोई मस्अला पूछे तो उसे अ़र्ज़ करें : मदनी मर्कज़ की त़रफ़ से हमें लिखा हुवा पढ़ कर सुनाने का फ़रमाया गया है, बराहे करम शरई मसाइल के लिए दारुल इफ़्ता एहले सुन्नत से राबेत़ा कीजिए।

अहम मस्अला : नमाज़ के अह़काम या फ़ैज़ाने सुन्नत में दर्ज शरई मसाइल को पढ़ कर सुनाने में कोई ह़रज नहीं। अगर शुरका ए मदनी क़ाफ़िला में से कोई किसी मस्अले पर सवाल करे या मस्अले की मज़ीद वज़ाह़त का त़लबगार हो तो अमीरे क़ाफ़िला समेत कोई भी अपनी त़रफ़ से इस की वज़ाह़त न करे बल्कि दारुल इफ़्ता एहले सुन्नत से रुजूअ़ करने का कहा जाए क्यूंकि बग़ैर इ़ल्म, शरई मसाइल का जवाब देना नाजाइज़ व गुनाह है। अमीरे मदनी क़ाफ़िला यूं एलान करे : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अभी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ शरई मसाइल सीखने का ह़ल्क़ा है ख़ूब कान लगा कर तवज्जोह के साथ सुनें कि बे तवज्जोही के साथ सुनने में मसाइल सीखने में ग़लतियां हो सकती हैं।

दर्सी बयान सीखने का ह़ल्क़ा (19 मिनट)

इस वक़्त में अमीरे क़ाफ़िला शुरका को दर्स देने का त़रीक़ा सिखाए जिन को दर्स नहीं आता उन को दर्स सिखाए और जिन को बयान करना नहीं आता उन को बयान करना सिखाए। येह वक़्त बहुत अहमिय्यत का ह़ामिल है लेहाज़ा इस पर ख़ुसूसी तवज्जोह दी जाए क्यूंकि इस के ज़रीए़ हम अपने अ़लाक़ों में मुबल्लिग़ीन और मोअ़ल्लिमीन की तादाद में भरपूर इज़ाफ़ा कर सकते हैं। अमीरे क़ाफ़िला 12 दिन और एक माह के मदनी क़ाफ़िलों में जिन इस्लामी भाइयों को दर्सी बयान करना नहीं आता उन से अ़मली त़रीक़ा भी इसी वक़्त में करवाए ताकि अ़वाम के सामने जाने से पेहले इन की अच्छी त़रह़ मश्क़ हो जाए। मसलन रजब भाई इ़शा का दर्स देंगे तो अमीरे क़ाफ़िला किताब का सफ़ह़ा नम्बर भी बताए कि आप ने यहां

www.dawateislami.net

से यहां तक दर्स देना है अब रजब भाई इस वक़्त में तैयारी भी करेंगे और मश्क़ भी करेंगे। अहम तरीन नुक़्ता येह है कि हमें सिर्फ़ दर्स ही नहीं सिखाना बल्कि इस ह़ल्क़े के ज़रीए शुरका ए मदनी क़ाफ़िला को घर दर्स और दूसरे दर्स का आ़मिल भी बनाना है। अमीरे क़ाफ़िला दिए हुवे त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ ही शुरका को दर्स देना सिखाए।

दुआ़एं याद करने का ह़ल्क़ा (19 मिनट)

गर्मियों में दर्सो बयान सीखने के बाद 20 मिनट और सर्दियों में इ़शा के बाद 20 मिनट दुआ़एं सीखने का वक़्त है। इस वक़्त में हर माह 3 दिन, 12 दिन और एक माह के मदनी क़ाफ़िलों में "दुआ़एं" सीखने सिखाने का शिड्यूल अलग अलग होगा।

वक़्फ़ए आराम (अज़ाने अ़स्र तक)

जब भी वक़्फ़ए आराम का मौक़अ़ हो तो अमीरे क़ाफ़िला येह मदनी फूल बयान करे :

याद रहे कि मस्जिद में एतेकाफ़ की निय्यत के बग़ैर सोना जाइज़ नहीं लेहाज़ा एतेकाफ़ की निय्यत कर के ज़िक्रो दुरूद के बाद आराम फ़रमाएं। मस्जिद में सोने के बारे में चन्द अहम शरई मसाइल तवज्जोह से समाअ़त फ़रमाएं :

(1) मस्जिद की दरियों को बत़ौरे कम्बल इस्तेमाल करना जाइज़ नहीं है। (2) मच्छर या मूज़ी ह़शरात से बचने के लिए बदबूदार लोशन या क्वाइल वग़ैरा का इस्तेमाल जाइज़ नहीं। ख़ुश्बू वाले या बग़ैर बू वाले लोशन का इस्तेमाल जाइज़ है, अलबत्ता मस्जिद की दरियों को इन से आलूदा होने से बचाना होगा। (3) मदनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िरों का बर वक़्त उठने के लिए मस्जिद में होते हुवे मोबाइल पर एलार्म लगाना जाइज़ है बशर्ते येह कि म्यूज़ीकल ट्यून न हो। याद रहे कि मोबाइल में म्यूज़ीकल ट्यून्ज़ का न होना सिर्फ़ मस्जिद के साथ ख़ास नहीं

www.dawateislami.net

बल्कि उ़मूमी हुक्म भी इस के नाजाइज़ होने ही का है, मस्जिद की वज्ह से तो इस की बुराई और भी बढ़ जाती है।

(4) मस्जिद में सोते हुवे एह़तेलाम हो जाए तो फ़ौरन तयम्मुम कर के मस्जिद से बाहर निकल जाएं और ग़ुस्ल करने के बाद मस्जिद में आएं। अलबत्ता अगर फ़िना ए मस्जिद में ग़ुस्ल ख़ाना न हो और बाहर जाने में कोई सह़ीह़ ख़त़रा हो और मस्जिद में ठेहरने के सिवा कोई चारा न हो तो फ़ौरन बिला ताख़ीर तयम्मुम करे और अब मस्जिद में रेहना भी जाइज़ है मगर इस तयम्मुम से नमाज़ व तिलावत जाइज़ नहीं, इन के लिए दोबारा इन की निय्यत से तयम्मुम करना होगा, जैसे ही बाहर निकलना मुमकिन हो फ़ौरन निकल जाए। (5) कपड़े नापाक हो गए इस के इ़लावा पेहनने के लिए कोई दूसरे कपड़े नहीं, या कपड़े तो हैं लेकिन इन नापाक कपड़ों को अपने बेग वग़ैरा में रखना है और बेग मस्जिद में है तो इन सूरतों में जितने ह़िस्से पर नापाकी लगी है, उतने ह़िस्से की नापाकी दूर करने के लिए मस्जिद का पानी इस्तेमाल किया जा सकता है, इस के इ़लावा मैले कपड़ों को मस्जिद के पानी से धोने की इजाज़त नहीं। (6) ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने की सूरत में मस्जिद के पानी से ग़ुस्ल की इजाज़त है, यूंही जुम्आ़ व ईदैन के ग़ुस्ल की भी इजाज़त है, अलबत्ता मह़ज़ ठन्डक ह़ासिल करने या मैल वग़ैरा दूर करने के लिए ग़ुस्ल न किया जाए, जहां पानी की क़िल्लत हो या पानी ख़रीद कर इस्तेमाल किया जाता हो, वहां फ़र्ज़ ग़ुस्ल के इ़लावा दूसरे किसी क़िस्म के ग़ुस्ल की इजाज़त नहीं होगी। (7) अगर पंखा चलाए बग़ैर गुज़ारा हो सकता है तो पंखा न चलाया जाए, चलाने की ज़रूरत पड़े तो कम से कम पर इक्तेफ़ा किया जाए। (8) मस्जिद में सोते हुवे ऐसी चटाई न बिछाएं जिस के ज़र्रात झड़ कर फ़र्शे मस्जिद या सफ़ पर गिरें। (9) अमीरे मदनी क़ाफ़िला को चाहिए कि शुरका को सोने से पेहले ग़ुस्ल ख़ाने वग़ैरा की मालूमात दे दे। तमाम इस्लामी भाई हो सके तो फ़िना ए मस्जिद वग़ैरा

www.dawateislami.net

में सोएं। (10) मस्जिद में सोते वक़्त एह़तियात़न मोटी चादर नीचे बिछा कर सोएं कहीं ऐसा न हो कि हमारी ज़रा सी बे एह़तियाती की वज्ह से मस्जिद की दरी या फ़र्श नापाक हो जाए। अल्लाह पाक हम सब को मस्जिद का ख़ूब ख़ूब अदबो एह़तेराम करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन

बाद नमाज़े अ़स्र अ़लाक़ाई दौरा

अ़लाक़ाई दौरे का एलान दुआ़ से पेहले कर लीजिए। (अमीरे क़ाफ़िला को चाहिए कि मदनी क़ाफ़िला पहुंचते ही इमामे मस्जिद / ख़तीब / कमीटी वग़ैरा से एलानात की इजाज़त ले लें, एलान करने वाले को चाहिए कि नमाज़े अ़स्र इक़ामत केहने वाले के दाईं जानिब अदा करे और वहीं क़िब्ला रू खड़े हो कर एलान करे।)

अहम मस्अला : अगर मदनी क़ाफ़िला किसी छोटी मस्जिद में है या मस्जिद तो बड़ी है लेकिन नमाज़ी कम हैं तो एलान में इस बात का ख़याल रखना ज़रूरी है कि एलान में आवाज़ इतनी बुलन्द न हो जिस से मस्बूक़ (वोह नमाज़ी जिस की कोई रक्अ़त रेह गई हो) की नमाज़ में कोई ख़लल वाक़ेअ़ हो, अगर एलान की वज्ह से किसी भी नमाज़ी की नमाज़ में ख़लल हो तो एलान न किया जाए।

दुआ़ के बाद नेकी की दावत के फ़ज़ाइल पर (12 मिनट) बयान हो, ह़ाज़रीन को अ़लाक़ाई दौरे के लिए तैयार किया जाए।

बयान के मदनी फूल : (1) इमाम साह़ब की दुआ़ के बाद ही दर्सो बयान का सिलसिला किया जाए । (2) ग़ैरे आ़लिम का अपनी त़रफ़ से बयान करना और लोगों का इसे सुनना जाइज़ नहीं लेहाज़ा किताब से देख कर बयान करें । (3) मदनी क़ाफ़िले में बयाने अ़स्र मुकम्मल होने के बाद शुरका को अ़लाक़ाई दौरे के लिए उठ कर सीधी त़रफ़ जाने की तरग़ीब दिलाई जाती है

www.dawateislami.net

मुबल्लिग़ को चाहिए कि जब कुछ इस्लामी भाई सीधी जानिब चले जाएं इस के बाद बक़िय्या इस्लामी भाइयों से मुख़ातबह हो कर रिवायत वग़ैरा बयान करे ऐसा न हो कि चन्द इस्लामी भाई दौराने बयान उठ कर जा रहे हों और मुबल्लिग़ ह़दीस वग़ैरा बयान कर रहे हों।

अ़लाक़ाई दौरे का त़रीक़ा

बयान के बाद अ़लाक़ाई दौरे में शिर्कत करने वाले इस्लामी भाई मस्जिद में एक त़रफ़ बैठ जाएं और अ़लाक़ाई दौरे की एह़तियातें व मदनी फूल बयान किए जाएं जबकि इस दौरान चन्द इस्लामी भाई मस्जिद में ही रहें और मस्जिद में भी मग़रिब तक सीखने सिखाने का सिलसिला जारी रखें। अब सीधी जानिब आने वाले इस्लामी भाइयों को इस अन्दाज़ में आदाब बयान करें :

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अब हम नेकी की दावत के लिए मस्जिद से बाहर जाएंगे और यक़ीनन नेकी की दावत देना तो बहुत बड़ी सआ़दत है येह काम तो हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان व बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰه ने भी किया है याद रखें जो काम जितना अहम हो उस की एह़तियातें भी उतनी ही ज़्यादा होती हैं, आइए अ़लाक़ाई दौरे के आदाब व मदनी फूल सुनते हैं।

अहम मसाइल : (1) अ़लाक़ाई दौरे में पेहले सामने वालों को अपनी त़रफ़ मुतवज्जेह करें, अगर वोह काम काज में मसरूफ़ हैं, तवज्जोह नहीं देते तो उन्हें छोड़ कर आगे निकल जाएं। (2) अगर कोई मैले कुचैले लिबास में मल्बूस काम में मसरूफ़ हो और वोह मस्जिद आने के लिए तैयार हो जाए तो उस को मह़ब्बत भरे अन्दाज़ में कपड़े तब्दील कर के मस्जिद में आने का कहें। (3) अ़लाक़ाई दौरा या इनफ़िरादी कोशिश में अगर कोई केह दे कि मैं ग़ैर मुस्लिम हूं तो उस को नमाज़ रोज़े की दावत नहीं देनी, सलाम में पहेल भी नहीं करनी, अगर

www.dawateislami.net

वोह सलाम करे तो जवाब में सिर्फ़ "وعلیکم" केहना है, उस की किसी भी बात के जवाब में हां में हां नहीं मिलानी और उस के साथ ऐसी नर्मी नहीं करनी जिस से वोह समझे कि मेरे मज़हब को येह अच्छा समझता है, अपना अन्दाज़ ऐसा भी नहीं होना चाहिए कि जिस को ताज़ीम कहा जाए, अल ग़रज़ जब भी किसी ग़ैर मुस्लिम से सामना हो तो कतरा कर निकल जाने में ही आ़फ़ियत है, अलबत्ता हरगिज़ ऐसा अन्दाज़ भी न हो जिस से वोह बद ज़न हो कर इस्लाम से मज़ीद दूर हो और मुसलमानों की दुश्मनी उस के दिल में बढ़े।

(4) ज़िक्र करना या ज़िक्र करवाने की दावत देना, रिज़ा ए इलाही ही के लिए हो और किसी मक़्सद से न हो लेहाज़ा अ़लाक़ाई दौरे में बे तरतीबी ख़त्म करने के लिए صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! जैसे कलेमात केहने से गुरैज़ किया जाए।

(5) अगर कोई उ़लमा ए एहले सुन्नत या मामूलाते एहले सुन्नत पर एतेराज़ शुरूअ़ कर दे तो उसे नेकी की दावत भी न दें और किसी क़िस्म की आ़जिज़ी का मुज़ाहरा किए बग़ैर ख़ामोशी से आगे चले जाएं।

अ़लाक़ाई दौरे पर जाने की निय्यतें

۞ अल्लाह पाक की रिज़ा की ख़ातिर नेकी की दावत देने के लिए इनफ़िरादी कोशिश करूंगा। ۞ सलाम के बाद गर्म जोशी से हाथ मिलाऊंगा। ۞ ह़त्तल इम्कान नीची निगाहें किए बात चीत करूंगा। (नीची निगाहें कर के इनफ़िरादी कोशिश करने से नेकी की दावत का फ़ाएदा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मज़ीद बढ़ जाएगा) ۞ सुन्नत पर अ़मल की निय्यत से मुस्कुरा कर बात करूंगा। ۞ सामने वाले के ह़स्बे ह़ाल सुन्नतों भरे इजतेमाअ़ में शिर्कत या मदनी क़ाफ़िले में सफ़र या नेक आमाल पर अ़मल का ज़ेहन देने की कोशिश करूंगा। ۞ अगर इनफ़िरादी कोशिश का अच्छा नतीजा सामने आया तो अल्लाह पाक का करम समझूंगा और

www.dawateislami.net

शुक्रे इलाही बजा लाऊंगा और अगर कोई ना खुशगवार बात पेश आई तो सामने वाले को सख़ा दिल वग़ैरा समझने के बजाए इसे अपने इख़्लास की कमी तसव्वुर करूंगा ।[1]

अ़लाक़ाई दौरे की ज़िम्मेदारियां

अ़लाक़ाई दौरे में एक इस्लामी भाई निगरान, एक राहनुमा, एक दाई और एक या दो ख़ैर ख़्वाह होंगे । निगरान का काम येह है कि अ़लाक़ाई दौरे से पेहले मस्जिद के दरवाज़े के बाहर खड़े हो कर दुआ़ करवाए और राहनुमा का काम येह है कि मदनी क़ाफ़िले वालों को मस्जिद के क़रीब क़रीब घरों, दुकानों वग़ैरा पर अ़लाक़े के मक़ामी इस्लामी भाइयों के पास ले जाए और सलाम व मुसाफ़हे के बाद नर्मी से अ़र्ज़ करे कि हम.....मस्जिद से ह़ाज़िर हुवे हैं हम कुछ केहना चाहते हैं आप सवाब की निय्यत से सुन लीजिए । अगर वोह बैठे हों या काम काज में मसरूफ़ हों तो खड़े हो कर सुनने की दरख़्वास्त करें, इस त़रह़ उन की तवज्जोह रहेगी । (अगर वोह काम काज में मसरूफ़ हैं, तवज्जोह नहीं देते तो फिर उन्हें छोड़ कर आगे निकल जाएं ।) राहनुमा के लोगों को मुतवज्जेह करने के फ़ौरन बाद दाई नर्मी के साथ नेकी की दावत पेश करे, इस दौरान दाई अपनी बे बसी और दिलों को फेरने वाले परवर दगार की रेह़मत की त़रफ़ तवज्जोह रखे कि येह कामयाबी की कुन्जी है । ख़ैर ख़्वाह का काम येह है कि जो इस्लामी भाई कुछ फ़ास्ले पर हों उन्हें क़रीब क़रीब करे और दाई की दावत सुन कर हाथों हाथ मस्जिद में चलने के लिए तैयार होने वालों को अपने साथ मस्जिद में पहुंचा कर, वापस अ़लाक़ाई दौरे में शामिल हो जाए ।

अ़लाक़ाई दौरे के आदाब

❁ मस्जिद से बाहर दुआ़ के बाद इस्लामी भाई दो दो की क़त़ार में

1 ...सवाब कमाने के नुस्ख़े, स. 72

www.dawateislami.net

चलें । ❁ दाई और राहनुमा आगे आगे रहें । ❁ आपस में बातें न करें । ❁ कोशिश कर के रास्ते के एक त़रफ़ चलें । ❁ ह़त्तल इम्कान निगाहें नीची कर के चलें और इधर उधर देखने से इजतेनाब करें । ❁ मुन्तशिर (अलग-अलग) होने के बजाए सारे इस्लामी भाई इकट्ठे ही रहें । ❁ हाथों में तस्बीह़ और लबों पर दुरूदो सलाम जारी रखें दुरूदे पाक की बरकत से नेकी की दावत में तासीर पैदा हो जाएगी । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ❁ अगर किसी को उस का जानने वाला मिल जाए तो वोह इस्लामी भाई उस से सलाम व मुसाफ़ह़ा कर के चल पड़े या उसे भी अपने साथ ले ले । ❁ जब किसी के मकान पर दस्तक दें तो घर के मर्दों को बुला कर एक त़रफ़ खड़े हो कर नेकी की दावत दें । ❁ जब किसी को नेकी की दावत पेश की जाए तो कोई इस्लामी भाई दरमियान में न बोले बल्कि तमाम इस्लामी भाई ख़ामोशी के साथ निगाहें नीची किए सुनें । ❁ मग़रिब की अज़ान से 10 मिनट पेहले वापस आ कर मस्जिद में जारी दर्स में शिर्कत करें ।

नेकी की दावत से पेहले की दुआ

अ़लाक़ाई दौरे के मदनी फूल व आदाब बयान करने के बाद तमाम इस्लामी भाई अ़लाक़ाई दौरे के लिए रवाना हो जाएं, नेकी की दावत के लिए जाते हुवे निगरान इस्लामी भाई मस्जिद से बाहर इन अल्फ़ाज़ से दुआ करवाए :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

या रब्बे मुस्त़फ़ा ! हमारी और उम्मते मेह़बूब की मग़फ़ेरत फ़रमा । ऐ अल्लाह पाक ! हम नेकी की दावत देने के लिए अ़लाक़ाई दौरे पर रवाना हो रहे हैं इस दीन के काम में तू हमारी मदद फ़रमा और हमारा दिल लगा दे । ऐ अल्लाह पाक ! हमारे दिल में इख़्लास पैदा कर और ज़बान में असर दे । ऐ अल्लाह पाक ! अ़लाक़े के मुसलमान भाइयों को भी हमारे साथ चलने की सआ़दत नसीब

www.dawateislami.net

फ़रमा। ऐ अल्लाह पाक ! हमें और इस अ़लाक़े के बच्चे बच्चे को नमाज़ी और मुख़्लिस आ़शिक़े रसूल बना। ऐ अल्लाह पाक ! हर त़रफ़ सुन्नतों की मदनी बहार आ जाए। ऐ अल्लाह पाक ! तुझे तेरे प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वास्त़ा हमारी येह टूटी फूटी दुआ़एं क़बूल फ़रमा। आमीन

नेकी की दावत (मुख़्तसर)

"हम अल्लाह पाक के गुनाहगार बन्दे और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ग़ुलाम हैं, यक़ीनन ज़िन्दगी बेह़द मुख़्तसर है, हम हर वक़्त मौत के क़रीब होते जा रहे हैं। हमें जल्द ही अन्धेरी क़ब्र में उतार दिया जाएगा। नजात अल्लाह पाक का हुक्म मानने और रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अ़मल करने में है।"

आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तेह़रीक दावते इस्लामी का एक मदनी क़ाफ़िला.....से आप के अ़लाक़े की.....मस्जिद में आया हुवा है। हम नेकी की दावत देने के लिए ह़ाज़िर हुवे हैं, मस्जिद में अभी दर्स जारी है, दर्स में शिर्कत के लिए मेहरबानी फ़रमा कर अभी तशरीफ़ ले चलिए, हम आप को लेने के लिए आए हैं, आइए ! तशरीफ़ ले चलिए। (अगर वोह तैयार न हों तो कहें कि) अगर अभी नहीं आ सकते तो नमाज़े मग़रिब वहीं अदा फ़रमा लीजिए। नमाज़ के बाद اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सुन्नतों भरा बयान होगा। आप से दरख़्वास्त है कि बयान ज़रूरी सुनिएगा। अल्लाह पाक हमें और आप को दोनों जहानों की भलाइयां नसीब फ़रमाए। आमीन

दाई (यानी नेकी की दावत देने वाला) इस दौरान अपनी बे बसी और दिलों के फेरने वाले परवर दगार की त़रफ़ तवज्जोह रखे, तमाम इस्लामी भाई ख़ामोशी से सुनें। हाथों हाथ मस्जिद में आने के लिए तैयार होने वाले इस्लामी

www.dawateislami.net

भाई को ख़ैर ख़्वाह (महब्बत भरे अन्दाज़ में गुफ़्तगू करते हुवे) मस्जिद तक छोड़ने के लिए आएं। अगर कोई भी तैयार न हो तो लोगों पर बद गुमानी करने की बजाए इसे अपने इख़्लास की कमी तसव्वुर करते हुवे इस्तिग़फ़ार करें और अपनी कोशिश तेज़ कर दें । अगर कोई ना ख़ुशगवार वाक़िआ पेश आ गया मसलन किसी ने झाड़ दिया वग़ैरा तो सिर्फ़ सब्र और सब्र करें। दौराने अ़लाक़ाई दौरा न कहीं बैठें न चाए वग़ैरा की दावत क़बूल करें। अज़ाने मग़रिब से कुछ देर पेहले ही मस्जिद में पहुंच जाएं और अ़स्र ता मग़रिब होने वाले दर्स में शामिल हों, वापसी पर मस्जिद के दरवाज़े पर निगरान फिर दुआ़ करवाए।

नेकी की दावत से वापसी के बाद की दुआ़

वापसी पर निगरान इस्लामी भाई मस्जिद से बाहर दरवाज़े के क़रीब येह दुआ़ मांगे :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

या रब्बे मुस्त़फ़ा ! हमारी और उम्मते मेह़बूब की मग़फ़ेरत फ़रमा । ऐ मौला ए करीम तेरी अ़त़ा की हुई तौफ़ीक़ से हम ने अ़लाक़ाई दौरा कर के यहां के मुसलमान भाइयों को नेकी की दावत पेश की, ऐ अल्लाह पाक ! हमारी येह ह़क़ीर कोशिश क़बूल फ़रमा । इस में हम से जो कुछ कोताहियां हुईं, वोह मुआ़फ़ फ़रमा। ऐ अल्लाह पाक ! हम एतेराफ़ करते हैं कि हम नेकी की दावत देने का ह़क़ अदा न कर सके। ऐ अल्लाह पाक ! हमें आइन्दा दिल जमई और इख़्लास के साथ नेकी की दावत देने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। ऐ अल्लाह पाक ! हमें बा अ़मल बना और हमारे जो मुसलमान भाई अच्छे अ़मल से दूर हैं, उन की इस्लाह़ के लिए हमें कुढ़ना और कोशिश करना नसीब फ़रमा। ऐ अल्लाह पाक ! हमें और इस अ़लाक़े के बच्चे बच्चे को नमाज़ी और मुख़्लिस आ़शिक़े रसूल बना। ऐ अल्लाह पाक !

www.dawateislami.net

हर त़रफ़ सुन्नतों की मदनी बहार आ जाए, ऐ अल्लाह पाक ! तुझे तेरे प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वास्त़ा हमारी येह तमाम दुआ़एं क़बूल फ़रमा । आमीन

चन्द अहम बातें

जुमेरात के दिन अ़लाक़ाई दौरे में मग़रिब के बाद बयान की दावत न दें बल्कि हफ़्तावार इजतेमाअ़ की दावत दें । नीज़ जुमेरात के दिन मग़रिब ता इशराक़ चाश्त मदनी क़ाफ़िले का शिड्यूल भी हफ़्तावार इजतेमाअ़ में शिर्कत और रात एतेकाफ़ का होगा । मदनी क़ाफ़िला ऐसी मस्जिद में है जहां से हफ़्तावार इजतेमाअ़ की गाड़ी जाती है तो मदनी क़ाफ़िले वाले भी उसी में अ़लाक़े वालों के साथ इजतेमाअ़ में जाएं, अगर गाड़ी नहीं चलती तो मक़ामी इस्लामी भाइयों को तैयार कर के अपने साथ इजतेमाअ़ में अव्वल ता आख़िर शिर्कत करवाएं । अगर हफ़्तावार इजतेमाअ़ उस शेहर में नहीं होता बल्कि किसी और शेहर में होता है और जाना भी मुश्किल हो तो मदनी क़ाफ़िले के जदवल पर ही अ़मल करें (अमीरे क़ाफ़िला को चाहिए कि पेहले से ही हफ़्तावार इजतेमाअ़ की मुकम्मल मालूमात ले ले और सुब्ह़ (मश्वरे के ह़ल्क़े में) ही शुरका को बता दे कि आज हम हफ़्तावार इजतेमाअ़ में शिर्कत करेंगे या नहीं ।)

बाद नमाज़े मग़रिब (एलान व बयान)

फ़र्ज़ों के बाद दुआ़ से पेहले एलान (एलान के मुतअ़ल्लिक़ अहम मस्अला पेहले बयान हो चुका है अमीरे क़ाफ़िला उस पर अ़मल करवाए नीज़ एलान के मदनी फूल और एलानात इसी रिसाले के सफ़ह़ा नम्बर 66 पर दर्ज हैं) बक़िय्या नमाज़ के बाद पेहले और दूसरे दिन तक़रीबन 12 मिनट का बयान करें और तीसरे दिन तक़रीबन 25 मिनट का बयान करें ।

अहम मस्अला : (1) ग़ैरे आ़लिम का अपनी त़रफ़ से बयान करना और लोगों का इसे सुनना जाइज़ नहीं लेहाज़ा किताब से देख कर बयान करें ।

www.dawateislami.net

(2) नमाज़ियों की नमाज़ में कोई ख़लल न हो, ख़ुसूसन जब इब्तेदा में दुरूदे पाक के सीग़े पढ़ाए जाते या ! صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب वग़ैरा के ज़रीए दुरूदे पाक पढ़ाया जाता है। बयान के लिए ऐसी जगह को मुन्तख़ब किया जाए जहां क़रीब में कोई नमाज़ी नमाज़ न पढ़ रहे हों।

वक़्फ़ए त़आ़म (बयाने मग़रिब के बाद)

बयाने मग़रिब के बाद तमाम इस्लामी भाई मिल कर सुन्नत के मुत़ाबिक़ खाना खाएं (खाने की एह़तियातें, निय्यतें और दुआ़एं इसी रिसाले के सफ़ह़ा नम्बर 77 पर दर्ज हैं, अमीरे क़ाफ़िला वहां से देख कर अ़मल करे और करवाए।)

बाद नमाज़े इ़शा

नमाज़ के बाद एक इस्लामी भाई 7 मिनट का मुख़्तसर दर्स दें, फिर सूरए मुल्क की तिलावत की जाए। बाज़ मसाजिद में मामूल होता है कि नमाज़ के फ़ौरन बाद सूरए मुल्क की तिलावत / दुरूदे पाक की मेह़फ़िल / दर्से क़ुरआनो ह़दीस का सिलसिला होता है ऐसी मसाजिद में मामूल (Routine) के कामों के बाद दर्स का सिलसिला किया जाए।

तिलावत के बाद नमाज़ियों से पुर तपाक त़रीक़े से मुलाक़ात और इनफ़िरादी कोशिश करें फिर हफ़्तावार मदनी ह़ल्क़े से पेहले 10 मिनट इनफ़िरादी कोशिश के लिए दो दो इस्लामी भाई मस्जिद से बाहर जाएं।

नोट : बाज़ गाऊं देहात में मग़रिब / इ़शा के बाद लोग घरों को चले जाते हैं ऐसे अ़लाक़ों में इनफ़िरादी कोशिश के लिए बाहर न जाएं बल्कि मस्जिद में ही रहें और शिड्यूल पर अ़मल करें। इनफ़िरादी कोशिश से वापस आ कर 20 मिनट मदनी ह़ल्क़ा लगाएं जिस में पेहले दिन अमीरे एहले सुन्नत का बयान और दूसरे

www.dawateislami.net

दिन फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा मेमोरी कार्ड से अपने ज़ाती मोबाइल पर सुनें अगर मेमोरी कार्ड मुयस्सर न हो तो अमीरे एहले सुन्नत के रसाइल से 20 मिनट दर्स दिया जाए। जिन ज़िम्मेदारान के बयानात मक्तबतुल मदीना पर आ चुके हैं इस वक़्त में उन के बयानात भी सुने जा सकते हैं।

चन्द अहम बातें

हफ़्ते के दिन इनफ़िरादी कोशिश के बाद मदनी ह़ल्क़ा नहीं होगा बल्कि तमाम शुरका इजतेमाई त़ौर पर मदनी मुज़ाकरा देखेंगे, अगर मदनी क़ाफ़िला ऐसे अ़लाक़े में है जहां इजतेमाई त़ौर पर मदनी मुज़ाकरा देखने का एहतेमाम होता है तो मदनी क़ाफ़िले वाले भी वहीं शिर्कत करें और अगर मदनी क़ाफ़िला ऐसी जगह है जहां इजतेमाई त़ौर पर देखने का एहतेमाम नहीं होता तो अमीरे क़ाफ़िला को चाहिए कि वहां के मक़ामी लोगों से मुलाक़ात कर के इजतेमाई त़ौर पर घर / मेहमान ख़ाना / बैठक वग़ैरा में मदनी मुज़ाकरा देखने की तरकीब बनाएं। (अगर मदनी मुज़ाकरे में शिर्कत करना मुमकिन न हो तो मामूल (Routine) के मुत़ाबिक़ जदवल (Schedule) पर अ़मल करें।) और अगर मदनी क़ाफ़िले वाले मदनी मुज़ाकरे में सवाल जवाब शुरूअ़ होने के बाद से कम अज़ कम दो घंटे शिर्कत करें तो अगले दिन के जदवल का आग़ाज़ 11 बजे से होगा।

दोहराई का ह़ल्क़ा

मदनी ह़ल्क़े के बाद अमीरे क़ाफ़िला दोहराई करवाए। आज जो कुछ सीखा है अमीरे क़ाफ़िला इजतेमाई त़ौर पर शुरका के सामने ख़ुद ही इस की दोहराई करे और अगर कोई ब ख़ुशी सुनाना चाहे तो उन से सुने।

www.dawateislami.net

इजतेमाई जाइज़ा, सलातुत्तौबा

दोहराई करवाने के बाद अमीरे क़ाफ़िला नेक आमाल के मुताबिक़ इजतेमाई तौर पर जाइज़ा करवाए जिस में तमाम शुरका ए क़ाफ़िला सन्जीदगी और तवज्जोह के साथ "आज नेक आमाल के मुताबिक़ कहां तक अमल हुवा" के तहत रिसाला पुर करें। इजतेमाई जाइज़े के बाद अमीरे क़ाफ़िला इस तरह एलान करे : "अब हम अल्लाह पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिए सलातुत्तौबा अदा करेंगे। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ"

सलातुत्तौबा की फ़ज़ीलत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! तौबा ओ इस्तिग़फ़ार की ख़ातिर नवाफ़िल अदा करना नमाज़े तौबा केहलाता है। फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "ऐसा कोई शख़्स नहीं जो गुनाह करे फिर उठे वुज़ू कर ले फिर नमाज़ पढ़े फिर अल्लाह से मुआफ़ी चाहे मगर अल्लाह उसे बख़्श देता है।"(1)

मश्हूर शारेहे हदीस मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ इस हदीस की शर्ह में फ़रमाते हैं : "इस नमाज़ का नाम नमाज़े तौबा है। बेहतर येह है कि इस की पेहली रक्अत में सूरए काफ़िरून और दूसरी में सूरए इख़्लास पढ़े, बेहतर है कि नमाज़ से पेहले ग़ुस्ल कर ले और धुले कपड़े पेहन ले। इस्तिग़फ़ार की हक़ीक़त येह है कि मुजरिम गुज़श्ता पर नादिम हो और आइन्दा गुनाह न करने का अहद करे, अगर हुक़ूक़ से तौबा करता है तो अदा कर दे, गुनाह पर क़ाइम रेहते हुवे मुंह से तौबा तौबा करना इस्तिग़फ़ार की हक़ीक़त नहीं।"(2)

1 ... ترمذی، ابواب الصلاۃ، باب ماجاء فی الصلاۃ عند التوبۃ، 1/404، حدیث:406۔

2 ...मिरआतुल मनाजीह, 2 / 303 मुल्तक़त़न।

www.dawateislami.net

तौबा व तज्दीदे ईमान

सलातुत्तौबा के नवाफ़िल अदा करने के बाद अमीरे क़ाफ़िला इन अल्फ़ाज़ के साथ तौबा व तज्दीदे ईमान करवाए : "ऐ अल्लाह पाक ! अगर मुझ से कोई कुफ़्र हो गया हो तो मैं उस से तौबा करता हूं, ऐ अल्लाह पाक ! मेरे सारे गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा । ऐ अल्लाह पाक ! मेरे मां बाप की और सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा । ऐ अल्लाह पाक ! मुझे ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा जल्वए मेहबूब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में शहादत और जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न अ़ता फ़रमा । आमीन"

अहम मस्अला : अगर मदनी क़ाफ़िले में इमामत टेस्ट पास किए हुवे इस्लामी भाई साथ हों तो बा जमाअ़त सलातुत्तौबा अदा फ़रमाएं वरना सब अकेले अकेले पढ़ें । तौबा व तज्दीदे ईमान करवाने के बाद अमीरे क़ाफ़िला मस्जिद में सोने की एह़तियातें बयान करे (मस्जिद में सोने की एह़तियातें और मसाइल इसी रिसाले के सफ़ह़ा नम्बर 85 पर बयान हो चुके हैं ।)

सोने से पेहले के अवराद़ो वज़ाइफ़

सोने की एह़तियातें बयान कर के अमीरे क़ाफ़िला सोने से पेहले के वज़ाइफ़ पढ़ाए और फिर तमाम शुरका सो जाएं और मदीने की याद में खो जाएं ।

(1) सोने से पेहले एक बार आयतुल कुर्सी पढ़ लीजिए कि अल्लाह पाक की त़रफ़ से सुब्ह़ तक एक निगेहबान (फ़रिश्ता) मुक़र्रर हो जाएगा और शैत़ान क़रीब न आएगा और اِنْ شَآءَاللّٰه पढ़ने वाले के और क़रीब के घरों में चोरी से ह़िफ़ाज़त होगी, आसेब जिन्नात वग़ैरा दाख़िल न होंगे ।

(2) तस्बीह़े फ़ातिमा यानी سُبْحٰنَ اللّٰه 33 बार, اَلْحَمْدُ لِلّٰه 33 बार और اَللّٰهُ اَكْبَر 33 बार, येह 99 हुवे आख़िर में

www.dawateislami.net

"لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ" एक बार पढ़ कर 100 का अ़दद पूरा कर लीजिए कि इस के पढ़ने वाले के गुनाह बख़्श दिए जाएंगे अगर्चे समुन्दर के झाग के बराबर हों, पढ़ने वाला सुब्ह़ ख़ुश उठेगा और दीगर बे शुमार फ़वाइद ह़ासिल होंगे।

(3) अल ह़म्द शरीफ़ और قُلْ هُوَ اللّٰه शरीफ़ एक एक बार पढ़ लीजिए।[1]

(4) सोने से पेहले की दुआ़ : اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيٰى यानी ऐ अल्लाह पाक ! मैं तेरे नाम के साथ ही मरता और जीता हूं।[2] (यानी सोता और जागता हूं।)

नमाज़े तहज्जुद

सुब्ह़े सादिक़ से 19 मिनट पेहले तहज्जुद के लिए जगाइए, नमाज़े तहज्जुद के बाद अज़ाने फ़ज्र तक ज़िक्रो दुरूद और तिलावत का सिलसिला जारी रखिए, मुत़ालआ़ भी किया जा सकता है। तमाम इस्लामी भाई रोज़ाना शजरए अ़त्तारिय्या से चन्द अवराद कम अज़ कम "70 बार اَسْتَغْفِرُ اللّٰه, 166 बार لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه, फिर तीन बार مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم" और 12 मिनट आंखें बन्द कर के कम से कम 313 बार दुरूद शरीफ़ पढ़ें। (ज़िन्दगी भर के लिए इस का मामूल (Routine) बना लीजिए) जो इस्लामी भाई क़रीब की मस्जिदों में दर्स के लिए जाएंगे अज़ाने फ़ज्र से पेहले रवाना हो जाएं।

(अगर "ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" पढ़ना दुश्वार मालूम हो तो मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का ह़ाशिया "नूरुल इरफ़ान" पढ़ें कि येह काफ़ी आसान है और येह भी कन्ज़ुल ईमान ही की तफ़्सीर है। नीज़ कन्ज़ुल इरफ़ान से भी पढ़ सकते हैं)

1 ...शजरए क़ादरिय्या रज़विय्या ज़ियाइय्या अ़त्तारिय्या, स. 31

2 ...بخاری، کتاب الدعوات، باب مایقول اذا اصبح، 4/196، حدیث: 6325۔

www.dawateislami.net

फ़ज्र के लिए जगाना

अज़ाने फ़ज्र के बाद मगर बग़ैर मेगाफ़ोन के दो दो इस्लामी भाई फ़ज्र के लिए जगाने जाएं। लेकिन इस बात का ख़याल रखिए कि इतनी ज़ोरदार (बुलन्द) आवाज़ न हो कि मरीज़ों, बच्चों और इस्लामी बहनें घर में नमाज़ में मश्ग़ूल हों या पढ़ कर दोबारा लेट गए हों, उन को तशवीश हो। दर्सो बयान करने, नात शरीफ़ पढ़ने और स्पीकर चलाने वग़ैरा में हमेशा नमाज़ियों, तिलावत करने वालों और सोने वालों की ईज़ा रसानी से बचना शरअ़न वाजिब है। कहीं ऐसा न हो कि हम ज़ाहिरी इबादत से ख़ुश हो रहे हों मगर इस में दूसरों की परेशानी का बाइ़स बन कर ह़क़ीक़त में مَعَاذَاللہ गुनहगार और दोज़ख़ के ह़क़दार बन रहे हों।

फ़ज्र के लिए जगाने का त़रीक़ा

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ कर थोड़े थोड़े वक़्फ़े से दुरूदो सलाम के ज़ैल में दिए हुवे सीग़े पढ़ते रहें :

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَا رَسُوۡلَ اللہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصۡحٰبِکَ یَاحَبِیۡبَ اللہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَا نَبِیَّ اللہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصۡحٰبِکَ یَا نُوۡرَ اللہ

अब इस त़रह़ फ़ज्र के लिए जगाएं :

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! नमाज़े फ़ज्र का वक़्त हो गया है। सोने से नमाज़ बेहतर है जल्दी जल्दी उठिए और नमाज़ की तैयारी कीजिए। अल्लाह पाक आप को बार बार ह़ज नसीब करे और बार बार मीठा मदीना दिखाए, जल्दी जल्दी उठिए और नमाज़े फ़ज्र की तैयारी कीजिए।

(अब फिर ऊपर दिया हुवा दुरूदो सलाम पढ़िए। इस के बाद मौक़ेअ़ की मुनासेबत से दोबारा ऊपर दिया हुवा मज़मून या अमीरे एहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ के नज़्म कर्दा दर्जे ज़ैल अश्आ़र में से मुन्तख़ब अश्आ़र पढ़िए।)

www.dawateislami.net

फ़ज्र के लिए जगाने के अश्आ़र

फ़ज्र का वक़्त हो गया उठो !

फ़ज्र का वक़्त हो गया उठो ! ..... ऐ ग़ुलामाने मुस्त़फ़ा उठो !
जागो जागो ऐ भाइयो- बहनो ! ..... छोड़ दो अब तो बिस्तरा उठो !
तुम को ह़ज की ख़ुदा सआ़दत दे ..... जल्वा देखो मदीने का उठो !
उठो ज़िक्रे ख़ुदा करो उठ कर ..... दिल से लो नामे मुस्त़फ़ा उठो !
फ़ज्र की हो चुकी अज़ानें वक़्त ..... हो गया है नमाज़ का उठो !
भाइयो ! उठ कर अब वुज़ू कर लो ..... और चलो ख़ानए ख़ुदा उठो !
नींद से तो नमाज़ बेहतर है ! ..... अब न मुत्लक़ भी लेटना उठो !
उठ चुको अब खड़े भी हो जाओ ! ..... आंख शैत़ां न दे लगा उठो !
जागो जागो नमाज़ ग़फ़्लत से ..... कर न बैठो कहीं क़ज़ा उठो !
अब "जो सोए नमाज़ खोए" वक़्त ..... सोने का अब नहीं रहा उठो !
याद रखखो ! नमाज़ गर छोड़ी ..... क़ब्र में पाओगे सज़ा उठो !
बे नमाज़ी फंसेगा मेह़शर में ..... होगा नाराज़ किब्रिया उठो !
मैं "सदाए मदीना" देता हूं ..... तुम को त़यबा का वास्त़ा उठो !
मैं भिकारी नहीं हूं दर दर का ..... मैं हूं सरकार का गदा उठो !
मुझ को देना न पाई पैसा तुम ! ..... मैं हूं त़ालिब सवाब का उठो !
तुम को देता है येह दुआ अ़त्त़ार ..... फ़ज़्ल तुम पर करे ख़ुदा उठो !

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बाद नमाज़े फ़ज्र (एलान व बयान)

फ़र्ज़ों के बाद दुआ से पेहले एलान करें (एलान के मुतअ़ल्लिक़ अहम मस्अला पेहले बयान हो चुका है अमीरे क़ाफ़िला इस पर अ़मल करवाए नीज़ एलान के मदनी फूल और एलानात इसी रिसाले के सफ़हा नम्बर 66 पर दर्ज हैं) दुआ के बाद एक इस्लामी भाई तक़रीबन 12 मिनट का बयान करें, बयान व दुआ के बाद अच्छे अन्दाज़ से एक दूसरे से मुलाक़ात करते हुवे इनफ़िरादी कोशिश फ़रमाएं और प्यार महब्बत से मदनी ह़ल्क़े में शिर्कत की दावत दें जो इस्लामी भाई मदनी ह़ल्क़े में शिर्कत करना चाहें उन्हें अपने साथ बैठा लें किसी के साथ भी ज़ोर ज़बरदस्ती न करें।

तफ़्सीर सुनने सुनाने का ह़ल्क़ा

बयान के बाद दावते इस्लामी के 12 दीनी कामों में से एक दीनी काम "तफ़्सीर सुनने सुनाने का ह़ल्क़ा" लगाएं।

अहम मस्अला : तफ़्सीर सुनने सुनाने का ह़ल्क़ा वोही इस्लामी भाई लगाएं जिन की क़िराअत दुरुस्त हो।

तफ़्सीर सुनने सुनाने के ह़ल्क़े का त़रीक़ा

(1) तीन 3 बार इस त़रह़ एलान फ़रमाइए : क़रीब क़रीब तशरीफ़ लाइए। पर्दे में पर्दा किए दो ज़ानू बैठ कर इस त़रह़ इब्तेदा कीजिए :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(2) इस के बाद इस त़रह़ दुरूदो सलाम पढ़ाइए :

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

www.dawateislami.net

(3) फिर इस त़रह़ एतेकाफ़ की निय्यत करवाइए : نَوَیْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِکَاف (तर्जमा : मैं ने सुन्नते एतेकाफ़ की निय्यत की)। (4) 3 आयात की तिलावत मअ़ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान और सिरातुल जिनान, ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, नूरुल इ़रफ़ान, कन्ज़ुल इ़रफ़ान से देख कर इन की तफ़्सीर बयान की जाए। (5) अगर सिरातुल जिनान में किसी मक़ाम पर तफ़्सीर त़वील हो तो आ़म त़ौर पर 3 आयात के मुत़ाबिक़ जिस क़दर सफ़ह़ात बनते हों उसी क़दर पढ़ लीजिए। (6) फिर दोबारा ख़ुत़बा पढ़े बग़ैर फ़ैज़ाने सुन्नत के तरतीब वार 4 सफ़ह़ात पढ़ कर सुनाइए। (7) इस के बाद इजतेमाई त़ौर पर शजरए क़ादरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या (मन्ज़ूम) पढ़ा जाए। (चाहे त़र्ज़ में पढ़ें या बग़ैर त़र्ज़ के)

आख़री दस सूरतें या इस्लामी भाइयों का मद्रसतुल मदीना का ह़ल्क़ा

बादे मदनी ह़ल्क़ा ता इशराक़ चाश्त 3 दिन के मदनी क़ाफ़िले में आख़री दस सूरतों में से कोई एक सूरत जिस क़दर मुमकिन हो याद करवाइए, 12 दिन और एक माह के मदनी क़ाफ़िले में रोज़ाना मदनी क़ाइदे के चन्द अस्बाक़ और आख़री दस सूरतों में से कोई एक सूरत भी याद करवाइए।

अहम मस्अला : मदनी क़ाफ़िले में अगर क़िराअत टेस्ट पास किए हुवे इस्लामी भाई हों तो वोह इस्लामी भाई येह ह़ल्क़ा लगाएं वरना तमाम इस्लामी भाई इशराक़ व चाश्त का वक़्त शुरूअ़ होने तक शजरा शरीफ़ के अवरादो वज़ाइफ़ / तिलावत / मुत़ालए़ में मसरूफ़ हो जाएं।

इशराक़ व चाश्त का वक़्त

नमाज़े इशराक़ का वक़्त सूरज तुलूअ़ होने के कम अज़ कम बीस या पच्चीस मिनट बाद से ले कर ज़ुहवए कुब्रा तक नमाज़े इशराक़ का वक़्त रेहता है।[1]

1 ...इस्लामी बहनों की नमाज़, स. 179

www.dawateislami.net

नमाज़े चाश्त का वक़्त आफ़्ताब बुलन्द होने से ज़वाल यानी निस्फ़ुन्नहारे शरई तक है और बेहतर येह है कि चौथाई दिन चढ़े पढ़े।[1] नमाज़े इशराक़ के फ़ौरन बाद भी चाहें तो नमाज़े चाश्त पढ़ सकते हैं।[2]

नमाज़े इशराक़ की फ़ज़ीलत

हज़रते सैयदना अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो फ़ज्र की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ कर ज़िक्रे ख़ुदा करता रहा, यहां तक कि आफ़्ताब बुलन्द हो गया फिर दो रक्अ़तें पढ़ें तो उसे पूरे हज और उ़मरे का सवाब मिलेगा।"[3]

नमाज़े चाश्त की फ़ज़ीलत

❁ हज़रते सैयदना अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने चाश्त की 12 रक्अ़तें पढ़ीं, अल्लाह पाक उस के लिए जन्नत में सोने का महल बनाएगा।"[4]

❁ हज़रते सैयदना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि नबी ए करीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالتَّسْلِیْم ने इरशाद फ़रमाया : "आदमी पर उस के हर जोड़ के बदले सदक़ा है (और कुल तीन सौ साठ जोड़ हैं) हर तस्बीह़ (سُبْحٰنَ اللّٰہ केहना) सदक़ा है और हर ह़म्द (اَلْحَمْدُ لِلّٰہ केहना) सदक़ा है और لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ केहना सदक़ा है और اَللّٰہُ اَکْبَر केहना सदक़ा है और अच्छी बात का हुक्म करना सदक़ा है और बुरी बात से मन्अ़ करना सदक़ा है और इन सब की त़रफ़ से दो रक्अ़तें चाश्त की किफ़ायत

1 ...الفتاوی الهندیة، کتاب الصلاة، الباب التاسع فی النوافل، 112/1، ردالمحتار، کتاب الصلاة، باب الوتر والنوافل، مطلب: سنة الوضوء، 563/2۔

2 ...मदनी पंज सूरह, स. 278

3 ...ترمذی، ابواب السفر، باب ماذکر مما یستحب من الجلوس فی المسجد۔۔۔الخ، 100/2، حدیث 586۔

4 ...ترمذی، ابواب الوتر، باب ماجاء فی صلاة الضحی، 17/2، حدیث: 472۔

www.dawateislami.net

करती हैं।"[1] चाश्त की नमाज़ मुस्तहब है, कम अज़ कम 2 और ज़्यादा से ज़्यादा इस की 12 रक्अ़तें हैं और अफ़्ज़ल 12 हैं।[2]

वक़्फ़ए आराम

इशराक़ व चाश्त की नमाज़ अदा करने के बाद तमाम शुरका आराम फ़रमाएं, 9 : 00 बजे अमीरे क़ाफ़िला सब को बेदार करे इस्तिन्जा वुज़ू से फ़राग़त के बाद नाश्ता करें और फिर 9 : 30 बजे तिलावते क़ुरआने पाक से जदवल का दोबारा आग़ाज़ फ़रमाएं।

तरग़ीबात

नमाज़ की तरग़ीब

प्यारे इस्लामी भाई ! हम मुसलमान हैं और मुसलमान के लिए सब से पेहला फ़र्ज़ नमाज़ है मगर अफ़्सोस ! आज मुसलमानों की अक्सरियत नमाज़ों से दूर है। याद रखिए नमाज़ दीन का सुतून है, नमाज़ से रेह़मत नाज़िल होती है, नमाज़ से गुनाह मुआ़फ़ होते हैं, नमाज़ अन्धेरी क़ब्र का चराग़ है, नमाज़ से रोज़ी में बरकत होती है, नमाज़ हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आंखों की ठन्डक है। जबकि बे नमाज़ी से अल्लाह पाक नाराज़ होता है, बे नमाज़ी के कारोबार से बरकत ख़त्म हो जाती है, बे नमाज़ी के रिज़्क़ से बरकत ख़त्म हो जाती है, बे नमाज़ी बेशुमार भलाइयों से मेह़रूम कर दिया जाता है, बे नमाज़ी त़रह़ त़रह़ की तक्लीफ़ों में मुब्तला कर दिया जाता है, बे नमाज़ी से कल बरोज़े क़ियामत सख़्ती से ह़िसाब लिया जाएगा। प्यारे इस्लामी भाई ! ज़िन्दगी बहुत मुख़्तसर है यक़ीनन समझदार वोही है जो मरने से पेहले अल्लाह पाक को राज़ी करने में कामयाब हो

1 ... مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین، باب استحباب صلاۃ الضحی۔۔۔الخ، ص284، حدیث: 1671۔

2 ... الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب التاسع فی النوافل، 1/112۔

www.dawateislami.net

जाए और अल्लाह पाक को राज़ी करने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ नमाज़ है। हम आप को नेकी की दावत देने के लिए आए हैं, नमाज़ में कुछ ही देर बाक़ी है आप भी हमारे साथ मस्जिद में चलें। आइए तशरीफ़ ले चलें अल्लाह पाक आप को दुन्या ओ आख़ेरत की भलाइयां नसीब फ़रमाए। आमीन

हफ़्तावार इजतेमाअ़ की मुख़्तसर तरग़ीब

प्यारे इस्लामी भाई ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हम मुसलमान हैं और मुसलमान को अपनी ज़िन्दगी अल्लाह पाक की इताअ़त में गुज़ारनी चाहिए, इस के लिए नेक माहोल बहुत ज़रूरी है, दावते इस्लामी का हफ़्तावार सुन्नतों भरा इजतेमाअ़ भी नेक माहोल पाने का एक ज़रीआ़ है, इस इजतेमाअ़ में कसीर इस्लामी भाई शिर्कत करते, ख़ूब सवाब कमाते और दिल की मुरादें पाते हैं। इस बा बरकत इजतेमाअ़ में शिर्कत करने वाले कई इस्लामी भाई जो बे नमाज़ी थे नमाज़ी बन गए और गुनाहों से तौबा कर के अल्लाह पाक का हुक्म मानने और उस के आख़री नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अ़मल करने वाले बन गए।

इस बा बरकत इजतेमाअ़ में कुरआने पाक की तिलावत, नात शरीफ़ और सुन्नतों भरा बयान होता है फिर सब मिल कर अल्लाह पाक का ज़िक्र करते और अल्लाह के नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम भेजते हैं और रो रो कर अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ़एं मांगते हैं। फिर अल्लाह पाक के घर में रात रुकने की सआ़दत ह़ासिल करते हैं। आप भी इस बा बरकत इजतेमाअ़ में शिर्कत फ़रमा कर ढेरों सवाब ह़ासिल करें। दावते इस्लामी का हफ़्तावार सुन्नतों भरा इजतेमाअ़ बाद नमाज़े मग़रिब.....में शुरूअ़ हो जाता है।

www.dawateislami.net

दर्स की मुख़्तसर तरग़ीब

प्यारे इस्लामी भाई ! अल्लाह पाक ने हमें इन्सान बनाया और अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े ईमान अ़ता फ़रमाया और ईमान की मज़बूती के लिए दीन का इ़ल्म सीखना ज़रूरी है। प्यारे इस्लामी भाई ! मस्जिद में दर्स देना और सुनना भी दीन का इ़ल्म सीखने का एक ज़रीआ़ है। मस्जिद दर्स से प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नतें सीखने का मौक़अ़ मिलता है और बाज़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان मस्जिदे नबवी में रेह कर प्यारे नबी ए करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दीन का इ़ल्म ह़ासिल किया करते थे। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दीन का इ़ल्म सीखने और प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नतें सीखने के लिए आप के अ़लाक़े की.....मस्जिद में.....की नमाज़ के बाद दर्स होता है, आप भी शिर्कत फ़रमा कर ढेरों सवाब ह़ासिल करें।

इस्लामी भाइयों के मद्रसतुल मदीना की तरग़ीब

प्यारे इस्लामी भाई ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हम मुसलमान हैं और मुसलमान के ईमान की मज़बूती अल्लाह पाक का हुक्म मानने और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत करने में है। अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत करने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ कुरआने पाक सीखना सिखाना भी है और कुरआने पाक तो वोह मुक़द्दस किताब है जिसे अल्लाह पाक ने जिस ज़बान में उतारा वोह ज़बान तमाम ज़बानों से अफ़्ज़ल। जिस महीने में नाज़िल फ़रमाया वोह महीना सब महीनों में अफ़्ज़ल, जिस रात में नाज़िल फ़रमाया वोह रात हज़ार महीनों से अफ़्ज़ल और जिस नबी पर नाज़िल फ़रमाया वोह नबी तमाम नबियों से अफ़्ज़ल और जो इस कुरआने पाक को सीखे और सिखाए वोह

www.dawateislami.net

इन्सानों में बेहतरीन इन्सान बन जाए । इस दुन्या में हर शख़्स कामयाब होना चाहता है और कामयाबी इसी में है कि हम क़ुरआन शरीफ़ सीखें और दूसरों को भी सिखाएं ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दावते इस्लामी का येह मक़्सद है कि क़ुरआने करीम की तालीमात घर घर आ़म हो जाएं, इसी मक़्सद के तह़त आप के अ़लाक़े की.....मस्जिद में.....की नमाज़ के बाद इस्लामी भाइयों को मदनी क़ाइ़दा और क़ुरआने पाक दुरुस्त पढ़ना सिखाया जाता है, इस के साथ साथ वुज़ू, ग़ुस्ल, नमाज़ और नबी ए पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नतें और आदाब सिखाए जाते हैं । आप से अ़र्ज़ है कि आप भी इस्लामी भाइयों के मद्रसतुल मदीना में पढ़ने की सआ़दत ह़ासिल करें اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से दुन्या ओ आख़ेरत में कामयाबी मिलेगी । अल्लाह पाक आप को दुन्या ओ आख़ेरत की भलाइयां नसीब फ़रमाए । आमीन

मदनी क़ाफ़िले की त२ग़ीब

प्यारे इस्लामी भाई ! अल्लाह पाक ने हमें इन्सान बनाया और अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े ईमान अ़ता फ़रमाया और ईमान की मज़बूती के लिए दीन का इ़ल्म सीखना ज़रूरी है, हर मुसलमान के लिए इस के ह़ाल के मुत़ाबिक़ इ़ल्म ह़ासिल करना फ़र्ज़ है । प्यारे इस्लामी भाई ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दावते इस्लामी के तह़त मदनी क़ाफ़िले सफ़र करते रेहते हैं और मदनी क़ाफ़िले की तो क्या ही बात है मदनी क़ाफ़िले में इ़ल्मे दीन सिखाया जाता है, मदनी क़ाफ़िले में नेकी की दावत देने और सुनने का मौक़अ़ मिलता है, मदनी क़ाफ़िले में सुन्नतें सिखाई जाती हैं, आप से भी अ़र्ज़ है कि मदनी क़ाफ़िले में चलें ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

दर्स देने का त़रीक़ा

तीन बार इस त़रह़ एलान फ़रमाइए : **''क़रीब क़रीब तशरीफ़ लाइए ।''** पर्दे में पर्दा किए दो ज़ानू बैठ कर इस त़रह़ दर्स की इब्तेदा कीजिए :

(माइक इस्तेमाल न करें, बग़ैर माइक के भी आवाज़ धीमी रखें, किसी नमाज़ी वग़ैरा को परेशानी न हो ।)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

इस के बाद इस त़रह़ दुरूदो सलाम पढ़ाइए :

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

अगर मस्जिद में हैं तो इस त़रह़ **एतेकाफ़** की निय्यत करवाइए :

نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف

(**तरजमा :** मैं ने सुन्नत एतेकाफ़ की निय्यत की)

फिर इस त़रह़ कहिए, **प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** निगाहें नीची किए तवज्जोह के साथ रिज़ा ए इलाही के लिए इल्मे दीन ह़ासिल करने की निय्यत से **''फ़ैज़ाने सुन्नत''** का दर्स सुनिए । इधर उधर देखते हुवे, ज़मीन पर उंगली से खेलते हुवे, लिबास बदन या बालों वग़ैरा को सेहलाते हुवे सुनने से हो सकता है इस की बरकतें जाती रहें । (बयान के आग़ाज़ में भी क़रीब क़रीब आ जाइए केह कर इसी अन्दाज़ में रग़बत दिलाइए और अच्छी अच्छी निय्यतें भी करवाइए) येह केहने के बाद **फ़ैज़ाने सुन्नत** से देख कर **दुरूद शरीफ़** की एक फ़ज़ीलत बयान कीजिए । फिर कहिए :

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

जो कुछ लिखा हुवा है वोही पढ़ कर सुनाइए। आयात व अ़रबी इ़बारात का सिर्फ़ तर्जमा पढ़िए, लिखे हुवे मज़मून का अपनी राय से हरगिज़ ख़ुलासा मत कीजिए।

दर्स के आख़िर में इस त़रह़ तरग़ीब दिलाइए :

(हर मुबल्लिग़ को चाहिए कि ज़बानी याद कर ले और दर्सो बयान के आख़िर में बिला कमी बेशी इसी त़रह़ तरग़ीब दिलाया करे)

ख़ौफ़े ख़ुदा व इ़श्क़े मुस्त़फ़ा के ह़ुसूल के लिए हर सनीचर को इ़शा की नमाज़ के बाद अमीरे एहले सुन्नत का मदनी मुज़ाकरा देखने सुनने और हर जुमेरात मग़रिब की नमाज़ के बाद आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तेह़रीक, दावते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतेमाअ़ में ब निय्यते सवाब सारी रात गुज़ारने की इल्तेजा है, इ़शा के बाद बेशक वहीं आराम फ़रमा लीजिए और **अल्लाह** पाक तौफ़ीक़ दे तो तहज्जुद भी अदा कीजिए, हर माह कम अज़ कम तीन दिन के **मदनी क़ाफ़िले** में सुन्नतों भरा सफ़र और रोज़ाना **ग़ौरो फ़िक्र** के ज़रीए **"नेक बनने का नुस्ख़ा"** बनाम **नेक आमाल** का रिसाला पुर कर के हर **अंग्रेज़ी** माह की पेहली तारीख़ को अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मामूल बना लीजिए, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिए फ़िक्रमन्द रहने का ज़ेहन बनेगा।

आख़िर में ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ (यानी ख़ौफ़े ख़ुदा और जिस्म व दिल की आ़जिज़ी) और क़बूलिय्यत के यक़ीन के साथ दुआ़ में हाथ उठाने के आदाब बजा लाते हुवे बिला कमी बेशी इस त़रह़ दुआ़ मांगिए :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

या रब्बे मुस्त़फ़ा ! रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वास्त़े हमारी, हमारे मां-बाप की और सारी उम्मत की मग़फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** पाक ! दर्स की

www.dawateislami.net

ग़लतियां और तमाम गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा। हमें आ़शिक़े रसूल, परहेज़गार और मां बाप का फ़रमां बरदार बना। **या अल्लाह** पाक ! हमें "नेक आमाल" पर अ़मल करने, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने और नेकी की दावत की धूमें मचाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा। **या अल्लाह** पाक ! मुसलमानों को बीमारियों, क़र्ज़दारियों, बे रोज़गारियों, बे औलादियों, झूटे मुक़द्दमों और त़रह़ त़रह़ की परेशानियों से नजात अ़ता फ़रमा। **या अल्लाह** पाक ! इस्लाम का बोल बाला कर। **या अल्लाह** पाक ! हमें दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल में इस्तेक़ामत अ़ता फ़रमा। **या अल्लाह** पाक ! हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा जल्वए मेह़बूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने मदनी ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा। **या अल्लाह** पाक ! मदीने की ख़ुश्बूदार ठन्डी ठन्डी हवाओं का वास्त़ा ह़मारी जाइज़ मुरादों पर रेह़मत की नज़र फ़रमा।

केहते रेहते हैं दुआ़ के वास्त़े बन्दे तेरे
कर दे पूरी आरज़ू हर बे कसो मजबूर की

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शेर के बाद येह आयते मुबारका पढ़िए :

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓىِٕكَتَهٗ یُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِیِّؕ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا ﴿۵۶﴾ (پ۲۲الاحزاب:۵۶)

सब दुरूद शरीफ़ पढ़ लें फिर पढ़िए :

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا یَصِفُوْنَ ﴿۱۸۰﴾ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِیْنَ ﴿۱۸۱﴾ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۸۲﴾

(आख़िर में कलेमा पढ़ कर सुन्नत पर अ़मल की निय्यत से मुंह पर दोनों हाथ फेर लीजिए।)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मआख़िज़ो मराजेअ़

نام کتاب	مؤلف / مصنف / متوفی	مطبوعات
قرآن مجید	کلام الٰہی	---
کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ
تفسیر قرطبی	علامہ ابوعبداللہ محمد بن احمد انصاری قرطبی، متوفی ۶۷۱ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۲۰ھ
صحیح البخاری	امام ابوعبداللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
سنن الترمذی	امام ابوعیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱۴۱۴ھ
سنن ابن ماجه	امام ابوعبداللہ محمد بن یزید ابن ماجہ، متوفی ۲۷۳ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
سنن ابی داود	امام ابوداود سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	داراحیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۱
مجمع الزوائد	حافظ نورالدین علی بن ابی بکر ہیتمی، متوفی ۸۰۷ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۲۰ھ
الجامع الصغیر	امام جلال الدین سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۵ھ
مسند الفردوس	حافظ ابوشجاع شیرویہ بن شہردار بن شیرویہ دیلمی، متوفی ۵۰۹ھ	دارالفکر بیروت
شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
کنزالعمال	علامہ علی متقی بن حسام الدین ہندی برہان پوری، متوفی ۹۷۵ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
کشف الخفاء	شیخ اسماعیل بن محمد بن عبدالہادی جراحی شافعی، متوفی ۱۱۶۲ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۲ھ
احیاء علوم الدین	امام ابوحامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دارصادر بیروت ۱۴۲۰ھ
مکاشفۃ القلوب	امام ابوحامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
الحصن الحصین	امام ابوالخیر محمد بن محمد بن محمد ابن الجزری، متوفی ۸۳۳ھ	المکتبۃ العصریہ بیروت ۱۴۲۵ھ
جذب القلوب	شیخ عبدالحق محدث دہلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ	نوریہ رضویہ پبلشنگ کمپنی ۱۴۳۱ھ
فتاوی رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن ۱۴۲۷ھ
مرآۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز
فیضان نماز	امیر اہلسنت علامہ مولانا محمد الیاس عطار قادری رضوی	مکتبۃ المدینہ ۱۴۴۱ھ
نیکی کی دعوت	امیر اہلسنت علامہ مولانا محمد الیاس عطار قادری رضوی	مکتبۃ المدینہ ۱۴۳۲ھ
شجرہ قادریہ عطاریہ	امیر اہلسنت علامہ مولانا محمد الیاس عطار قادری رضوی	مکتبۃ المدینہ ۱۴۲۹ھ
ثواب بڑھانے کے نسخے	امیر اہلسنت علامہ مولانا محمد الیاس عطار قادری رضوی	مکتبۃ المدینہ

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

मस्जिद का कूड़ा करकट कहां डाला जाए ?

मस्जिद का कूड़ा झाड़ कर किसी ऐसी जगह न डालें जहां बे अदबी हो । मस्जिद से निकले हुवे कूड़ा करकट को किसी ऐसे मक़ाम पर डालिए जहां उस पर लोगों के पाउं न पड़ें या फिर जम्अ़ कर के समुन्दर वग़ैरा में डाल दीजिए ।

(फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा क़िस्त 44, स. 8)

M.R.P.

01013222

DAWAT-E-ISLAMI

Maktabatul Madina

Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372

Faizane Madina, Triconia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200

421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi

011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 *T&C Apply

feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net